हिन्दी टाइप-राइटिंग

(गंगा प्रणाली)

गोवर्धनदास गुप्त

हिन्दी टाइप-राइटिंग

"गंगा प्रणाली"

लेखक

गोवर्धनदास गुप्त



प्रकाशक

नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी।

संवत् १९९६

पूजनीया माता

स्वर्गीया श्रीमती गंगादासी

की

पुण्य स्मृति में

इस प्रणाली

का

नाम

"गंगा प्रणाली"

है।

गोवर्धनदास गुप्त।

समर्पण

अपना यह प्रथम प्रयास
अपने गुरुवर
श्रीयुत पं० रामनारायणजी मिश्र के
कर-कमलों में
सादर समर्पित करता हूँ।

गोवर्धनदास गुप्त

हिन्दी टाइप-राइटिंग

"गंगा प्रणाली"

भूमिका

यद्यपि टाइप-राइटिंग और विशेषत: हिन्दी टाइप-राइटिंग के सम्बन्ध में जितनी मुख्य मुख्य बातें कही जा सकती थीं, वे सब इस पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने 'दो शब्द', 'इतिहास' और 'विषय प्रवेश' में पूरी तरह से कह दी हैं, फिर भी न जाने क्यों उनका आग्रह है कि मैं इस पुस्तक की एक अलग भूमिका लिख दूँ। भूमिका की कोई विशेष आवश्यकता न होने पर भी मुझे अपने प्रिय और होनहार मित्र श्री गोवर्धनदास गुप्त का यह अनुरोध मानना ही पड़ा है। और इसी लिए मैं भी ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ।

मैं प्राय: पचीस वर्षों से लगातार हिन्दी टाइप राइटर का उपयोग कर रहा हूँ। इस बीच में मैंने जो कुछ लिखा, वह सब प्राय: टाइप राइटर से ही। मुझे इस बात का सदा आश्चर्य होता रहा है कि हिन्दी टाइप राइटर का जितना अधिक प्रचार होना चाहिए, उतना क्यों नहीं हो रहा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा कही जाती है। उसके लिखने, पढ़ने और बोलनेवालों की संख्या बाकी सब प्रान्तीय भाषाओं के लिखने, पढ़ने और बोलनेवालों से अधिक है। लेकिन फिर भी मैं देखता हूँ कि हिन्दी टाइप राइटर का शायद और सब प्रान्तीय भाषाओं के टाइप राइटरों से कम व्यवहार हो रहा है। इसके कई कारण हैं और हो सकते हैं। पर उन सब कारणों के विवेचन का यह स्थान नहीं है। हाँ हिंन्दी लिखने-पढ़नेवालों की हिन्दी टाइप राइटर के प्रति जो उदासीनता है, वह अवश्य खटकनेवाली है।

प्राय: कहा जाता है, और पहले मैं भी यही समझता था, कि हिन्दी टाइप राइटर में 'शिफट-की' या 'कल-बदल' का बहुत अधिक उपयोग करना पड़ता है, और इसी लिए हिन्दी टाइप राइटर का प्रचार अपेक्षाकृत कम है। परन्तु जब मैं देखता हूँ कि यह दोष केवल हिन्दी टाइप राइटर में ही नहीं, बल्कि बँगला, मराठी, गुजराती और उर्दू टाइप राइटरों में भी ज्यों का त्यों मौजूद है, तो फिर यही कहना पड़ता है कि या तो हिन्दी-भाषी अपेक्षाकृत अधिक दरिद्र हैं और या अभी उनकी रुचि इतनी परिमार्जित नहीं हुई है कि वे टाइप राइटर का उचित उपयोग कर सकें। जिन लोगों को बहुत अधिक लिखना पड़ता है—फिर चाहे वह लिखना पत्र-व्यवहार के रूप में हो, चाहे ग्रन्थ और लेख आदि लिखने के रूप में हो और चाहे अरजियाँ आदि लिखने के रूप में हो—वे यदि टाइप राइटर के रहते हुए भी उसका पूरा पूरा उपयोग न करें, तो यह उनका भी दुर्भाग्य है और टाइप राइटर का भी। टाइप राइटर से लिखने में जो सुभीते होते हैं, वे तो होते ही हैं। पर मेरा खयाल है कि हिन्दी टाइप राइटर से बेकारी दूर करने में भी बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। बिहार, युक्त प्रान्त और मध्य प्रदेश की कचहरियों में हिन्दी में दरखास्तें दी जा सकती हैं। मैं समझता हूँ कि यदि इन प्रान्तों के हर जिले की कचहरियों में कम से

कम एक आदमी हिन्दी टाइप राइटर लेकर बैठ जाय तो उसका निर्वाह भी बहुत अच्छी तरह हो सकता है और इससे कचहरियों में हिन्दी का प्रचार करने में भी बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है। यदि आरम्भ में हिन्दी टाइपिस्ट को कुछ न भी मिले, तो भी उसे चाहिए कि वह दो-चार महीने तक बिलकुल मुफ्त में लोगों की दरखास्तें टाइप कर दिया करे। जब वकीलों, मुख्तारों, मवक्किलों और हाकिमों को हिन्दी में टाइप की हुई दरखास्तों से सुभीता होने लगेगा, तो कुछ ही दिनों में हिन्दी टाइप राइटर कचहरीवालों के लिए नितान्त आवश्यक हो जायगा। कचहरियो में हिन्दी-प्रचार का जो काम बड़े बड़े सम्मेलनों और सभाओं आदि से भी अब तक नहीं हो सका है, वह शायद इस हिन्दी टाइप राइटर से सहज में हो जायगा। कम से कम दो चार आदमियों को तो आगे बढ़कर इस क्षेत्र में अवश्य ही पैर रखना चाहिए।

यह कहना किसी हद तक ठीक हो सकता है कि हिन्दी में टाइप-राइटिंग की कोई ठीक शैली न होने के कारण हिन्दी टाइप राइटर का जितना प्रचार होना चाहिए, उतना नहीं होता। बहुत हर्ष का विषय है कि श्री गोवर्धनदास जी गुप्त ने ठीक अँगरेजी की ही तरह हिन्दी टाइप राइटर के लिए भी यह ऐसी प्रणाली निकाली है जिससे बहुत ही थोड़े समय में बिना देखे हुए, बिलकुल अँगरेजी की ही तरह, टाइप करने का बहुत अच्छा अभ्यास किया जा सकता है और प्रायः अँगरेजी के समान ही गति भी प्राप्त की जा सकती है। काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने हिन्दी टाइप-राइटिंग का जो स्कूल खोल रखा है, उसमें थोड़े ही समय में इस प्रणाली को बहुत अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। और इसके लिए श्री गोवर्धनदास जी विशेष रूप से अभिनन्द के पात्र हैं। मेरा विश्वास है कि हिन्दी जगत् में इस गंगा-प्रणाली का पूरा पूरा आदर और प्रतिष्ठा होगी।

हिन्दी टाइप राइटिंग की पहली पुस्तक प्रकाशित करने का श्रेय भी काशी की उसी नागरीप्रचारिणी सभा को प्राप्त है, जिसने आज से प्रायः ३२ वर्ष पहले हिन्दी शार्ट हैंड की सबसे पहली पुस्तक प्रकाशित की थी। हिन्दी शार्ट हैंड सम्बन्धी जो सबसे पहला प्रयत्न सभा ने किया था, उसे सफल होने में तो बहुत दिन लगे। परन्तु मैं समझता हूँ कि हिन्दी टाइप-राइटिंग के सम्बन्ध में उसका यह प्रयास अपेक्षाकृत बहुत शीघ्र सफल होगा।

अन्त में मैं श्री गोवर्धनदास जी गुप्त को यह गंगा-प्रणाली निकालने के लिए तथा नागरीप्रचारिणी सभा, काशी को यह पुस्तक प्रकाशित करने के लिए बधाई देता हुआ आशा करता हूँ कि हिन्दी जगत् इस प्रणाली का पूरा पूरा स्वीकार और ग्रहण करेगा।

१ दिसम्बर १९३९

रामचन्द्र वर्मा।

दो शब्द

दो साल पहले 'लंडन चेम्बर अव कामर्स' की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये अपने एक सहपाठी मित्र के साथ बैठकर विषय चुन रहा था। विषयों में अंगरेजी टाइप-राइटिंग भी एक विषय था। उसे देखकर हृदय में हिंदी टाइप-राइटिंग के प्रति लोगों की उदासीनता खटकी थी, और उसी समय से यह इच्छा थी कि इस विषय पर हिंदी में कोई पुस्तक लिखी जाय और किसी वैज्ञानिक प्रणाली का निर्माण किया जाय। इस विषय के पूर्ण अध्ययन के लिये अंगरेजी पुस्तकों को छोड़ और कोई साधन नहीं था। लेकिन पिछले साल एक ऐसे क्षेत्र में आ पड़ा जहाँ इस विषय में कार्य करने का एक बहुत ही सरल साधन मिला। नागरीप्रचारिणी सभा, काशी के अंतर्गत हिंदी संकेत लिपि विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य करते हुए मुझे पं० निष्कामेश्वर मिश्र की संकेत लिपि-प्रणाली सिखलाते समय हिंदी टाइप-राइटिंग की एक प्रणाली तथा पुस्तक का अभाव विशेष रूप से खटकने लगा। टाइपराइटिंग विषय के जानकारों से यद्यपि बराबर यही सुनने को मिलता रहा कि जितनी गति अंगरेजी टाइप-राइटिंग पर हो सकती है, उतनी हिंदी पर नहीं हो सकती; और इस प्रकार मैं सदा ही हतोत्साह किया गया। किंतु कुछ दिनों पश्चात् अपने संकेत लिपि के विद्यार्थियों को यह विषय सिखलाने का भार मेरे ही ऊपर लादा गया। उस समय मैं पूज्य बाबू रामचंद्र जी वर्मा पर अपनी कठिनाइयाँ प्रगट करने के लिये बाध्य हुआ, क्योंकि आप ही इस विषय के एक ऐसे पंडित रह गए थे जिनके पास मैं डर और संकोच के कारण तब तक अपना उद्देश्य लेकर नहीं गया था।

मैंने आपको अपना उद्देश्य और साथ ही अपनी कठिनाइयाँ बतलाईं। आपने प्रोत्साहन दिया, साथ ही कुछ सरल साधन भी बताए। इस प्रकार उन्हीं के दिखाए हुए पथ पर चल कर मैं आज अपने लक्ष्य तक पहुँचने में समर्थ हुआ हूँ।

बड़ों के आशीर्वाद तथा मित्रों के सहयोग से यह प्रणाली निश्चित हुई जो अपने आप में पूर्ण है। किंतु जिस मशीन के आधार पर इसका निर्माण हुआ है,

वह कुछ अपूर्ण है। उसमें कितने ही आवश्यक चिह्न नहीं हैं जिससे असुविधाएँ होती हैं। लेकिन अभी कोई दूसरा साधन भी नहीं है, यद्यपि आशा है कि निकट भविष्य में बाबू रामचंद्र जी वर्मा तथा कतिपय अन्य सज्जनों के बनाए संशोधित 'की बोर्ड' और वर्धा की लिपि-सुधार-समिति द्वारा प्रस्तुत किए हुए एक फलक के आधार पर हिंदी की कोई पूर्ण टाइप मशीन तैयार हो जायगी।

मैंने इस प्रणाली के आधार पर अपने शिष्य श्री केदारनाथ अष्ठाना और श्री चंद्रप्रकाश सिंघल को पढ़ा कर तीन महीने में प्रति मिनट ३५ शब्द छापने की गति कराई है। यद्यपि मशीन के अभाव में नित्य केवल एक ही घंटे अभ्यास करने का अवसर आप लोगों को मिलता रहा, पर फिर भी आपने इतने थोड़े समय में काफी उन्नति की है।

अंत में मैं अपने शिष्य तथा मित्र श्री परशुराम उपाध्याय, श्री शंकरदत्त मिश्र बी० ए०, श्री लक्ष्मीकांत पांडे 'विशारद', श्री क्षत्रधारी सिंह तथा श्री बलिराम तिवारी को धन्यवाद दूँगा जिन लोगों ने अपने कठिन परिश्रम से मेरे घसीट लिखे हुए अभ्यासों को टाइप करके प्रेस में भेजने योग्य बनाया। मैं अपने शिष्य तथा मित्र श्री केदारनाथ अष्ठाना को भी विशेष धन्यवाद दूँगा जो इस विषय पर पुस्तकों की सहायता देने में बहुत तत्पर रहे।

कोदई चौकी,
काशी।
ता० १० अक्टूबर, १९३९

विनीत—
गोवर्धनदास गुप्त

इतिहास

सन् १७१४ ई० में इंगलैंड के मि० हेनरी मिल नाम के एक सज्जन ने टाइप करने की साधारण प्रणाली, एक-एक अक्षर के अलग टाइप बनाकर निकाली थी। यह प्रणाली तथा यह मशीन अब की मशीन के सामने लड़कों का खेल है। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर और चिह्न के लिये अलग अलग अक्षर-बटन (key) होने के कारण की-बोर्ड (Key Board वहुत बड़ा था जिसके कारण गति नहीं हो सकती थी। लेकिन उस समय, जब कि छोटे छोटे कामों के लिये कोई और साधन नहीं था, लोगों ने इसको अपनाया और इसकी उन्नति में जुट गये। इससे कार्य करने में यद्यपि समय की कोई विशेष बचत नहीं थी, फिर भी अक्षर बहुत साफ छपते थे और हाथ से लिखे हुए अक्षरों की अपेक्षा बहुत सुंदर होते थे।

उस युग का यह नया आविष्कार था जिसके प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ, और कितने ही उत्साही सज्जन इस प्रणाली को सफल करने तथा जन साधारण के लिये उपयोगी बनाने में जी जान से लग गए। वर्तमान मशीन के आकार और प्रणाली में कितने ही लोगों का सदियों का कठिन परिश्रम, धैर्य और कठिनाइयों से भीषण द्वंद्व निहित है। तभी आज हमें एक ऐसा साधन प्राप्त हो सका है, जिससे हम किसी विषय की सुंदर प्रतिलिपि कम से कम समय में कर लेते हैं।

सबसे पहले सन् १८७३ ई० में न्यूयार्क के इलियन नामक स्थान में रेमिंगटन एण्ड संस वालों ने व्यापारिक क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार एक मशीन तैयार की। उस समय से लेकर आज तक उन्हीं की प्रणाली को प्रधानता मिलती आ रही है। टाइप राइटर बनानेवाली जितनी कंपनियाँ हैं, सभी ने अंगरेजी टाइप राइटिंग का 'की बोर्ड' एक सा रखा है। इनके बाद 'अंडरवुड' कंपनी है जिसकी मशीनें भी अच्छी होती हैं, लेकिन विशेष प्रचार रेमिंगटन वालों की मशीनों का ही है। सरकारी आफिसों में, स्कूल कालेजों में रेमिंगटन मशीनों का ही विशेष प्रयोग होता है। इस क्षेत्र में यही लोग मार्ग-दर्शक माने जाते हैं।

हमारे हिंदी क्षेत्र में अभी तक कोई प्रणाली पूर्णतया सफल नहीं हो सकी है। रेमिंगटन की प्रस्तुत प्रणाली, जिसके आधार पर मैंने अपनी प्रणाली का निर्माण किया है, अपूर्ण है। प्रस्तुत 'की बोर्ड' में एक बड़ा दोष यह है कि इसमें 'कल-बदल' का बहुत उपयोग करना पड़ता है। दूसरे इसमें कुछ अक्षर फालतू हैं और कुछ अधिक उपयोगी और आवश्यक अक्षर तथा चिह्न हैं ही नहीं। बाबू रामचंद्र वर्मा ने जो अक्षरावली तैयार की है, इसमें ये दोष बहुत कुछ दूर कर दिए गए हैं। वर्धा की लिपि-सुधार-समिति भी इस क्षेत्र में सुधार करने की चेष्टा में लगी है, इसलिये

आशा है कि निकट भविष्य में किसी पूर्ण तथा हिंदी के लिये उपयोगी प्रणाली के आधार पर देश में ही बनी अच्छी मशीनें प्राप्त हो सकेंगी।

आधुनिक प्रणाली की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:—

(१) छोटी या बड़ी सब प्रकार की मशीनों में करीब करीब एक ही अक्षरावली तथा कल-पुर्जे हैं जिससे बड़ी मशीन पर का अभ्यस्त बहुत आसानी से छोटी मशीन पर टाइप कर सकता है। यह बात नहीं कि बिल्कुल कोई अंतर न हो, किंतु वह इतना साधारण अंतर है कि उससे कोई कठिनाई नहीं पड़ती।

(२) इसकी एक मुख्य विशेषता यह है कि इसमें टाइप करने के साथ ही साथ यह भी देखा जाता है कि ठीक टाइप हो रहा है कि नहीं। शुरू में कुछ मशीनें ऐसी चली थीं जिनमें यह देखा नहीं जा सकता था।

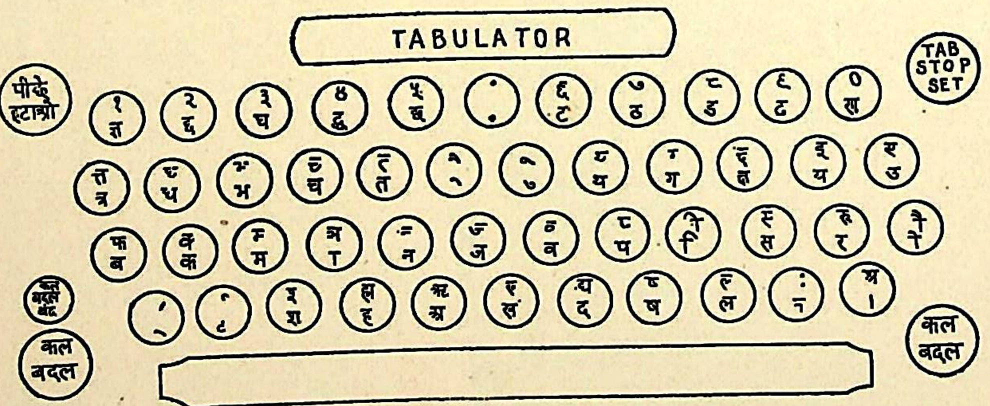
(३) एक ही टाइप द्वारा दो अक्षर या चिह्न "कल-बदल" द्वारा टाइप करने की प्रणाली से अक्षरावली बहुत छोटी हो गई है। अब तो यहाँ तक खींच-तान हो रही है कि एक ही टाइप द्वारा तीन अक्षर टाइप किए जायँ और इस प्रकार अक्षरावली को और भी छोटा कर दिया जाय। श्री जमनालाल बजाज बच्छराज एँण्ड कंपनीवालों ने हिंदी की एक मशीन इसीके आधार पर श्री आत्रेय से तैयार कराई है जिसमें यह कोशिश की गई है कि हिंदी की पूर्ण वर्णमाला के साथ सभी उपयोगी चिह्न 'की बोर्ड' में आ जाँय। लेकिन इस पर कार्य शीघ्रता से नहीं किया जा सकता और न गति ही बढ़ सकती है, क्योंकि "कल-बदल" का उपयोग बहुत अधिक करना पड़ता है। हां, देखने में इसकी अक्षरावली की लंबाई चौड़ाई छोटी हो गई है।

(४) पहले की मशीनों में स्याही का फीता अपने आप नहीं घूमता था बल्कि एक गड़ारी पर अलग से लपेटना पड़ता था और इस प्रकार टाइप करने में काफी समय लगता था। लेकिन अब की मशीनों में अपने आप फीता एक गड़ारी से दूसरी गड़ारी पर चढ़ता चला जाता है।

(५) टाइप करने में कहीं कहीं ऐसा अवसर आ जाता है कि एक ही पंक्ति में कई अक्षरों के स्थान एक साथ छोड़ने पड़ते हैं, विशेष कर बीजक या तालिका इत्यादि में। लगातार कई स्थान एक ही साथ छोड़ने के लिये यदि स्पेस बार (Space Bar) का उपयोग करना पड़े तो समय बहुत लगे। इसलिये कई मशीनों में एक विशेष यंत्र बढ़ाया गया है जिसे "लाइन बढ़ाओ" कहते हैं। इसके उपयोग से समय की बचत होती है और तालिका इत्यादि बहुत ही सुंदर रूप में टाइप होती हैं।

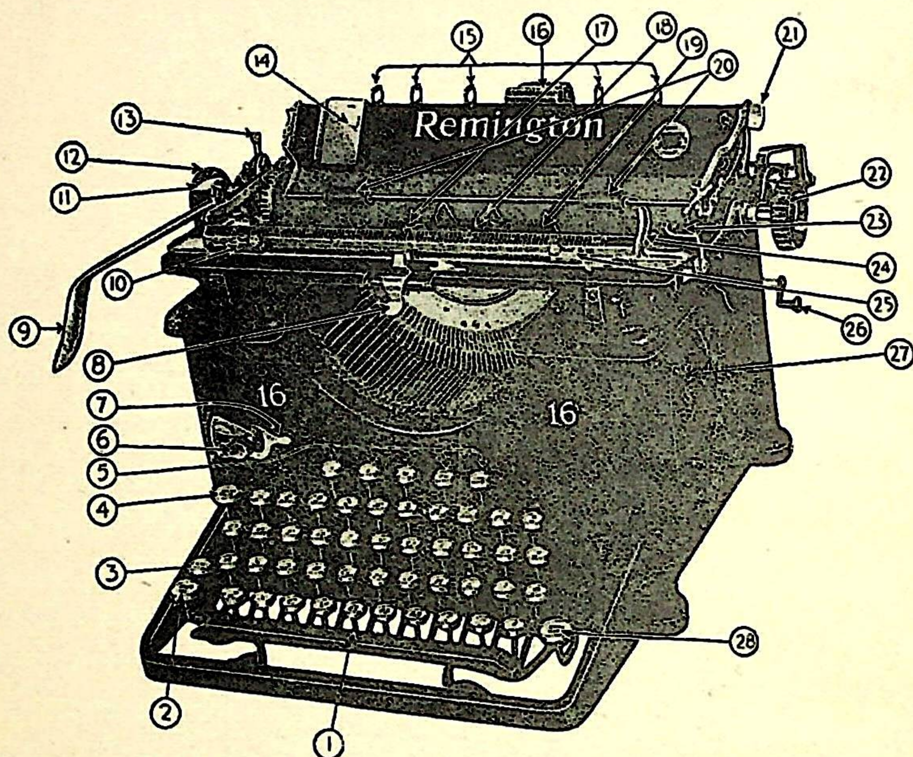
हमारी हिंदी की टाइप मशीन आधुनिक युग की देन है, इसलिये इसमें वे सभी विशेषताएं तथा सुधार आरंभ में ही समाविष्ट कर दिए गए हैं जो अंगरेजी की टाइप मशीनों में धीरे धीरे हुए हैं।

की-बोर्ड



रेमिंगटन स्टैंडर्ड

माडल १६



१. स्पेस बार
२. लेफ्ट शिफ्ट की
३. शिफ्ट लॉक
४. बैक स्पेस की
५. डेसिमल टेबुलेटर की
६. रिबन पोजिशन इंडिकेटर
७. स्टेंसिल लीवर
८. मारजिन रिलीज की
९. लाइन स्पेस लीवर
१०. लेफ्ट मारजिनल स्टॉप
११. लेफ्ट कैरेज रिलीज लीवर
१२. लेफ्ट प्लेटेन नॉब
१३. लाइन स्पेस रेगुलेटर
१४. पेपर साइड गाइड
१५. डेसिमल टेबुलेटर स्टाप्स
१६. प्लंजर एंड रिवाउंड चेक
१७. कैरेज पोजिशन इंडिकेटर
१८. रिबन कैरिअर
१९. अलाइनिंग स्केल
२०. पेपर बेल
२१. पेपर रिलीज लीवर
२२. राइट प्लेटेन नॉब
२३. राइट कैरेज रिलीज लीवर
२४. राइट कैरेज रिटर्न लीवर
२५. राइट मारजिनल स्टॉप
२६. रिबन रिवर्स
२७. राइट रिबन स्पूल डोर
२८. राइट शिफ्ट की

विषय-प्रवेश

किसी साहित्य अथवा भाषा की व्यापकता का ठीक ठीक अनुमान हम तभी लगा सकते हैं, जब हम उसे प्रत्येक क्षेत्र में सरलता से उपयोग में ला सकें। टाइप-राइटिंग भी एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा साहित्य या भाषा का उपयोग बहुत से क्षेत्रों में सरल हो जाता है। जहाँ कार्य की अधिकता है और जहाँ कई प्रतिद्वंद्वी विदेशी भाषाएँ भी प्रचलित हैं, वहाँ यदि हमारी हिंदी भाषा को उपयोग में लाने का कोई सरल साधन नहीं है तो भाषा के प्रति उदासीनता दिखाने के लिये लोग बाध्य होते हैं। जैसे, व्यापारिक क्षेत्र में आज हिंदी का बहुत कम प्रवेश है। इसका मुख्य कारण यही है कि अब तक सरल प्रणाली पर न तो इस भाषा में टाइप की मशीन ही थी, और न इस विषय को सीखने की कोई सरल एवं वैज्ञानिक प्रणाली ही।

टाइप से साफ और कम से कम समय में किसी विषय को लिपि-बद्ध किया जा सकता है। आज जब कि हिंदी की व्यापकता और भी अधिक हो गई है और भाषण इत्यादि के लिये हिंदी-संकेत-लिपि की माँग बढ़ रही है, टाइप राइटिंग जानने की आवश्यकता और भी अधिक हो गई है। व्यवस्थापिका सभाओं में जहाँ संकेत लिपिवालों को एक भाषण की कम से कम समय में कई प्रतिलिपियाँ देनी पड़ती हैं, वहाँ बिना टाइप राइटिंग के काम नहीं चलता। इसी प्रकार और भी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आज इस विषय की बहुत माँग है। संकेत-लिपिवालों के लिये तो यह बहुत ही आवश्यक है। बिना इसके उनकी योग्यता अपूर्ण है।

यद्यपि इस विषय को सीखने की अभी तक कोई प्रणाली नहीं थी, फिर भी इधर कुछ दिनों से इसके जाननेवालों की कमी नहीं रही है। लेकिन किसी वैज्ञानिक प्रणाली के अभाव में इसके जाननेवालों को बहुत सी ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जिनके कारण वे या तो हिंदी टाइप राइटिंग के विषय को कठिन कह कर एक तरह से छोड़ बैठे हैं या इससे पूरा पूरा लाभ नहीं उठा सके हैं। इसी कारण लोगों को हिंदी टाइप में अक्षरों की अधिक संख्या भी खटकती है। कितने ही लोगों का तो यह मत है कि इस अधिक संख्या के कारण ही इस पर उतनी गति नहीं हो सकती, जितनी अंगरेजी पर होती है। लेकिन यह धारणा निर्मूल

सिद्ध हुई है। यदि निम्न लिखित बातों पर ध्यान रखा जाय और यहाँ बताये हुए ढंग से अक्षरों का अभ्यास किया जाय तो बहुत जल्द गति प्राप्त हो सकती है।

टाइप करने में सबसे पहले यह ध्यान रखना चाहिए कि उँगली का दबाव अक्षरों पर बहुत जोर से न पड़े। बहुत से लोग अक्षरों को खूब दबा कर टाइप करते हैं। इससे सबसे बड़ा नुकसान तो यह होता है कि गति नहीं प्राप्त होती। इसका कारण यह है कि प्रत्येक अक्षर को दबा कर टाइप करने से बहुत अधिक समय लगता है। दूसरे मशीन के बेलन पर दाग पड़ जाता है और वह कुछ दिनों में खराब हो जाता है। इससे अक्षर (Types) भी खराब हो जाते हैं। इसके सिवा वह खटका और कमानी भी खराब हो जाती है जिनकी सहायता से अक्षर ऊपर उठते और फिर अपने स्थान पर आते हैं। इसलिये शुरू से ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अक्षरों पर उंगली का दबाव बहुत अधिक न पड़े। अंगरेजी में जिसे स्पर्श-प्रणाली अर्थात् बहुत हलके हाथ से अक्षरों को टाइप करना कहा जाता है, उसी स्पर्श-प्रणाली से अभ्यास करने से बहुत जल्द अच्छी गति हो जाती है। अक्षरों पर बीच से मोड़ कर उंगली को सीधा रखना चाहिए, पर कड़ा करके नहीं; और बहुत हलके हाथ से टाइप करना चाहिए। अक्षरों पर उतना ही दबाव पड़ना चाहिए जिससे अक्षर बेलन तक पहुंच जायँ। अक्षर ऐसे ढंग से स्प्रिङ्ग पर लगे होते हैं कि उनपर थोड़ा दबाव पड़ते ही वे अपने स्थान से उछलते हैं, इसलिये विशेष दबाव की आवश्यकता ही नहीं। यदि कार्बन द्वारा कई प्रतिलिपियाँ करनी हों तो भी जोर से दबाने की कोई जरूरत नहीं। अक्षर इतने अधिक उभरे हुए होते हैं कि उनकी पूरी पूरी छाप आ जाती है। उंगली चलाने का ढंग स्पर्श-प्रणाली से न आरंभ करनेवालों की यह एक प्रकृति सी होती है कि वे डरते डरते बहुत सावधानी से एक एक अक्षर को जोर से दबाकर टाइप करते हैं; लेकिन यह उचित नहीं। इससे जैसा ऊपर कहा जा चुका है, बहुत नुकसान होता है और जल्दी गति नहीं प्राप्त होती। यदि इसकी आदत शुरू से ही लग जाती है तो वही आगे चलकर गति प्राप्त करने में बाधक होती है। आरंभ करनेवालों को मशीन पर पहले निदर्शक अक्षरों को देखकर उन पर उँगली रख लेनी चाहिए और मन में यह समझ लेना चाहिए कि हमारी उँगली अक्षरों पर पहले ही से रखी हुई है; उन पर थोड़ा दबाव देने से ही अक्षर टाइप होंगे। जोर से दबा कर टाइप करने की आदत अक्षरों के अभ्यास से ही लगती है। इसलिये निदर्शक अक्षरों के अभ्यास के समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

निदर्शक अक्षर—निदर्शक अक्षर उन आठ अक्षरों को कहते हैं जिन पर हमेशा उंगलियाँ रहती हैं। दूसरे अक्षर टाइप करने के लिये आवश्यकतानुसार एक एक उंगली अपने अपने स्थान से हटेगी और टाइप करके तुरंत अपने स्थान

पर लौट आवेगी। इस प्रणाली का विकास हिंदी के रेमिंगटन माडल १६ आधार पर किया गया है। इसमें अक्षर-पंक्तियों में नीचे से दूसरी पंक्ति के आठ अक्षर निदर्शक अक्षर माने गए हैं, और वे हैं—व, क, म, ा, प, ि, स, और र। बीच के तीन अक्षर न, ज, और ब और अंत का ो चिन्ह निदर्शक अक्षर नहीं हैं। इन निदर्शक अक्षरों पर कैसे अभ्यास करना चाहिए, यह पहले अभ्यास में बतलाया गया है।

विना देखे हुए टाइप करना—निदर्शक अक्षरों पर उँगली रख लेने के बाद फिर अक्षरों को देखते न रहना चाहिए, वल्कि जो चीज टाइप करनी है, उसे मशीन के दाहिने ओर रखकर उसी पर निगाह जमाए रखना चाहिए। कुछ लोग अक्षरावली देखते हुए टाइप करते हैं, पर इस प्रणाली से गति नहीं हो पाती और अशुद्धियाँ भी बहुत होती हैं। जो चीज टाइप करनी है, उसे देखकर, फिर अक्षरावली को देखकर टाइप करने में कुछ समय अधिक लगता है और टाइप करने के विषय की कुछ बातें इस देखा-देखी में छूट जाती हैं। यह दोष देखकर टाइप करनेवाले सभी लोगों में पाया जाता है। इसलिये आरंभ से ही विना देखे सब अक्षर-पंक्तियों पर अभ्यास करना चाहिए। यद्यपि शुरू में हाथ रुकते हुए चलेंगे, पर हमेशा शुद्ध टाइप करने का ध्यान पहले रखना चाहिए, और शीघ्रता का पीछे। यदि कोई धीरे धीरे शुद्ध टाइप कर सकता है तो उसके लिये गति बढ़ाना कुछ भी कठिन नहीं है; लेकिन यदि ऊपर बताए हुए किसी कारण से अशुद्ध टाइप करनेकी आदत पड़ गई तो अधिक से अधिक गति भी बेकार है। और ऐसी आदतें जल्द छूटा भी नहीं करतीं। इसलिये शुरू से ही इसका ध्यान रखना चाहिए कि कोई गलती तो नहीं हुई है। यदि कोई गलती दिखाई पड़े तो उस पर निशान लगा लेना चाहिए और दूसरी बार वह अभ्यास सुधार कर करना चाहिए।

कागज लगाना—बेलन के पीछे थोड़ी जगह है जिसके भीतर से कागज बेलन पर चढ़ता है। बेलन के नीचे छोटी छोटी चार गड़ारियाँ ऐसी होती हैं जो बेलन की गति के साथ घूमती हैं। इन्हें "फीड रोलर" कहते हैं। ये बेलन से इस प्रकार सटी हुई होती हैं कि बेलन के घुमाव के साथ ये भी घूमती जाती हैं; और इसी लिये बेलन के बीच में कागज पड़ने पर, बेलन के घुमाव के साथ कागज बेलन के ऊपर आ जाता है। कागज के जिस ओर टाइप करना हो, उसको उलट कर दोनों हाथों से कागज को बेलन के पीछे नीचे की ओर लगा देना चाहिए। इसके बाद दाहिने हाथ से बेलन के दोनों ओर लगी हुई गड़ारियों में से दाहिनी तरफ की गड़ारी को आगे से पीछे की ओर घुमाना चाहिए। इस घुमाव से बेलन तथा फीड रोलरों के घूमने के कारण कागज भी घूमेगा, और साथ ही वह रुख, जिस पर टाइप करना है, घूमकर सामने आ जायगा। कागज सीधा करके इस प्रकार बेलन पर

चढ़ाना चाहिए कि कागज बेलन के बीचोबीच हो। इसके लिये उपाय भी है, लेकिन अभी उसके जानने की आवश्यकता नहीं। आरंभ में अंदाज से कागज लगाना चाहिए।

टाइप की मशीन एक महंगी चीज है। इसकी रक्षा का ध्यान शुरू से ही रखना चाहिए। शुरू में, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, जोर से टाइप करने की प्रवृत्ति सी होती है। इसलिये हमेशा दो कागज एक साथ बेलन पर चढ़ाने चाहिएँ जिसमें बेलन पर टाइप के दाग न पड़ें।

लाइन स्पेस तथा कैरेज रिटर्न लिवर—कागज लगाकर निदर्शक अक्षरों पर यथा-स्थान उँगली रखकर यदि आप टाइप करना आरंभ करें तो आप देखेंगे कि बेलन आप के बाएँ ओर बढ़ता जा रहा है। अंत में एक स्थान ऐसा आ जाता है जिसके आगे वह और नहीं बढ़ता। आप यह भी देखेंगे कि अब तक कागज पर एक पंक्ति टाइप हो चुकी है, और अब आगे टाइप करने के लिये दूसरी पंक्ति आरंभ करनी होगी। उस समय आपको बेलन के दोनों सिरों पर लगी हुई गड़ारी, "नले" या थंब ह्वील की याद आवेगी, जिसके द्वारा आपने बेलन पर कागज चढ़ाया था। इसके द्वारा आप कागज को घुमाकर दूसरी पंक्ति टाइप करने के लिये ठीक कर सकते हैं। लेकिन बेलन को, जो कि बाईं तरफ बढ़ गया है, इसके द्वारा खींच कर फिर यथा स्थान नहीं ला सकते।

इन दोनों कार्यों के लिये एक खास पुर्जा उपयोग में लाया जाता है, जिसे 'लाइन स्पेस' तथा 'कैरेज रिटर्न लिवर' कहते हैं। इसका स्थान रेमिंगटन माडल १६ में बाईं तरफ है। दिए हुए चित्र (नं० ९) में इसे बाईं से दाहिनी तरफ हलके हाथ से खींचने से कागज पर दूसरी पंक्ति टाइप करने के लिये आप को स्थान प्राप्त होगा और उसी खिंचाव में बेलन भी, जो बाईं तरफ बढ़ गया है, यथा-स्थान लाया जा सकेगा। इसके द्वारा कागज पर बराबर दूरी पर सब पंक्तियाँ छपेंगी। इस विषय की और बातें आगे चलकर पुर्जे संबंधी अभ्यास में मिलेंगी।

जब एक पंक्ति टाइप हो जाय तो इसी "नले" द्वारा कागज ऊपर चढ़ाया जायगा। दृष्टि तो मशीन पर रहेगी नहीं, इसलिये पंक्ति कब खतम होती है, यह नहीं देखा जा सकता। लेकिन मशीन में एक ऐसी घंटी लगी रहती है जो पंक्ति खतम होने के कुछ पहले ही अपने आप बजकर सूचना दे देती है कि अब पंक्ति खतम होने को आ रही है। यह कोई जरूरी नहीं है कि घंटी बजते ही पंक्ति बदल दी जाय, बल्कि उसके बाद भी दो तीन अक्षर टाइप किए जा सकते हैं। यदि अंत में किसी शब्द में दो चार अक्षर और टाइप करने हों तो उन्हें टाइप करके तब पंक्ति बदल दें।

स्पेस बार—अक्षर-पंक्तियों के नीचे एक काली सी पट्टी होती है, जिसे दबाने से बेलन एक अक्षर का स्थान लेकर आगे बढ़ता है। इसे 'स्पेस बार' कहते हैं। इसका

प्रयोग बहुत अधिक होता है, क्योंकि प्रत्येक शब्द के बाद थोड़ा सा स्थान छोड़ कर तब दूसरा शब्द टाइप किया जाता है जिसमें प्रत्येक शब्द एक दूसरे से अलग और साफ दिखाई पड़े। टाइप-राइटिंग में भी इसके लिये स्पेस बार रखा गया है जिसके उपयोग से शब्दों के बीच एक ही सा स्थान छूटता है।

जैसा पहले बताया गया है, दोनों हाथों की आठो उँगलियाँ निदर्शक अक्षरों पर रहेंगी, दोनों अंगूठे खाली छूटे रहेंगे। स्पेस बार के लिये दाहिने हाथ के अँगूठे का प्रयोग किया जाता है, जो हमेशा स्पेस बार पर रहता है। जैसे निदर्शक अक्षरों पर उँगलियाँ रहती हैं और अपने स्थान से हटकर दूसरे अक्षरों को टाइप करती हैं, और फिर उनके अपने स्थान पर लौटने पर उस अक्षर पर इतना दबाव नहीं पड़ता जिससे वह अक्षर अनावश्यक रूप से टाइप हो जायँ, उसी प्रकार स्पेस बार पर दाहिने हाथ का अंगूठा हमेशा रहेगा, लेकिन बिना जरूरत उस पर दबाव नहीं पड़े, इसका ध्यान रखना चाहिए। यदि बीच में अनावश्यक स्थान छूट गया तो भद्दा मालूम होगा। इसी भद्देपन को दूर करने के लिये स्पेस बार द्वारा एक सा ही स्थान छूटता है। स्पेस बार की आवश्यकता प्रत्येक शब्द के बाद, तथा जहाँ कहीं कुछ स्थान छोड़ना हो, पड़ती है। वाक्य के पूर्ण विराम चिह्न के बाद दो स्थान छोड़ा जाता है अर्थात् स्पेस बार दो बार दबाया जाता है।

मशीन का स्थान—फर्श पर बैठकर या कुर्सी पर बैठकर टाइप करना हो तो मशीन इतने ऊंचे पर होनी चाहिए कि उसकी अंतिम अक्षर-पंक्ति कुहनी की सीध में हो। यदि फर्श पर बैठकर टाइप करना है तो आठ इंच ऊंची चौकी पर मशीन रखकर टाइप करना चाहिए। इसी प्रकार यदि मेज और कुर्सी का उपयोग करना हो तो टेबुल इतना ऊँचा होना चाहिए जिस पर मशीन रखने से अक्षरों की आखिरी पंक्ति कुहनी की सीध में आवे।

दोनों अवस्थाओं में सीधे बैठना चाहिए। फर्श पर बैठने में तनकर सीधे बैठना चाहिए और हाथ को बहुत फैलाकर न रखना चाहिए। टाइप करने के लिये बिना बाँह की कुर्सी का उपयोग करना चाहिए। दोनों पैर सीधे जमीन पर जमाकर बैठना चाहिए।

चौकी पर या मेज पर मशीन के बगल में दाहिनी तरफ कम से कम एक फूट जगह छोड़ देनी चाहिए। इसी तरफ वे कागज, जिन्हें देखकर टाइप करना है, रखे जाते हैं। कुछ लोग बाईं तरफ भी जगह छोड़ते हैं। लेकिन सुविधा दाहिनी तरफ से ही अधिक होती है। फिर भी आगे चलकर अपने सुविधानुसार बाईं या दाहिनी तरफ का उपयोग करना चाहिए।

मशीन की सफाई—समय समय पर मशीन की सफाई तथा उसमें तेल देने की आवश्यकता होती है। जो टाइपिस्ट इस बात पर ध्यान नहीं देता और

सफाई नहीं करता, उसकी मशीन बहुत जल्द खराब हो जाती है और फिर व्यर्थ बहुत सा दाम खर्च हो जाता है। मशीन पर पड़ी गर्द इत्यादि साफ करने के लिये एक लंबे ब्रश का उपयोग किया जाता है जिससे मशीन के ऊपरी हिस्से की गर्द साफ कर दी जाती है। स्याही के फीते में स्याही होती है जो टाइप करते करते अक्षरों में जम जाती है और अक्षर साफ सुडौल नहीं छपते। इसे समय समय पर साफ करने के लिये कड़े बालों का ब्रश होता है। उसी से महीने में एक बार अक्षरों को अवश्य साफ कर लेना चाहिए। अक्षरों में मैल जम जाने पर बहुत से लोग आलपीन इत्यादि से मैल खुरच कर साफ करते हैं। साफ करने का यह ढंग ठीक नहीं। इससे अक्षरों पर खरोंच का दाग पड़ जाता है। दाग पड़ने से अक्षर सुडौल नहीं छपते। अक्षर एक बार खराब होने या उनका रूप विकृत हो जाने पर उनकी मरम्मत नहीं होती, बल्कि उन्हें बदलवाना पड़ता है जिसमें काफी खर्च होता है। इसलिये अक्षरों को साफ करने के लिये कड़े बालों का ब्रश और स्प्रिट का ही उपयोग करना चाहिए। ब्रश और स्प्रिट से अक्षर पूर्ण रूप से साफ हो जाते हैं।

मशीन में महीने में एक बार तेल देना चाहिए। तेल कहाँ कहाँ देना चाहिए, यह आगे बतलाया जायगा।

संकेत-लिपि और टाइप राइटिंग

संकेत लिपि के साथ साथ टाइप राइटिंग के ज्ञान की उपयोगिता के विषय में "विषय-प्रवेश" में कुछ लिखा जा चुका है। अंगरेजी में जिन्हें Stenographer स्टिनोग्राफर कहते हैं, उनका काम यह होता है कि वे संकेत लिपि में जो कुछ लिखते हैं, उसका साधारण लिपि में अनुलेख करते हुए विषय को अपनी पूर्ण गति से टाइप करते जाते हैं। हमें दुःख है कि हिन्दी में स्टिनोग्राफर Stenographer का वाचक कोई शब्द नहीं है और हम उसे बना भी नहीं सकते; और इसी कारण यहां हम इन दोनों विषयों के जाननेवालों का किस नाम से उल्लेख करें, यह एक समस्या है। लेकिन लोग भाव समझ लेंगे, इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, इन दोनों विषयों में पूर्ण गति प्राप्त करने के लिये, पहले से ही संकेत लिपि के प्रति इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि जो कुछ लिखा जाय, वह तुरन्त ठीक ठीक पढ़ लिया जाय। संकेत लिपि में शीघ्र गति प्राप्त करने के लिये कुछ लोग लिखने की ओर जितना ध्यान देते हैं, उतना स्वयं लिखकर पढ़ने की ओर नहीं देते। हिन्दी संकेत लिपि में एकाध नई प्रणाली ऐसी भी हैं जिनके शब्द-चिह्न भ्रमोत्पादक हैं; और लिखनेवाला यदि लिखे गये विषय का पंडित नहीं है और भाषा और साहित्य पर अधिकार नहीं रखता तो एक ही शब्द-चिह्न से ठीक शब्द के स्थान पर दूसरे शब्द का प्रयोग कर बैठता है। यह उसकी कमज़ोरी नहीं बल्कि प्रणाली का दोष है। यह कभी सम्भव नहीं कि संवाद-दाता उन सभी विषयों का पंडित हो, जिन विषयों पर दिये गये भाषणों इत्यादि को वह लिपि-बद्ध करता है। लेकिन तब भी प्रणाली के अन्तर्गत शब्द-चिह्न या वाक्य-चिह्न ऐसे होने चाहिएँ जो एक ही रूप के शब्दों के लिये हों, लेकिन भिन्न भिन्न अर्थ में भिन्न भिन्न सम्बन्ध से उपयोग में आते हों। किसी संकेत लिपि प्रणाली में यह सम्भव नहीं कि साधारण शब्दों के लिये एक एक शब्द-चिह्न बनाया जाय। सभी में कुछ शब्दों के लिये एक शब्द-चिह्न होता है। लेकिन ऐसे शब्द-चिह्न बनाने में यह ध्यान रखा जाता है कि एक ही रूप के उन्हीं शब्दों का एक समूह बनाया जाता है, जिनका अर्थ भिन्न होता है; और एक के स्थान पर दूसरे का बोध नहीं होता। अंगरेज़ी में पिटमैन साहेब की प्रणाली में इसी बात पर विशेष ध्यान दिया गया है तथा आज उसी के जाननेवालों की संख्या अधिक है। हिन्दी में भी कई प्रणालियाँ हैं, लेकिन सफल तथा पूर्ण प्रणाली कौन है, यह कहना मेरे लिये उचित नहीं, जब कि मैं एक प्रणाली से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता हूँ, यद्यदि मैं अपना अनुभव और विचार रखता हूँ। पंडित निष्कामेश्वर मिश्र वाली प्रणाली जाननेवालों को अभी

तक सभी क्षेत्रों में सफलता मिली है तथा उन्हीं की संख्या अधिक है; और वह इतने दिनों में काफी परिमार्जित भी हो चुकी है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए संकेत लिपि तथा टाइपराइटिंग इन दोनों विषयों की ऐसी प्रणाली सीखनी चाहिए कि आगे चलकर फिर रुकावट न हो।

संकेत-लिपिवालों को चाहिए कि वे टाइप राइटर की प्रत्येक पंक्ति पर अधिकार कर लेने पर इसके अभ्यासों को पहले अपनी पूर्ण गति से संकेत लिपि में लिखकर तब उसका अनुलेख टाइप में करने का अभ्यास करें। थोड़े दिनों के अभ्यास से फिर अशुद्धियाँ न होंगी और टाइप करने की गति समान रूप से बढ़ती जायगी। इसकी लिखावट तथा शब्दों के रूप सुन्दर और साफ होने चाहिएँ, क्योंकि थोड़े से अन्तर में ही अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

अभ्यास १

निदर्शक अक्षर

(Guide Keys)

बाएँ निदर्शक अक्षर
(Left Guide keys)
ब, क, म, ा

दाहिने निदर्शक अक्षर
(Right Guide keys)
र, स, ि, प

निम्न लिखित अभ्यास को टाइप करने के लिये दोनों हाथों की चार चार उंगलियां दोनों तरफ के निदर्शक अक्षरों पर रख लेनी चाहिएँ। उंगली रखते समय तो एक बार अक्षर बटनों (Keys) को देखना पड़ेगा, लेकिन टाइप करते समय फिर उधर दृष्टि न रहे। बिना देखे ही सब टाइप किया जाय। इसके विषय में विषय-प्रवेश में विस्तार के साथ कहा जा चुका है।

एक अक्षर के बाद स्पेस बार (Space Bar) से बिना स्थान छोड़े हुए दूसरे अक्षरों को इस अभ्यास में टाइप किया जायगा। कुल निदर्शक अक्षर टाइप कर लेने पर एक स्थान छोड़कर तब फिर से अक्षरों को टाइप करना चाहिए। इस प्रकार अभ्यास में केवल समूह के बाद एक स्थान छोड़ा जायगा।

प्रत्येक पंक्ति २० बार

बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि
बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि
बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि
बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि	बकमारसपि

अभ्यास २

जिस पंक्ति के आठ अक्षरों को निदर्शक-अक्षर (Guide keys) माना गया है, उसमें चार अक्षर और हैं। इस अभ्यास में बाकी चार अक्षरों में से तीन अक्षर लिये गये हैं। ब से लेकर व तक के अक्षरों पर यह अभ्यास और दाहिनी तरफ का अन्तिम अक्षर ो चिह्न अभी छोड़ दिया गया है। इन ग्यारह अक्षरों में बाएँ हाथ से ब, क, म, ा, न और ज टाइप किये जायँगे और र, स, ि, प, और व दाहिने हाथ से। इस प्रकार जो उंगली (चौथी उंगली) बाईं तरफ ा टाइप करती है, वही न और ज भी टाइप करेगी। इनको टाइप करके वह फिर अपने नियत स्थान

पर लौट जाती है। इस स्थान पर लौटने में ा पर कुछ दबाव पड़ता है, इसलिये निम्नलिखित अभ्यास में ा दो बार टाइप किया जायगा। इसी प्रकार दाहिनी तरफ व और प दो बार टाइप किया जायगा।

प्रत्येक पंक्ति २५ बार

बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप
बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप
बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप
बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप	बकमानजारसपिवप

अभ्यास ३

इस अभ्यास में कोई नया अक्षर नहीं लिया गया है। निदर्शक अक्षरों के ही छोटे छोटे शब्द दिये गये हैं, जिनके अभ्यास से निदर्शक अक्षरों पर पूर्ण अधिकार हो जायगा।

प्रत्येक पंक्ति २० बार

बक बम कन बज कम सब्र
रस सर सव सप रव पर
बान जाम बाजा नाज काम रवा
काज सजा नाना पाप नाक माना
जिस जाप माप जिन किस नास
पिन राज पान किन वाक सिन
किसान मिरजा जनाब पिसान मिसिर
जानिब निसकाम पिनाक कमसिन रसिक
मकान पकवान बिकना पिसना
मजाक मिजाज सिरसा विमान

अभ्यास ४

इस अभ्यास में निदर्शक अक्षरों (Guide keys) के ऊपरवाली पंक्ति के त्र, ध, म और च ये चार अक्षर बाईं तरफ के और ु, थ, ग और क्ष चार अक्षर दाहिनी तरफ के लिये गये हैं। जैसा कि विषय-प्रवेश में बताया जा चुका है, उंगलियाँ हमेशा निदर्शक अक्षरों पर रहेंगी और उन पर से एक एक उंगली उठ कर विभिन्न अक्षरों को टाइप करेगी। यह इस अभ्यास से आरम्भ होता है, इसलिये इस अभ्यास में यह ध्यान रखना चाहिए कि निदर्शक अक्षरों पर उंगली रखते हुए ऊपर की पंक्ति के अक्षर ठीक तरह से टाइप किये जायँ।

इन अक्षरों में दाहिनी ओर ु की मात्रा भी है। हिन्दी टाइप राइटरों में मात्राओं के लिये विशेष ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि अक्षरों में कुछ मात्राएँ जोड़ने के लिये अक्षर के पहले मात्रा टाइप करनी पड़ती है। इन मात्राओं के बाद अपने आपसे स्थान नहीं छूटता, जैसा कि अन्य अक्षरों में होता है। इसलिए ऐसे अक्षरों को अ-गति (Dead keys) अक्षर कहते हैं। इस अभ्यास में दाहिनी तरफ जब ु की मात्रा टाइप की जाय, तब उसके बाद स्पेस बार (Space bar) द्वारा एक स्थान अधिक दे दिया जाय। लेकिन जब किसी अक्षर में यह मात्रा लगानी हो तो स्थान नहीं छोड़ा जायगा, बल्कि पहले मात्रा को टाइप करके तब अक्षर टाइप किया जायगा। अगले अभ्यास में इसका प्रयोग करना आ जायगा।

प्रत्येक पंक्ति २५ बार

त्र ध भ च ु थ ग क्ष   त्र ध भ च ु थ ग क्ष   त्र ध भ च ु थ ग क्ष
त्र ध भ च ु थ ग क्ष   त्र ध भ च थ ग क्ष   त्र ध भ च ु थ ग क्ष
बत्र बध बभ बच बथ बग बक्ष   रत्र रध रभ रच रथ रग रक्ष
कत्र कध कभ कच कथ कग कक्ष   सत्र सध सभ सच सथ सग सक्ष

अभ्यास ५

इस अभ्यास में भी कोई नया अक्षर नहीं बढ़ाया गया है। जैसा कि चौथे अभ्यास में कहा गया है, मात्रा के बाद जगह नहीं छूटती और ा, ि, ी, ो और ौ को छोड़कर अन्य मात्राओं को अक्षर के पहले टाइप करना पड़ता है। इस लिए यदि "सुर" शब्द छापना है तो पहिले ु की मात्रा टाइप करके तब "स" अक्षर टाइप किया जायगा। यद्यपि पहले "स" टाइप करके "पीछे हटाओ" (Back spacer) कल के उपयोग द्वारा ु की मात्रा बाद में भी यथास्थान टाइप की जा सकती है, लेकिन "पीछे हटाओ" के उपयोग का अभ्यास अच्छा नहीं, और फिर बार बार इसका उपयोग करने में देर भी लगती है। इसलिए अक्षर के पहले मात्रा टाइप करने का अभ्यास शुरू से ही करना चाहिए।

इस अभ्यास में निदर्शक अक्षरों के साथ ऊपर की पंक्ति के अक्षरों को मिला कर शब्द बनाये गये हैं, जिन के अभ्यास से निदर्शक अक्षरों पर से हाथ उठाकर अन्य अक्षरों को टाइप करने में सरलता हो जायगी।

प्रत्येक पंक्ति २० बार

पत्र   चक   वध   पथ   जग   कक्ष
क्षन   गज   सच   नभ   वक्ष   क्षत्र
नाभ   चाचा   गाज   कथा   गाथा

जाग जात्रा मात्रा रात्रि धात्रि

विपथ नुपुर पथिक नागिन बधिक वाजिब

पुर बुध गुर बुक

मधु बपु चुन गुन

सुरपुर गुमसुम भुसुर मासिक

ससुर नासिका पुचकार कागज

अभ्यास ६

इस अभ्यास में निदर्शक अक्षरों के ऊपर की पंक्ति के बाकी चार अक्षर लिये गये हैं। इन में त और ` की मात्रा दाहिने हाथ के लिये तथा य और उ बाएँ हाथ के लिए हैं।

बाईं तरफ त और ` की मात्रा चौथी उंगली से टाइप की जायगी और दाहिनी तरफ य और उ छोटी उंगली से।

जैसा कि चौथे अभ्यास में ु की मात्रा के लिये कहा गया है, इस अभ्यास में ` की मात्रा के लिये भी वही बातें लागू होंगी। अर्थात् जिस अक्षर में ` की मात्रा लगानी हो, उस अक्षर के पहले मात्रा टाइप करनी चाहिए।

प्रत्येक पंक्ति २० बार

नेता गये थके त्रेता गधे

रेत चेता जाते भेजा मेज

वतन गमक याचना उसास तपन तरस

चेतना वेतन भेजना बेचना सेकना केबिन

मानवता त्रेतायुग जापान कबुतर जनमत

तनमन सिरनामा जागरन पक्वान मथुरा

थक गये मत जा जापान गिरेगा

क्षमा याचना कर बात न कर

उधम न मचा काम किये जा

जनाब गिरियेगा मत

अभ्यास ७

इस अभ्यास में निदर्शक अक्षरों की पंक्ति का अन्तिम चिह्न ा की मात्रा बढ़ाई गई है। यह दाहिने हाथ की छोटी उंगली से टाइप किया जायगा। नीचे दिये हुए अभ्यास में जो छोटे छोटे वाक्य बनाये गये हैं, वे पिछली दोनों पंक्तियों के शब्दों को लेकर बनाये गये हैं। इन दोनों पंक्तियों में का यह अन्तिम अभ्यास है, इसलिये इस पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

प्रत्येक २० वार

बात न करो
जो गया सो गया
काम मत रोको
चोर भाग गया
उसका सिर दबा दो
बात कम करो
रोज रोज न जाया करो
सरकार ने काम रोका था
बनारस जाना तो उनके पास जाना
भारत जागा तो सब जागे

अभ्यास ८

श ह अ ख, ल ष द

इस अभ्यास में नीचे की पंक्ति के सात अक्षर लिये गये हैं। इन के अतिरिक्त इस पंक्ति में चार चिह्न हैं, जो अगले अभ्यास में लिये जायँगे। इन सात अक्षरों में श, ह, अ, ख चार अक्षर बाएँ हाथ से टाइप किये जायँगे और ल, ष, द तीन अक्षर दाहिने हाथ से। इनके टाइप करने के पहले मशीन पर इनके स्थान को भले प्रकार समझ कर बिना देखे टाइप करने का ही अभ्यास करना चाहिए। नीचे हाथ लाने में कुछ असुविधा सी मालूम होगी और इसे देख लेने की भी उत्सुकता होगी। लेकिन ध्यान से टाइप करने का अभ्यास करने से यह हिचक दूर हो जायगी और ये भी उतनी ही आसानी से टाइप किये जा सकेंगे जैसे कि ऊपर की पंक्ति के अक्षर। निदर्शक अक्षरों पर से तो किसी हालत में भी सभी उँगलियाँ एक साथ नहीं उठेंगी, बल्कि आवश्यकतानुसार एक एक उठेगी। जैसा कि विषय-प्रवेश में कहा गया है, अभी जल्दी टाइप करने की ओर जरा भी ध्यान न देना चाहिए, बल्कि नियमानुसार ठीक ठीक टाइप करने की ओर ही ध्यान देना चाहिए।

इन अक्षरों को टाइप करने के लिये दोनों हाथों की छोटी उँगलियों को छोड़कर केवल तीन तीन उँगलियों का ही उपयोग करना चाहिए। बाईं तरफ दूसरी उँगली से श, तीसरी से ह और चौथी से अ और ख दोनों। इसी प्रकार दाहिनी तरफ दूसरी उँगली से ल, तीसरी से ष और चौथी से केवल द। नीचे दिये हुए अभ्यास को टाइप कर लेने पर इस पंक्ति पर भी पूर्ण अधिकार हो जायगा।

प्रत्येक २० बार

दमन,	सदन,	शकल,	तखत,	नहर,	नगद,
अजब,	शहर,	खबर,	हलक,	बहस,	दखल,
खलल,	शहद,	कमल,	लखन,	अमल,	चलन,
देश,	लाश,	आप,	वह,	शेष,	कोष,
शासन,	भाषन,	शोषन,	गोदाम,	पालन,	आपने,
सरदार,	अमेरिका,	अखबार,	जरखेज,	खरगोश,	
उपनिवेश,	अहमदाबाद,	ताजमहल,	अभिमान,	लुधियाना,	
खबरदार,	रोजगार,	पहरेदार,	अनजान,	हरजाना,	दुनिया ।

अभ्यास ६

नीचे ऐसे वाक्य दिये गये हैं जिनसे तीनों पंक्तियों पर बराबर अभ्यास हो जायगा। वाक्यों के पहले जो अंक दिया हुआ है, वह टाइप नहीं किया जायगा, क्योंकि अभी तक सबसे ऊपरवाली पंक्ति का अभ्यास नहीं किया गया है।

प्रत्येक १० बार

१. अखबार वेचना पर बेकार न रहना।
२. शहर जाना तो उनको बता देना।
३. यदि तुम रोज शहद खाते तो बिमार न होते।
४. वह रोता था पर अब चुप करा दिया।
५. रोज अखबार देखना चाहिए।
६. हर समय दोष न निकालना चाहिए।
७. भारत को ताजमहल के ललित कला पर अभिमान था।
८. आजकल कार से अधिक खतरा रेल से हो गया।
९. सरदार के भाषण पर सब को अमल करना चाहिए।
१०. जवाहिरलाल लखनऊ गये थे।
११. सुभाष बोस उधर से लुधियाना जानेवाले थे।
१२. पहले जापान भारत को अपना उपनिवेश बनाना चाहता था।
१३. हमे अपने देश की आन पर हर समय मरने के लिए तयार रहना चाहिए।
१४. पहिले के लोग समाज के सुख के लिये शासक चाहते थे पर अब वे समाज के शोषक हो गए।
१५. समाज को सुधारना हो तो देश को समाजवाद पर अमल करने दो।

अभ्यास १०

निदर्शक अक्षरों के ऊपरवाली पंक्ति में जो नियम ` और ु मात्राओं के लिये बताया गया है, वही नियम सब से नीचे की पंक्ति में हलंत और ऋ के चिह्नों के लिये भी लागू होगा। यदि "कृपा" शब्द टाइप करना है तो पहिले ृ चिह्न टाइप करके तब क टाइप किया जायगा; अर्थात् ` और ु की मात्रा की तरह ये दोनों चिह्न भी अगति (Dead keys) चिह्न हैं।

इस पंक्ति में दो चिह्न और भी हैं, जिनमें एक तो पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई है, और दूसरा भ से झ और उ से ऊ करने के लिए है। जिन छोटी मशीनों में फ नहीं होता, उनमें प के साथ भी यही चिह्न लगाकर फ बनाया जाता है। र में उ की मात्रा के लिये भी यही चिह्न लगाया जाता है। इस चिह्न में दो चिह्न एक साथ हैं, लेकिन ये दो नहीं बल्कि एक ही हैं। इसके ऊपर दी हुई छोटी सी पाई ऊपर की पाई के लिये है। यदि "झाबा" शब्द टाइप करना है तो पहिले भ टाइप किया जायगा और तब यह चिह्न लगा कर आ की मात्रा तथा बा टाइप किया जायगा। यदि इस चिह्न के ऊपर यह छोटी पाई न होती तो झ और आ की मात्रा एक साथ न होकर अलग मालूम पड़ती। इसलिए इन्हें दो न समझना चाहिए।

बाईं तरफ हलंत और ऋ के चिह्नों को छोटी उँगली से तथा इसी प्रकार दाहिनी तरफ भी दोनों चिह्नों को छोटी उँगली से टाइप किया जायगा।

प्रत्येक २० बार

वत् कृपा गृह पुरु मृग वृक्ष कृषि झाबा रुपया ऊपर

कृपा कर उसके घर आओ।

पहिले ऊपर जा कर देखो।

मातरम् के माने माता।

उनसे बात समझ कर करना चाहिए।

वह उसका रुपया लेकर अब तक भागा हुआ था।

रोज सबेरे पहिले ओम् कहना चाहिए।

वह सिर पर झाबा रखे जाता था। वह उधर से आ रहा था।

चाबुक मारकर जानवर वश में न करना चाहिए।

अभ्यास ११

जैसा कि विषय-प्रवेश में स्पेस बार (Space Bar) के उपयोग के संबंध में यह बताया गया है कि पूर्ण विराम-चिह्न के बाद स्पेस बार द्वारा दो स्थान छोड़ा

जाता है, उसका उपयोग इस अभ्यास में किया जायगा। पूर्ण विराम के बाद स्पेस बार द्वारा दो स्थान छोड़ने का तात्पर्य यह होता है कि एक वाक्य दूसरे वाक्य से थोड़ा अलग मालूम पड़े। यदि किसी वाक्य का अंतिम शब्द "थे" है और इसके बाद पूर्ण विराम-चिह्न है तो "थे" के बाद बिना स्थान छोड़े ही पूर्ण विराम का चिह्न लगेगा। इसके बाद दूसरा वाक्य आरंभ करने के पहिले दो स्थल छोड़ा जायगा। निम्नलिखित वाक्यों में इसका ध्यान रखते हुए अभ्यास करना चाहिए।

प्रत्येक १० बार

१. मातरम् के माने माता यह जानते हुए मुसलमान छात्र गाने में साथ देने से हिचकते थे।

२. नगरवाले सोच समझ कर अगर विचार करना चाहते तो यह दिन देखने को न मिलता।

३. पहिले लोग गप शप में समय बरबाद करते थे लेकिन समय बरबाद करने के दिन अब जाते रहे। काम काज न करते रहने से अब गुजर किस तरह होगा।

४. देश के कितने शिक्षित लोग रोजगार में तथा कृषि में सहयोग देते थे। किसान रोते थे उनको बुलाते थे लेकिन ये लोग चुपचाप कान पर हाथ रखे अपने धुन में लगे रहते।

५. अब वे दिन जाते रहे जब लोग विदेश में बने माल बरतने से हिचकते थे। उसका यह परिणाम हुआ कि आज देश में बेकार लोग अधिक हो गये।

अभ्यास १२

पिछले ग्यारह अभ्यासों में अक्षरों की तीन पंक्तियों पर पूरा अभ्यास किया जा चुका है। अभ्यासों के द्वारा यह भी याद हो गया है कि कौन अक्षर कहाँ पर है, और किस बटन (key) को दबाने से कौन सा अक्षर टाइप होता है। लेकिन अगर अक्षरों को तथा अक्षर-पंक्तियों को ध्यान से देखा जाय तो अभी इन तीन पंक्तियों में भी उतने ही अक्षर ऐसे बाकी हैं, जिनका अभ्यास नहीं किया गया है। प्रत्येक बटन पर दो अक्षर या चिह्न बने हैं। जैसे यदि ब के बटन को देखा जाय तो ज्ञात होगा कि उसमें ब ही नहीं लिखा है, बल्कि उसके ऊपर एक अक्षर फ भी लिखा है। इसी प्रकार सभी बटनों में दो अक्षर अथवा चिह्न हैं; अर्थात् एक ही बटन से दो अक्षर छापे जा सकते हैं।

अक्षर-पंक्तियों के दोनों तरफ़ दो कुछ बड़े बड़े बटन हैं, जिन पर "कल बदल" (Shift key) लिखा हुआ है। इन बचे हुए अक्षरों को टाइप करने के लिये इन्हा

बटनों का उपयोग किया जायगा। यदि ब के ऊपर का फ टाइप करना है तो "कल बदल" को दबा कर तब ब के बटन को दबाया जायगा और तब फ टाइप होगा। पढ़ने से फ टाइप करने की यह प्रणाली कठिन मालूम होगी, लेकिन वास्तव में यह बात नहीं है। यह केवल हिन्दी मशीन में हो सो बात नहीं, बल्कि ठीक यही प्रणाली अंग्रेजी मशीन में भी बड़े (Capital) अक्षरों को टाइप करने के लिए है।

बाईं और दाहिनी दोनों तरफ "कल-बदल" के दो बटन हैं। दोनों तरफ ये बटन इसलिए हैं कि यदि बायें हाथ की तरफ के अक्षर टाइप करने हों तो दाहिनी तरफ के "कल-बदल" को दबाया जाय; और यदि दाहिनी तरफ के अक्षर टाइप करने हों तो बाईं तरफ के "कल-बदल" को दबाया जायगा। इनको तब तक दबा कर रखा जाता है जब तक अक्षर टाइप न कर लिया जाय। यदि फ टाइप करना है तो पहिले दाहिनी तरफ के "कल-बदल" को दाहिने हाथ की छोटी (कनिष्ठा) से दबाया जायगा और उस पर से तब तक उँगली न हटेगी, जब तक बाईं तरफ कनिष्ठा से फ न टाइप कर लिया जाय। दोनों तरफ का "कल बदल" छोटी उँगली से दबाया जायगा।

बाईं तरफ "कल बदल" के ऊपर एक बटन और है, जिसे "कल बंद" (Shift key lock) कहते हैं। कल-बदल को कुछ देर दबा कर रखने के लिए यह ताले की भाँति कार्य करता है। "कल-बदल" को दबा कर यदि इसको दबा दिया जाय, तो कल-बदल तब तक नीचे दबा रहेगा जब तक इसको फिर दबा कर ऊपर न किया जाय। इसे दबा देने से ही यह ऊपर आ जाता है, और कल-बदल खुल जाता है। निदर्शक अक्षरों की भाँति ऊपर के चार चार अक्षर अभ्यास के लिए पहले लिये जाते हैं। इनका अभ्यास इस कल-बंद की सहायता से किया जायगा। इनके लिये भी उन्हीं उँगलियों का उपयोग होगा, जिनसे निदर्शक अक्षरों का अभ्यास किया गया है। उँगलियाँ इन पर भी हमेशा रखी रहेंगी और बिना देखे टाइप किया जायगा।

प्रत्येक १५ बार

फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ	फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ
फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ	फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ
फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ	फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ
फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ	फ क ॠ ञ रू ः ी ॅ

फ क ॠ ञ ॠ ३ ञ रू ः ी ॅ ठ ॅ

फ क ॠ ञ ॠ ३ ञ रू ः ी ॅ ठ ॅ

फ क ॠ ञ ॠ ३ ञ रू ः ी ॅ ठ ॅ

फ क ॠ ञ ॠ ३ ञ रू ः ी ॅ ठ ॅ

अभ्यास १३

इस अभ्यास में पंक्ति के ऊपर नीचे के अक्षरों को मिला कर छोटे छोटे शब्द बनाए गए हैं। शब्दों के बनाने में यह ध्यान रखा गया है कि यदि नीचे की पंक्ति का एक अक्षर दाहिनी तरफ है, तो दूसरा अक्षर बाईं तरफ का जिससे "कल-बदल" के उपयोग में सरलता हो और कहीं हाथ न रुके। यह भी एक ऐसा स्थान है जहाँ हाथ रखते ही देख लेने की प्रवृत्ति होती है। इसलिये विद्यार्थियों को सावधानी रखनी चाहिए और बिना देखे टाइप करने का अभ्यास करना चाहिए। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पहले ठीक ठीक टाइप करने की ओर ही ध्यान देना चाहिए, किसी प्रकार की जल्दी न करनी चाहिए।

प्रत्येक १० वार

बी	रफ	क्रौ	सफ	जी
पक्का	सफा	रूम	मौन	वज्म
मौका	जीव	बप्पा	बौना	मज्जी
रस्सी	मक्का	बरौनी	नज्म	बम्बा
फौरन	कम्प	जन्म	किस्म	सिक्का
लज्जा	हुज्जत	किफायत	फसाहत	फिसाद
मिन्नत	समीप	निस्सीम	जब्बा	फिसलन

अभ्यास १४

इस अभ्यास के शब्द निदर्शक पंक्ति के ऊपर के अक्षरों को तथा तीनों पंक्तियों के नीचे के अक्षरों से बनाए गए हैं।

प्रत्येक १० वार

मन्सा	दन्श	लेन्स	सन्त	गन्द	बन्द
हल्का	धक्का	मुक्का	शक्की	मक्का	चक्का
सस्ता	चुस्त	दोस्त	हस्थ	मस्त	पस्त
लज्जा	कज्जल	उज्वल	जब्बा	राज्य	भोज्य

१. संधान करने आकर बेचारा धोखा खा गया।
२. जापान ने चीन पर अन्धा-धुन्ध बम गिराये।
३. मौका पाकर स्पेन पर लोग मनमानी करते थे।
४. केवल रूप देखने से क्या होगा, चरित्र और स्वभाव भी देखना चाहिए।

५. उनके लिये यह कहना उतना ही आसान है जितना आसान चेकास्लोवाकिया पर कब्जा करना।

६. व्यापार के लिए यह जरूरी है कि व्यापारी मिल जुल कर इस क्षेत्र में काम करें।

७. कृपा करके ऊपर चलिए हम लोग भी अभी आए।

८. व्याज की दर अधिक होने से कितने ही किसान बिना मौत मर जाते थे।

९. उस राज्य की तरह बनारस की राज्य-व्यवस्था भी किसी दिन खराब थी।

अभ्यास १५

निदर्शक पंक्ति के ऊपर की पंक्ति के बाकी अक्षरों का अभ्यास इस पाठ में किया जायगा। जैसा कि पहले निदर्शक पंक्ति में किया गया था, "कल बन्द" के द्वारा इन अक्षरों तथा चिह्नों को पहले याद किया जायगा। चार चार अक्षर दोनों तरफ पहले उन्हीं उँगलियों से जिनसे निदर्शक अक्षर टाइप किए जाते हैं, अभ्यास किया जायगा। बाद में बचे हुए चार अक्षरों में से दो दो दोनों हाथ से टाइप किये जायँगे।

प्रत्येक १५ बार

त्त ठ ॠ च इ क्ष र ष्ट   त्त ठ क च इ क्ष र ष्ट
त्त ठ ॠ च इ क्ष र ष्ट   त्त ठ क च इ क्ष र ष्ट
त्त ठ ॠ च इ क्ष र ष्ट   त्त ठ क च इ क्ष र ष्ट
त्त ठ ॠ च इ क्ष र ष्ट   त्त ठ क च इ क्ष र ष्ट

त्त ठ ॠ ट ॆ च इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ ट ॆ च इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ ट ॆ च इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ ट ॆ च इ क्ष र ष्ट ् ष्ट

त्त ठ ॠ च ट ॆ च ए इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ च ट ॆ च ए इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ च ट ॆ च ए इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ च ट ॆ च ए इ क्ष र ष्ट ् ष्ट
त्त ठ ॠ च ट ॆ च ए इ क्ष र ष्ट ् ष्ट

अभ्यास १६

जैसा कि पहिले ु और ` की मात्रा के विषय में बताया गया है, इस अभ्यास में ू और ै की मात्रा के लिए याद रखना चाहिए कि अक्षर के पहले मात्राएँ टाइप की जायँगी।

प्रत्येक १० बार

१.	बच्चा	तथ्य	पत्ता	ध्यान	आत्मा
	नित्य	भक्ष्य	इन	त्याज्य	सत्य
	एक	बग्घी	चैत्र	ऐनक	अध्याय

२. गाय के दूध से तन्दुरुस्ती अच्छी रहती है ।

३. ऐसा कौन सा विषय है जो अभ्यास के द्वारा मनन न किया जा सके।

४. समाज की उन्नत और अवनत अवस्था का पूरा परिचय उसके साहित्य से मिलता है।

५. देश में बहुत सी जातियाँ और मत के होने से उन्नति में बाधा होती है।

६. महात्माजी का कहना है कि भारत के सभी मतों का मूल सत्य और अध्यात्म था, लेकिन लोग अब उन्हें भूल गए।

७. जिस देश के बल पर आज मुसोलिनी अबिसीनिया को गुलाम बना रहे हैं, वह भी एक दिन गुलाम देश था। वह भी कमजोर तथा पद्दलित था।

८. अमेरिका से गुलामी की रिवाज को दूर करनेवाला जार्ज गैरिजन इतना गरीब था कि वह एक प्याले दूध और एक लोफ़ पर ही सारा दिन बितांने के लिये बाध्य था।

९. धरित्री के वक्षस्थल पर आज मानव जितना अत्याचार कर रहा है उतना और किस युग में हुआ था। फिर भी सब सभ्य होने का दम भरते नहीं थकते।

१०. विदेशों में पंडित जवाहरलाल नेहरू की वही इज्जत है, जो किसी आजाद देश के नेता की होती है।

अभ्यास १७

इस अभ्यास में नीचे की पंक्ति के ऊपर के अक्षरों का अभ्यास किया जायगा। उनमें दो र के चिह्न हैं जो अक्षर के पहिले टाइप किए जाते हैं और अगति अक्षर (Dead keys) होने के कारण अपने आप स्थान नहीं छोड़ते। इसलिये नीचे दिए हुए अभ्यास में सिर्फ इसके लिए स्पेस बार (Space bar) का प्रयोग किया जाएगा। पहले की तरह इनका भी कल-बदल और कल-बन्द की सहायता से अभ्यास किया जाएगा।

प्रत्येक १५ बार

१. —॰ श ह्म श्र : ल ६ —॰ श ह्म श्र : ल ६
—॰ श ह्म श्र : ल ६ —॰ श ह्म श्र : ल ६
—॰ श ह्म श्र : ल ६ —॰ श ह्म श्र : ल ६

२. —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य
—॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य
—॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य

३. —॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६
—॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६
—॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६
—॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६

प्रत्येक १५ बार

(१) —॰ श ह्म श्र : ल ६ —॰ श ह्म श्र : ल ६
—॰ श ह्म श्र : ल ६ —॰ श ह्म श्र : ल ६
—॰ श ह्म श्र : ल ६ —॰ श ह्म श्र : ल ६

(२) —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य
—॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य
—॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य —॰ श ह्म श्र : ल ६ द्य

(३) —॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६ —॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६
—॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६ —॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६
—॰ श ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६ —॰ ह्म ऋ ख ह्म श्र : ल ६ द्य ६

प्रत्येक १० बार

(१) ऋषि श्री विद्या प्रेम ख्वाब
(२) क्लेश नर्क श्रम बर्फ धर्म
(३) स्वामी दयानन्द वस्तुतः एक सच्चे ऋषि थे ।
(४) हिंदू विश्वविद्यालय हिंदू संस्कृति का द्योतक है ।
(५) सदा से काशी विद्या का केंद्र रही है और आज भी है ।
(६) कोई कार्य यदि निश्चयपूर्वक आरंभ किया जाय तो सफलता अवश्य मिलती है ।

(७) चिन्ता से मनुष्य की सारी स्फूर्ति लुप्त हो जाती है और वह निर्जीव हो जाता है ।

(८) प्रधान मंत्री श्री चेम्बरलेन की यह नीति किसी दिन योरप के लिये हानिकारक सिद्ध होगी ।

(९) युक्त प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा में इस समय काश्तकारी बिल पेश है।

(१०) भारत का अन्न खाकर देशवासी होकर हमारे कुछ मुसलमान भाई अरब की वायु में श्वास लेना चाहते हैं।

(११) देश के वास्तविक व्यापार की जगह दलाली होती है जो धनिकों के हाथ में है ।

(१२) स्वर्गीय प्रसादजी के कवित्व में सची आत्मानुभूति है जिसे सब नहीं समझ सकते ।

(१३) क्षय निवारण कोष के लिये श्रीमती लिनलिथगो काफी चंदा एकत्र कर रही हैं । ईश्वर उन्हें इस कार्य में सफलता दे ।

(१४) हिंदी के दैनिक आज का बहुत उच्च स्थान है। उसके संपादकीय अग्रलेख अपनी निजी विशेषता रखते हैं ।

(१५) भारत को विलायत के जनवर्ग से कोई द्वेष नहीं है बल्कि युद्ध है वहाँ के साम्राज्यवाद से ।

अभ्यास १६

अब एक पंक्ति रह गई है जिसका अभ्यास नहीं किया गया है। ऊपर की पंक्ति में एक चिह्न नीचे बिंदी लगाने के लिये है, जिसका उपयोग क़िसी अक्षर के नीचे होता है। इसे टाइप करने के लिये ु और ` को मात्रा की तरह स्पेस बार द्वारा स्थान छोड़ा जायगा, क्योंकि यह अगति है और यह स्वयं स्थान नहीं छोड़ता ।

प्रत्येक २० बार

(१) ज्ञ द्द घ द्ध ढ ड ठ ढ   ज्ञ द्द घ द्ध ढ ड ठ ढ
ज्ञ द्द घ द्ध ढ ड ठ ढ   ज्ञ द्द घ द्ध ढ ड ठ ढ
ज्ञ द्द घ द्ध ढ ड ठ ढ   ज्ञ द्द घ द्ध ढ ड ठ ढ

(२) श द्द घ द्ध छ द्ध ढ ड ठ ट ढ   श द्द घ द्ध द्द छ ढ ड ठ ट ढ
श द्द घ द्ध छ द्ध ढ ड ठ ट ढ   श द्द घ द्ध द्द छ ढ ड ठ ट ढ
श द्द घ द्ध छ द्ध ढ ड ठ ट ढ   श द्द घ द्ध द्द छ ढ ड ठ ट ढ

(३) श द्द घ द्ध छ द्ध ण ढ ड ठ ढ ट   श द्द घ द्ध छ द्ध ण ढ ड ठ ढ ट
श द्द घ द्ध छ द्ध ण ढ ड ठ ढ ट   श द्द घ द्ध छ द्ध ण ढ ड ठ ढ ट
श द्द घ द्ध छ द्ध ण ढ ड ठ ढ ट   श द्द घ द्ध छ द्ध ण ढ़ ड ठ ढ ट

प्रत्येक १५ वार

हिंदी टाइप राइटर में ड़ और ढ़ अक्षर नहीं हैं। ड और ढ के नीचे बिंदी लगा कर लिखा जाता है। बिंदी लगाने में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पहले बिंदी टाइप करके तब अक्षर टाइप किया जायगा।

अभ्यास २०

प्रत्येक १५ वार

(१) स्थान दृश्य उद्धार घर छल

(२) बैठा टिकट डब्बा ढाल घृणा

(३) उड़ा गढ़ा ढ़ाड़स डेढ़ बड़ा

(४) बिगड़ कर। वह गिर पड़ा। ढाढ़स दो। लड़का भागा है। औरत से झगड़ा करना बुरा है। लड़ाई छिड़ जाने पर रेजिमेंट की बुलाहट हुई।

इसे ५ बार टाइप कीजिये

(१) एक छोटा लेकिन मोटा घोड़ा गाड़ी को छोड़ सड़क पर सरपट दौड़ रहा था। गाड़ी भी झटके से टूट कर गड्ढे में लुढ़क पड़ी। उसकी खटाखट की आवाज से बटोही चटपट दौड़ पड़े। जब उनसे गाड़ीवान ने गिड़गिड़ा कर गाड़ी उठाने को कहा तो पीछा छुड़ाने के लिये सटपटाने लगे।

अभ्यास २१

इस अभ्यास में वर्णमाला के सब अक्षर क्रम से दिये गये हैं जिनके अभ्यास से अक्षरों के स्थान का पूर्ण अभ्यास हो जायगा।

प्रत्येक १० बार

(१) अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

(२) क ख ग घ ङ — क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ — च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण — ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न — त थ द ध न

प फ ब भ म — प फ ब भ म

य र ल व श — य र ल व श

ष स ह क्ष त्र — ष स ह क्ष त्र

ज्ञ — ज्ञ

अभ्यास २२

हिंदी टाइप मशीन में अर्ध विराम-चिह्न, "कॉमा" (Comma) नहीं है। लेकिन इसकी बहुत आवश्यकता पड़ती है। ऊपर की पंक्ति में दी हुई बिंदी का उपयोग हिंदी मशीन पर कामा के लिये किया जाता है।

पूर्ण विराम-चिह्न के विषय में यह बतलाया गया है कि खड़ी पाई के बाद स्पेस बार से दो स्थान छोड़ा जाता है। उसी प्रकार अर्द्ध विराम के बाद एक स्थान छोड़ा जायगा। लेकिन चिह्न के पहले कोई स्थान नहीं छोड़ा जायगा। नीचे पाँच अभ्यास दिये जाते हैं जिनमें विराम-चिह्न का ध्यान रख कर प्रत्येक की दो दो प्रतिलिपि कीजिये।

बुखारिन के नेतृत्व में साम्यवादी पार्टी का दक्षिण पक्ष, जो संख्या में नगण्य सा था, कहता था कि हमें आर्थिक और सैनिक तौर से शक्तिशाली जरूर होना चाहिए, लेकिन यह प्रोग्राम आवश्यकता से अधिक तेज़ है। इससे लोगों का असंतोष बढ़ेगा, हमें अपनी गति मंद रखनी चाहिए। वाम पक्ष भी, जिसकी संख्या बहुत थोड़ी थी, त्रोस्की के नेतृत्व में कहता था कि स्तालिन का प्रोग्राम हमें गलत रास्ते पर ले जा रहा है। रूस की बोलशेविक क्रांति संसार भरमें समाजवादी क्रांति करने के लिये हुई थी। वह रूस में एक दूसरी राष्ट्रीयता कायम करने के लिए नहीं हुई थी। हमें अपनी सारी शक्ति लगाकर संसार के सभी देशों में मजदूरों और किसानों को तैयार कर इनकलाब कराना है। अगर हम रूस को सैनिक और आर्थिक तौर से मजबूत करने में लग जायँगे, तो विश्वक्रांति का ऊंचा आदर्श हम से दूर हो जायगा।

अभ्यास २३

हाँ, यदि यह प्रश्न हो कि यह प्रदर्शन बंद कैसे हो, गृहकलह शांत कैसे हो, तो जरूर उत्तर देना सूक्ष्मदर्शिता का काम है। यह काम भी, आज से हजारों वर्ष पहले सूक्ष्मदर्शियों ने, सम्यग्दर्शन, आत्मदर्शन, करके अपनी संतान के भले के लिए, दर्शन के ग्रंथोमें लिख के रख दिया है। स्व का अर्थ बहुत सरल भी है और बहुत गंभीर भी। उसमें सब विपत्तियाँ भी हैं और सब कल्याण भी। यह सब वे बता गये हैं। पर हम, उनकी अभागी संतान, उस ओर आँख ही नहीं फेरते। फिर तथ्य का, सत्य का, दर्शन कैसे हो। अखबारों में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के आपस के झगड़े, परस्पर के द्रोह, मत्सर, आक्षेप और अब सभाओं में घूंसे लाठी का हाल, पढ़ पढ़ कर, मेरा भी दिल रोता है। पर कोई बस नहीं चलता। शायद इस देश के भाग्य में लिखा है कि अभी और घोर यमयातना भोगे, तब इसके पापों का क्षय हो, और अच्छे दिन देख पड़ें।

अभ्यास २४

जब तक भारतवर्ष में वास्तविक रूप से कार्यात्मक शक्ति की उपासना होती थी, तब तक भारत स्वाधीन था और वह शकों, हूणों, सिकंदर और सल्यूकस आदि के आक्रमणों से न केवल अपनी रक्षा ही करने में सफल हुआ था बल्कि आक्रमण-कारियों को मुँह की खानी पड़ी थी। जब मिट्टी के शेरों ने प्रतिभा में शक्ति की उपासना का आविष्कार किया तब से भारत के गले में मढ़ी गई कभी न जानेवाली दासता। समझ में नहीं आता कि लाखों मूक पशुओं को देवी की काल्पनिक प्रतिभा के सामने बलि दे देकर इन कापुरुषों ने शक्ति की उपासना करके अबतक कितनी शक्ति का संचय किया और उस शक्ति का कितना सदुपयोग किया। उस समय धर्म ढोंग के लिये नहीं था, धर्म का व्यवसाय नहीं होता था, गंगाजल का वी० पी० नहीं होता था। निश्चित रूप से शुल्क लेकर पारसल द्वारा मृतकों की हड्डियाँ मंगा कर उन्हें काशी, प्रयाग या हरिद्वार में प्रवाहित करनेवालों को कण्ट्राक्ट नहीं दिया जाता था। उस समय का धर्म समाज संघटन के लिये होता था न कि फूट और मतभेद को प्रश्रय देने के लिये।

अभ्यास २५

स्पष्ट है कि यह सब काम कुछ ऐसे बढ़ नहीं रहे हैं कि जिससे देश के व्यापक जीवन का गवर्नमेण्ट पर कुछ प्रभाव पड़ा हो। प्रभाव पड़ा, तो असहयोग का और सविनय अवज्ञा का। जनता के हृदय में यह बात नहीं बैठ रही है कि उक्त रचनात्मक कामों से स्वराज्य प्राप्त होगा। ये तो कारण नहीं हैं, कार्य हैं। यदि सच्चा अच्छा स्वराज्य सिद्ध हो जाये तभी ग्रामोद्धार, अछूतोद्धार, खादी प्रचार सिद्ध हो सकेगा। अहिंसात्मक आन्दोलन अवश्य इस देश, काल, अवस्था में भारतवर्ष के लिये एक मात्र उत्तमोत्तम उपाय है, साधन है। वह कोई रचनात्मक कार्य नहीं है। और वह उपाय, वह साधन, तभी चरितार्थ हो सकता है जब उसका उपयोग करनेवाली विशाल सेना तैयार की जाय। गृहस्थ ही बालबच्चों की भी चिंता करें, गवर्नमेंट को भी टैक्स दें, मुफ्तखोर, पचास लाख साधु, सन्त, फ़क़ीर, महन्त, औलिया तकियादारों को भी खिलावें पिलावें, ऐश करावें, और जेल भी जायं, जायदाद भी लुटावें, बेंत भी खायं, लाठी, भाले, बंदूक से मारे जायं, यह कै दिन चल सकता है। यह काम तो वही कर सकते हैं जो ब्रह्मचर्य, बाणप्रस्थ या सन्यास आश्रम में हों, फ़क़ीर, मिस्कीन, गोशानशीन, तारिकुद् दुनियाँ हों। रहा हिंदू-मुस्लिम एका, यदि यह हो सके तो जरूर परराज्य के स्थान पर स्वराज्य स्थापित हो सकता है, तथा हिन्दू एका भी, तथा मुस्लिम एका भी। हिंदुओं में हजार भेद हैं तो मुसलमानों में भी बीसियों।

अभ्यास २६

अब फैक्टरी एक्ट पर दृष्टि डाल लेना ज़रूरी है। पूँजीदार कच्चा माल, ईंधन, मशीनरी तथा अन्य दूसरे आवश्यक सामान खरीदता है। पूँजीदार और श्रमियों को किराये करता है यानी उनकी श्रमशक्ति को खरीदता है। पूँजीदार हर वस्तु के लिये नक़द द्रव्य देता है। उत्पत्ति का काम प्रारंभ होने लगता है। श्रमी काम करते हैं, मशीनें चलती और घिसती हैं, ईंधन जलता है, फैक्टरी की इमारतें टूटती फूटती हैं, श्रम शक्ति का व्यय होता है। इन सब के फलस्वरूप फैक्टरी से एक नई जिन्स तैयार होकर निकलती है, जिसका भी अन्य जिन्सों की भाँति मूल्य होता है। यह मूल्य क्या है। सर्व प्रथम, जिन्स ने अपनी उत्पत्ति के साधनों का मूल ग्रहण किया, जो काम में आ चुके हैं, कच्चा माल, जला हुआ ईंधन, मशीनरी का घिसना आदि। फिर श्रमियों का श्रम भी उसी जिन्स में लगा होता है।

अभ्यास २७

माप पटरी [स्केल], मारजिनल स्टॉप, मारजिन रिलीज की

The Scale, The Marginal Stops and the Marginal Release key.

बेलन के सामने एक माप पटरी (स्केल) बनी रहती है जिस पर बराबर बराबर आठ हिस्सों पर सीधी लकीर खींची रहती है। इनमें प्रत्येक हिस्सा दस दस हिस्सों में बँटा रहता है, जिन की दूरी एक अक्षर की दूरी रहती है। ऐसे अस्सी स्थान पूरी पटरी पर बने हुए रहते हैं। बड़ी लकीरों में पहले को छोड़ कर दूसरे पर बीस तथा इसी प्रकार अंत वाली लकीर पर अस्सी अक्षर टाइप किये जा सकते हैं। प्रत्येक छोटे हिस्से को डिग्री कहते हैं।

इस पटरी पर दोनों तरफ दो मारजिनल स्टॉप हैं जो दबाकर पटरी पर इधर उधर हटाये बढ़ाये जा सकते हैं। इसका उपयोग हाशिया ठीक करने के लिए किया जाता है। कागज़ पर जितना हाशिया छोड़ना हो, उतनी डिग्री पर मारजिनल स्टॉप लाकर लगा दिया जाता है। दो मारजिनल स्टॉप दाहिनी और बाईं दोनों तरफ के लिए हैं। मारजिनल स्टॉप लगाने में और कुछ नहीं करना पड़ता केवल जिस स्थानपर उसे लगाना है, उस स्थान पर उनके पीछेवाला बटन दबा कर खींच लाया जाता है और वहीं छोड़ दिया जाता है। वह फिर उस स्थान पर से अपने आप नहीं हटेगा। बाईं तरफ का ही हाशिया हमेशा ठीक रखा जाता है; लेकिन इसके माने यह नहीं कि दाहिनी तरफ हाशिया ठीक नहीं रखा जाता। लेकिन चूँकि दाहिनी तरफ शब्द शेष होते हैं, इस लिये इधर का हाशिया एक दम सीध में नहीं होता, जैसा कि बाईं तरफ का।

यदि दाहिनी तरफ का हाशिया दस डिग्री का छोड़ना है तो कागज़ लगा कर जहाँ से कागज़ लगा है (क्योंकि सभी कागजों की चौड़ाई अस्सी डिग्री नहीं होती) वहाँ से दस डिग्री बाईं तरफ हटा कर दाहिनी तरफ का मारजिनल स्टॉप लगा दिया जाता है। इस मारजिनल स्टॉप के आगे दाहिनी तरफ फिर टाइप नहीं हो सकता और प्रत्येक पंक्ति एक ही स्थान से आरंभ होगी। पहिली पंक्ति हाशिये से पाँच या दस डिग्री बाईं तरफ दूर से टाइप की जाती है और उस के बाद की सभी पंक्तियाँ ठीक हाशिये पर से टाइप की जाती हैं।

बाईं तरफ कम से कम दस डिग्री का स्थान छोड़ कर मारजिनल स्टॉप लगाना चाहिए। दाहिनी तरफ हाशिया इसलिए ठीक नहीं रहता कि उधर शब्द शेष होते हैं। यदि कोई ऐसा शब्द अंत में आ गया जो दस अक्षरों का है, लेकिन जगह नौ अक्षरों के लिये ही है तो बचा हुआ एक अक्षर नीचे की पंक्ति में संधि विच्छेद करके नहीं किया जा सकता, बल्कि मारजिन रिलीज के द्वारा मारजिनल स्टॉप के बाद टाइप किया जायगा। इस तरह दाहिनी तरफ का हाशिया ठीक नहीं रहता। लेकिन एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे छूटे हुए अक्षरों को ही हाशिये पर टाइप किया जाय। इसके बाद का छोटा या बड़ा कोई शब्द दूसरी पंक्ति में टाइप करना चाहिए। इतना ध्यान रखने से दाहिनी तरफ का हाशिया भी बहुत कुछ ठीक रहता है।

अभ्यास २८

मारजिन रिलीज़ की

(The Margin Release key)

स्केल के सामने मशीन के फ्रेम पर लोहे का पालिश किया हुआ एक छोटा सा ठोस हुक लगा रहता है, जिस पर मारजिनल स्टॉप रुकता है। इसे मारजिन रिलीज की Margin Release key कहते हैं।

दाहिनी तरफ का मारजिनल स्टॉप जब इस पर आकर रुकता है, उस समय भी यदि किसी शब्द के बचे हुए दो एक अक्षर इस के बाद टाइप करने हों तो मारजिन रिलीज की के लटकते हुए निचले भाग को नीचे की ओर जरा दबाने से मारजिनल स्टॉप से रोक हट जाती है, और तब बचे हुए अक्षर हाशिये पर टाइप होते हैं। इस में अधिक समय नहीं लगता, यद्यपि इस समय पढ़ने से ऐसा हो मालूम होगा।

घंटी

(The Bell)

दाहिनी तरफ लगाए हुए मारजिनल स्टॉप के आठ डिग्री पहले घंटी बजती है और इस बात की सूचना देती है कि अब हाशिया आ गया है। घंटी बजने के बाद

यह खयाल रखना चाहिए कि जो शब्द टाइप किया जा रहा है, वह यदि इसी बीच पूरा हो जाता है और दूसरे शब्द के लिए यदि पर्याप्त स्थान नहीं है तो दूसरी पंक्ति आरंभ करनी चाहिए। और यदि मारजिनल स्टॉप के बाद भी शब्द के कुछ अक्षर टाइप करने के लिए रह जाते हों, तो ऊपर बताए गए ढंग से हाशिये पर टाइप करना चाहिए।

अभ्यास २९

पेपर टेबुल (The paper table) पेपर साइड गाइड (Paper Side Guide)
पेपर फिङ्गर्स (Paper Fingers) पेपर रिलीज़ की (Paper Release key)

बेलन के पीछे लोहे का एक चार इंच चौड़ा बेलन के बराबर टिन लगा रहता है, जिस पर बेलन पर से कागज लटका रहता है। इसी के पीछे मशीन के वे कल-पुर्जे हैं जिनके द्वारा मशीन चलती है। यदि यह टिन न लगा होता तो कागज़ उन कल-पुर्जों में धंस जाता और उस पर कालिख और तेल का धब्बा पड़ जाता।

इसी के बाएँ किनारे पर दो इञ्च चौड़ी लोहे की पालिश की हुई एक सफेद पट्टी लगी रहती है जिसे पेपर साइड गाइड (The Paper Side Guide) कहते हैं। इसका बाँया किनारा उठा हुआ होता है। यदि कई कागजों पर कुछ टाइप करना है और उन सब पर एक ही हाशिया रखना है तो इसका उपयोग होता है। इसके बढ़े हुए किनारे से सटा कर बेलन पर कागज चढ़ाया जाता है और तब मारजिनल स्टॉप से हाशिया ठीक किया जाता है। इसके बाद जो दूसरे कागज बेलन पर इसके द्वारा ठीक करके चढ़ाये जायँगे तो सबका हाशिया एक सा होगा।

बेलन पर एक पतले छड़ पर दो या चार छोटी रबर की गड़ारियाँ लगी रहती हैं जिन्हें पेपर फिङ्गर्स (The Paper Fingers) कहते हैं। ये बेलन पर कागज को दबाये रहती हैं, लेकिन कागज़ के बढ़ने में किसी प्रकार की रोक नहीं लगातीं। छड़ सहित इन्हें बेलन पर से हटाया जा सकता है। इन्हें बेलन पर से हटा कर कागज चढ़ाया जाता है। कागज़ चढ़ाने के बाद फिर इसे आगे लाया जाता है, जिससे कागज़ दब जाता है।

बेलन के बायें सिरे पर एक हुक है, जिसके द्वारा बेलन और फीड रौलर्स (Feed Rollers) के बीच से कागज़ को एक दम ढीला किया जाता है। इसे पेपर रिलीज लिवर (The Paper Release Liver) कहते हैं।

बेलन पर कागज़ चढ़ा लेने पर कभी कभी ऐसा होता है कि कागज़ सीधा नहीं रहता। कागज़ चढ़ा लेने के बाद इसे पीछे की ओर ढकेल देने से कागज़ एक दम ढीला हो जाता है और तब कागज़ को जिधर चाहें, उधर हटाया बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार कागज़ के दोनों सिरों को बराबर पकड़ कर फिर इसे आगे खींच लिया जाता है जिससे कागज़ फिर कस जाता है। थम्ब ह्वील (Thumb Wheel) द्वारा फिर कागज़ यथा-स्थान करके टाइप करना आरंभ किया जाता है।

अभ्यास ३०

पिछले अभ्यास में सबसे ऊपर की पंक्ति में नीचे के अक्षरों का अभ्यास हो चुका है, ऊपर के अंक या संख्याएँ बाकी रह गई हैं जिनका अभ्यास इस पाठ में होगा। ऊपर के बटनों में १ से लेकर ९ तक के अंक या संख्याएँ दी गई हैं तथा अनुस्वार के लिये बिन्दी और शून्य। जैसे पिछले अभ्यासों में नीचे पंक्तियों के ऊपर अक्षरों का अभ्यास किया गया है, उसी प्रकार इनका भी अभ्यास किया जायगा, जिसके लिये कई अभ्यास दिये गये हैं। इस बिंदी के लिये भी यही नियम लागू है जो नीचे की बिंदी के लिये है।

अभ्यास ३१

प्रत्येक पाँच बार

अच्छा, ब्रिटेन न सही, ब्रिटिश साम्राज्य के एक प्रधान अंग कनाडा को ही ले लीजिये। वहाँ १७८ भाषाएँ बोली जाती हैं, ५३ जातियाँ हैं और ७९ सम्प्रदाय हैं। और आबादी भी कितनी है, सुनियेगा, कुल ८८ लाख। ८८ लाख में यदि १७८ भाषाएँ हो सकती हैं, तो भारत में अनुपात से लगभग ७ हजार भाषाएँ हों, दो हजार जातियाँ हों, तीन हजार सम्प्रदाय हों तो कनाडा से तुलना ठीक बैठ सकती है। कहिये, क्या हमारे देश में इतनी भाषाएँ, इतनी जातियाँ और इतने सम्प्रदाय हैं ?

अभ्यास ३२

सन् १९०५ के कांग्रेस अधिवेशन के पंडाल पर यूनियन जैक फहराता था। राष्ट्रध्वज के अभाव की कल्पना स्वतंत्र परदेशों में जानेवाले हिन्दू युवकों को शूल की तरह चुभने लगी। सन् १९०६ में उन्होंने एक ध्वजा तैयार की जो कि तिरंगी थी। नीचे हरा, बीच में सफेद और ऊपर गेरुआ रंग था। हरे कपड़े पर बाईं तरफ सूर्य और दाहिनो तरफ चंद्र तथा बीच की सफेद पट्टी पर 'वन्दे मातरम्' लिखा था। ऊपर गेरुए के कपड़े पर कमल के ८ चित्र थे। इसके बाद १९१६ के होम रूल आंदोलन में ९ पट्टियों का एक ध्वज बना। १९२१ बेजवाडा में कांग्रेस कार्य-समिति ने राष्ट्र ध्वज के विषय पर विचार किया और तिरंगा ध्वज बनाया। १९२१ की अहमदाबाद कांग्रेस से कांग्रेस पंडाल पर राष्ट्र ध्वज फहराने लगा। १९३१ में कार्य-समिति ने इस झंडे में फिर परिवर्तन किया। आज की राष्ट्रीय पताका का वही परिवर्तित रूप है।

अभ्यास ३३

जिस प्रकार से इस वक्त हमारे देश में खेती होती है वैसे ही पहले रूस में भी होती थी। पर जब से सरकार मजदूरों और किसानों के हाथ में आई, तब से

पंचायतों की सहायता से काम होने लगा। सन् १९१४ के पहले रूसी जमींदारों के हाथ में ५०० ट्रैक्टर या लोहे की कलें थीं। इससे सिर्फ जमींदारही अपनी खेती करते थे। पर क्रान्ति के बाद से सब-के-सब ट्रैक्टर किसानों के हाथ में आ गये। इनकी संख्या में दिन दिन वृद्धि होने लगी। १९२५ ई० के अन्त में रूस में किसानों के हाथ में १२५०० ट्रैक्टर थे। पंचायती समाजवादी सरकार की ओर से कृषि संबंधी मशीनें और यंत्र खरीदने के लिये १९२३ में ४८७२००० रूबल, १९२४ में २२३२४००० रूबल और १९२५ ई० में २६०६५५७९ रूबल खर्च हुए। इन मशीनों से लाभ यह हुआ कि जिस खेत को जोतने आदि में पहले ८० रूबल खर्च होता था, उसमें अब ५ ही रूबल खर्च होने लगा। पहले की अपेक्षा ट्रैक्टर द्वारा एक दिजियातीन में १५ पूड़ी अधिक उपज होने लगी। खेती की उपज में यह वृद्धि १९२८ के पहले की है। इस समय तक रूस में ५०००० से अधिक कृषि सहकारी विभाग खोले गये। इसमें ७०००००० किसान सदस्य बने। कहीं कहीं तो ६० और ८० प्रति शत किसान सहकार संस्था के सदस्य बन गये थे।

देहातों में खेती के वैज्ञानिक तरीकों को काम में लाने के लिये किसानों में इनके प्रति रुचि पैदा करने के लिये रेडियो और लाउड स्पीकर से काम लिया गया। देहातों में बिजली का प्रचार खूब तेजी से किया गया। १९२६ में बिजली का प्रचार करने के लिये १००००० संस्थाएँ स्थापित हुईं। बजट में खास करके इस काम के लिये २७७'५००० रूबल निकाला गया तथा इसके अतिरिक्त २१७'५७०० रूबल ऊपर से इस काम की मदद के लिये निकाला गया था। १९२५ और १९२६ में कृषि विभाग में ७८ बिजली के स्टेशन बनाये गये थे। सरकार ने बिजली के प्रचार के उद्देश्य से ६०००००० खेतों का कर बिलकुल माफ कर दिया।

अभ्यास ३४

भंग का इस्तेमाल तो अब एटा और मैनपुरी के जिलों में बिल्कुल बंद हो गया है। नशा-निषेध के शुरू होने के साल भर पहले यानी सन् १९३७ और ३८ के पहले तीन महीने अर्थात् अप्रैल, मई और जून सन् १९३७ में इन दो जिलों में ८६५ सेर भंग इस्तेमाल हुई थी। लेकिन नशाबन्दी के साल इन्हीं तीन महीनों में सिर्फ ९ सेर भाँग बिकी। जूलाई सन् १९३८ ई० से दिसम्बर सन् १९३८ ई० तक भंग की बिक्री बिल्कुल नहीं हुई।

दोनों जिलों में चरस और अफीम का भी इस्तेमाल अब नहीं के बराबर है। सन् १९३७ और ३८ के पहले तीन महीने में १४७ सेर चरस इस्तेमाल हुई थी, पर सन् १९३८ और १९३९ के पहले तीन महीनों में सिर्फ ४॥ सेर चरस इस्तेमाल हुई। लेकिन इसी साल के दूसरे तीन महीनों में चरस का इस्तेमाल बिल्कुल कम हो गया यानी सिर्फ १२ छटाँक चरस इस्तेमाल हुई।

इसी तरह जहाँ सन् १९३७ और ३८ ई० के पहले तीन महीनों में उपर्युक्त जिलों में ८१ सेर अफीम बिकी थी, वहाँ सन् १९३८ और ३९ के पहले तीन महीनों में यह मात्रा घटकर ९ सेर रह गई। पहले के मुकाबले में अब अफीम का इस्तेमाल ९१ फी सदी कम हो गया है।

मैनपुरी में अप्रैल १९३७ ई० से दिसम्बर १९३७ ई० तक ४३८२ गैलन शराब बिकी थी। लेकिन अप्रैल सन् १९३८ ई० से दिसम्बर १९३८ ई० के बीच सिर्फ २॥। गैलन शराब बिकी, जिसके माने यह हैं कि नशाबंदी के शुरू होने के बाद शराब की बिक्री ९९ फी सदी कम हो गई।

अभ्यास ३५

किसानों पर बकाया लगान का बोझ क्या लदा और क्यों किसान अपना लगान अदा नहीं कर सके, इसका कारण यह है कि सन् १९२९ में जिस व्यापक मंदी का आविर्भाव हुआ, उसके कारण गल्ले का भाव गिर कर उस हालत में पहुँच गया जो सन् १९०० ई० या उसके पहले था। फलतः किसानों की आय घट गई। दूसरी ओर उसके लगान की दर देखिये। सन् १९०१ ई० बाद से सन् १९३० ई० तक में उस पर ७००००००० रुपये का इजाफा हुआ है। जो लगान सन् १९०१ में १२००००००० था, वह सन् १९३० में १९००००००० हो गया था। हम मानते हैं कि सन् १९३२ ई० में किसानों को छूट दी गई, पर छूट की रकम क्या है। छूट केवल ३५०००००० रुपये की हुई, जब लगान में वृद्धि ७००००००० रुपये की हुई थी। वास्तव में गल्ले का भाव को देखते हुए ७००००००० की छूट होनी चाहिए थी। यही ३५०००००० रुपया जो छूट में नहीं दिया गया, किसान पर बोझ हो गया और वह लगान अदा करने में समर्थ नहीं हुआ। जिस जमाने में किसानों पर ७००००००० का इजाफ़ा हुआ, उस समय जमींदारों की मालगुजारी में केवल ८५०००००० रुपये की वृद्धि हुई। सन् १९०१ में १२००००००० रु० लगान वसूल होता था और जमींदार ६००००००० मालगुजारी देते थे अर्थात् लगान और मालगुजारी का अनुपात ५० प्रति शत था। पर जब लगान १९००००००० हो गया, उस समय भी जमींदार केवल ६७५००००० मालगुजारी अदा करते थे अर्थात् लगान और मालगुजारी का अनुपात ६५ तथा ३५ प्रति शत हो गया।

अभ्यास ३६

व्यापारियों को बीजक या किसी चीज की तालिका बनाने में क्रम से कई संख्याएँ भी देनी पड़ती हैं। इसकी आवश्यकता केवल व्यापारियों को ही नहीं, बल्कि सभी लोगों को पड़ा करती है। पिछले अभ्यास में यह बताया जा चुका है कि किस प्रकार एक सीध में प्रत्येक पंक्ति आरंभ की जाती है। संख्या की तालिका

में भी जहाँ एक के नीचे दूसरी इस क्रम से संख्याएँ दी होती हैं, वहाँ उनमें इकाई एक सीध में रखी जाती है। यदि १००० है और उसके नीचे १०० है तो इसको टाइप करने में यह ध्यान रखना पड़ता है कि एकाई के नीचे एकाई हो, दहाई के नीचे दहाई और सैकड़ा के नीचे सैकड़ा की संख्या इसके लिये मशीन में एक विशेष पुर्जा दिया हुआ है जिसे टेबुलेटर स्केल (Tabulatur scale) कहते हैं। यह मशीन के पिछले भाग में रहता है। मशीन के पीछे ऊपर की तरफ बेलन के समानान्तर एक चौकोर पटरी है, जिस पर बराबर दूरी पर रेती की तरह दाँत कटे हुए हैं। ये दाँत उसी हिसाब से हैं जिस हिसाब से आगे मारजिनल स्केल (Marginal scale) में इञ्च के अंक बने हैं। इस पटरी पर छोटी छोटी पत्तियाँ भी लगी हैं, जिन्हें हटा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाया जा सकता है। बीजक या तालिका टाइप करने में इन्हीं का उपयोग किया जाता है। तालिका में जो सब से बड़ी संख्या होती है, उसके हिसाब के अंत में एक पंक्ति की संख्या उससे आगे दाहिनी तरफ नहीं बढ़ सकती। बाईं तरफ का क्रम स्पेस बार से ठीक किया जाता है। जैसे १००० की संख्या किसी तालिका में सब से बड़ी संख्या है तो एकाई पर एक पत्ती पीछे लगा दी जायगी, जिससे बाद में आनेवाली छोटी संख्याओं की एकाई १००० की एकाई के नीचे होगी। १००० जब सबसे बड़ी संख्या है तो आगे के विवरण यदि कुछ हों, १००० पर आने के लिये भी एक पत्ती लगा दी जाती है। इस प्रकार चार स्थान टाइप करने के लिये दो पत्ती पीछे लगाई जाती हैं और जितनी संख्याएँ होती है, सब इन्हीं दोनों के बीच टाइप करनी पड़ती हैं। पहली पत्ती पर जब बेलन आकर रुक जाता है, तब यदि १००० से छोटी संख्या टाइप करनी है तो जितनी कम संख्या हो, उतने ही पहले पत्ती से स्पेस बार द्वारा छोड़ दिया जाता है। एक पत्ती से दूसरी पत्ती तक के स्थान से बेलन को हटाने के लिये अक्षर-पंक्तियों के बगल में दाहिनी ओर ऊपर की पंक्ति के पास एक बटन का—जिसपर 'लाइन बढ़ाओ' लिखा है—उपयोग होता है। स्पेस बार द्वारा एक ही स्थान छूटता है और जहाँ पर एक ही दफे में कई स्थान छोड़ने हों, वहाँ "लाइन बढ़ाओ" का उपयोग किया जाता है। नीचे दिये हुए अभ्यासों से इसका पूरा ज्ञान हो जायगा।

प्रत्येक की ठीक प्रति लिपि कीजिए

अभ्यास ३७

युक्तप्रान्त की सरकार ने निम्नलिखित जिला और म्युनिसिपल बोर्डों के पुलों और सड़कों को बनाने और मरम्मत करने के लिये सहायता दी है। सहायता में शर्त यह है कि काम ऐसा हो जिससे सरकार को संतोष हो।

आगरा	रु०	२००००)	इलाहाबाद	रु०	५४०००)
अलमोड़ा	रु०	६००००)	आजमगढ़	रु०	६५०००)
बलिया	रु०	६०,०००)	बाँदा	रु०	३५०००)
बाराबंकी	रु०	३५,०००)	बनारस	रु०	४५०००)
बिजनौर	रु०	७००००)	बदायूँ	रु०	४००००)
बरेली	रु०	५०,०००)	बस्ती	रु०	५००००)
एटा	रु०	५०,०००)	इटावा	रु०	२५०००)
फर्रुखाबाद	रु०	६००००)	गढ़वाल	रु०	१०००००)
गाज़ीपुर	रु०	४७०००)	हरदोई	रु०	१५०००)
जौनपुर	रु०	६००००)	खीरी	रु०	३००००)
मेरठ	रु०	१६०००)	मुरादाबाद	रु०	२३०००)
नैनीताल	रु०	५००००)	प्रतापगढ़	रु०	४००००)
पीलीभीत	रु०	२५०००)	रायबरेली	रु०	७५०००)
सहारनपुर	रु०	५५०००)	सीतापुर	रु०	४५०००)
उन्नाव	रु०	६००००)	कुल		१३,५०,०००)

अभ्यास ३८

विभिन्न प्रान्तों से जितने प्रतिनिधि जायँगे, उनकी संख्या तथा राष्ट्रपति के चुनाव में किसको कितने वोट मिले, यह नीचे दिया जाता है।

नाम प्रान्त	संख्या	सुभाष बाबू को मिले वोट	डा० पट्टाभि को मिले वोट
बंगाल	५४४	४०४	७९
युक्त प्रान्त	४९७	२६९	१८५
बिहार	३२३	७०	१९७
पंजाब	२८५	१८२	८६
आंध्र	२५१	२८	१८१
तामिल नाड	२२६	११०	१०२
महाराष्ट्र	१७४	७७	८६
कर्नाटक	१६३	१०६	४१
उत्कल	१३९	४४	९९
महाकोशल	१४७	६७	६८
गुजरात	११५	५	१००
केरल	१०१	८०	१८
आसाम	६०	३४	२२

सीमा प्रान्त	५३	१३	२२
बम्बई	५३	१२	१४
अजमेर	५२	२०	६
सिंध	३९	१३	२१
विदर्भ	३५	११	२१
नागपुर	३१	१२	१७
बरमा	१६	८	६
दिल्ली	१५	१०	५

विशेष बातें

कुछ ऐसे शब्द हैं जिनको टाइप करने में कुछ विशेष ध्यान रखना पड़ता है। एक साधारण शब्द "गर्मी" को ले लीजिये। ी की मात्रा के बाद इसमें ऊपर ॅ लगा हुआ है, लेकिन टाइप करने में म टाइप करके, पहिले ॅ टाइप करके तब ी की मात्रा टाइप की जायगी। इसी प्रकार "नहीं" शब्द में पहले अनुस्वार की बिंदी टाइप करने के, बाद तब ी की मात्रा टाइप की जायगी।

जैसे पहले कहा जा चुका है, कुछ अक्षरों के आधे नहीं हैं। उनके लिये पूरा अक्षर टाइप करके उसके नीचे हलन्त लगा दिया जायगा। हलन्त-चिह्न अक्षर के पहले टाइप किया जायगा।

अभ्यास ३९

जिन कल-पुर्जों के उपयोग करने का ढंग पिछले अभ्यासों में बताया गया है, नीचे दिये हुए अभ्यासों में उनका ठीक ठीक उपयोग करते हुए प्रत्येक अभ्यास की दो शुद्ध प्रतिलिपियाँ टाइप कीजिये।

उन्हीं के काम का यह परिणाम है कि इस विशाल देश में, जहाँ पैंतिस करोड़ नर-नारी रहते हैं, जहाँ ऊँचे-से-ऊँचे पहाड़, घने-से-घने जंगल और बड़े-से-बड़े मरुस्थल हैं, शायद ही कोई पुरुष, स्त्री या बच्चा हो जिसने कि स्वराज्य, गांधी और कांग्रेस ये तीन मंत्र तुल्य शब्द न सुने हों। और शायद ही कोई ग्राम समूह हो जहाँ कम-से-कम कुछ लोगों के सिर पर गांधी टोपी, कुछ के हाथ में कांग्रेसी झंडा और कुछ के मुख में स्वराज्य का नाम न हो।

अभ्यास ४०

दूसरे देशों के साथ व्यापार संबंध करना देश तथा राष्ट्र के लिये बहुत ही आवश्यक है। इससे जो आर्थिक लाभ होता है, वह तो होता ही है, इसके अति-

रिक्त देश की कला का व्यापक प्रचार होता है। कला के रूप में ही हमारी सभ्यता का दिग्दर्शन होता है, क्योंकि जैसी हमारी अभिरुचि होगी, वैसा ही रूप हम अपनी वस्तु-सामग्री को दे सकेंगे। फिर हमें इसी व्यापार के द्वारा देश की बहुत सी बातों का अध्ययन करने का मौका मिलता है।

अभ्यास ४१

समाज में निरक्षर लोगों का अस्तित्व राष्ट्र के लिये एक कलंक स्वरूप है। इस पाप को जिस दिन हम धो सकेंगे और हमारे यहाँ एक भी व्यक्ति निरक्षर न रह जायगा, उस दिन हमारे लिये उन्नति के सभी क्षेत्र खुले होंगे और हमारा राष्ट्र एक उन्नत राष्ट्र होगा। आज कांग्रेस सरकार ने निरक्षरता दूर करने के लिये कार्य आरंभ किया है। उसकी यह कोशिश है कि देश का कोई व्यक्ति निरक्षर न रह जाय। कार्य आरम्भ हो गया है। देखना है कि ईश्वर हमें वह दिन कब दिखलाता है जब हमारे देश से निरक्षरता दूर हो जायगी।

अभ्यास ४२

जिस भगवान ने भगवानदास को मनन और दर्शन के शान्त वातावरण से निकाल कर राजनीति के तीव्र आवर्त में डाल दिया, हमें स्वराज्य के पदार्थ को समझ लेने की आवश्यकता बताने को प्रेरित किया, जिसने चित्तरंजन को काव्य के आनन्दमय क्षेत्र से निकाल कर कठोर परिस्थिति में देश का नेतृत्व ग्रहण करने को बाध्य किया, जिसने गणित और इतिहास के प्रेमी और ज्ञाता तिलक से आदर्श और व्यवहार का सुन्दर संयोग करा के निद्रित भारत को अपने जन्मसिद्ध अधिकार की पुण्य प्रभाती सुनवाई, जिसने त्याग और तपस्या की मूर्ति कर्मचंद को वस्तुतः कठोर कर्मक्षेत्र में लाकर डान्डी की अद्भुत यात्रा कराई, वह शक्ति यहीं शान्त नहीं हो जायगी, वरंच जिस लक्ष्य का आज आभास मात्र करा चुकी है, उसका लक्षण भी स्पष्ट करा ही देगी।

अभ्यास ४३

ईजिप्ट के पिरामिड, बैबीलोन के हैंगिंग गार्डेन अर्थात् झूलते बागीचे, एफिसस में डियाना का मंदिर, फिडियस की विशाल मूर्ति, वायिरस का महल जिसकी पत्थर के दीवारों पर सोना मढ़ा हुआ है और रोडेस के कोलोसस को लोग "संसार की सात अद्भुत वस्तुएँ" मानते हैं। इनमें ईजिप्ट के पिरामिड को छोड़कर सभी नष्टप्राय हो गये हैं। कुछ तो प्रकृति द्वारा और कुछ मानव धन लोलुपता के कारण नष्ट हुए हैं। अब कुछ लोग चीन की लम्बी दीवार को तथा भारत के ताजमहल को भी संसार की सात अद्भुत वस्तुओं में गिनते हैं।

अभ्यास ४४

हमारे विचार से कांग्रेस देश की सब से अधिक शक्तिशालिनी और प्रतिनिधि संस्था है। उसका इतिहास उच्च सेवा और त्याग का अटूट इतिहास है। अपने जन्मकाल से ही उसने जितने तूफानों का सामना किया है, उतने का सामना और किसी संस्था को नहीं करना पड़ा। उसके आदेश से लोगों ने उतना त्याग किया है जिस पर देश गर्व कर सकता है।

अभ्यास ४५

व्यापार में विज्ञापन का बहुत बड़ा स्थान है। योरप आदि देशों में तो विज्ञापन को सुन्दर और आकर्षक बनाने के लिये ही कुछ लोग इस विषय का अध्ययन करते हैं और बाद में इसी के द्वारा जीविकोपार्जन करते हैं। लेकिन हमारे देश में विज्ञापन को जनता केवल ठगने का उपाय ही समझती है। इसका एक प्रधान कारण है। यहाँ के व्यापारी विज्ञापन में बहुत चढ़ा-बढ़ा कर वर्णन करते हैं और माल उसके अनुसार ठीक नहीं होता। इसलिये जनता विज्ञापन के प्रति न तो आकर्षित होती है और न उसपर विश्वास करती है। यह दूसरी बात है कि वे सुन्दर और आकर्षक विज्ञापन से थोड़ी देर के लिये मनोरंजन कर लें। विदेशों में ऐसा नहीं होता। वहाँ विज्ञापन में कहे अनुसार ही माल भी दिया जाता है।

अभ्यास ४६

परिस्थिति के अनुसार जैसी उनकी मनोवृत्ति थी और जैसा उनका कार्यक्षेत्र संकुचित था, उसमें उनके लिये यह ठीक ही था कि वे पढ़े-लिखे हिंदुस्तानियों के लिये ऊँची ऊँची सरकारी नौकरियों की माँग पेश करें। किसी-न-किसी रूप में इसी समस्या पर उनका ध्यान लगा रहता था, क्योंकि उनका यह विश्वास था कि सरकारी नौकरियों में हिंदुस्तानियों का घुसना ही स्वराज्य है और इसी से हम शासन की कला सीख सकेंगे और उन राजनीतिक जिम्मेदारियों को वहन करने का हमें अभ्यास हो सकेगा जो कि एक-न-एक दिन हम पर अवश्य ही आ पड़ेंगी।

अभ्यास ४७

गाँववालों को एक बहुत बड़ी कठिनाई इस बात की पड़ती है कि यदि वे अपनी कृषि में उन्नति करना चाहते हैं या कोई नया धंधा शुरू करना चाहते हैं, तो वे पूंजी के अभाव में ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं। इसलिये इस बात की बहुत बड़ी आवश्यकता है कि जो लोग उन्नत कृषि या उन्नत उद्योगों द्वारा अपनी दशा सुधारना चाहते हों, उन्हें हर तरह की आर्थिक सुविधा दी जाय। सहकारिता विभाग के सहयोग से संयुक्त प्रांतीय ग्राम-सुधार विभाग किसानों की कृषि और उद्योग

संबंधी विभिन्न कार्यों में आर्थिक सहायता देने के लिये सहकारी ऋण सभाएँ कायम कर रहा है। इन सभाओं से किसानों को कम सूद पर रुपया मिल सकेगा और उन्हें क्रूर महाजनों के अत्याचारों का भी सामना न करना पड़ेगा।

अभ्यास ४८

समाज में सच पूछिये तो मजदूरों का कोई स्थान नहीं है। यों कहने को तो एक जगह बसने से भाईचारे का नाता हो ही जाता है, किंतु वहीं पर जब एक बच्चा दूध-मिश्री में बोरी हुई रोटी खाता है और दूसरा खड़ा खड़ा टुकुर टुकुर उसका मुँह ताकता है, बिलखता रहता है, तब उस भाईचारे का असली अर्थ समझ में आता है। वहाँ यदि "नैतिकता" के नाम की चीज रहती है तो मुट्ठी भर सुविधा प्राप्त धनिकों का रचा हुआ ढोंग और आडम्बर मात्र। इन खेतिहर मजदूरों की बहू-बेटियाँ खुले-आम किसानों के खेतों, खलिहानों एवं जमींदारों के घर हर प्रकार का काम करती हैं। वहाँ इनके साथ हमारे सभ्य कहलानेवाले अमीर-उमरा का भद्दा मज़ाक कर देना एक मामूली बात है। यह तो उनके आमोद-प्रमोद एवं हँसी-मजाक का मानों जायज़ विषय समझा जाता है।

अभ्यास ४९

शीर्षक इत्यादि इस प्रकार टाइप करना चाहिए कि जिससे वे कागज़ के बीचों-बीच हों। कागज़ के बीच में टाइप करने के लिये पहले यह देखना चाहिए कि कागज़ की चौड़ाई कितनी है। यह आसानी से आगे लगे हुए स्केल द्वारा देखी जा सकती है। इसके बाद यह देखना चाहिए कि शीर्षक कितने अक्षर-स्थान का है। यदि कागज़ की चौड़ाई ८० डिग्री है और शीर्षक १० अक्षर-स्थान का है तो ८० के आधे ४० में से शीर्षक के आधे स्थान अर्थात् ५ घटा लेना चाहिए। ४० में से ५ घटाने पर ३५ स्थान मिलेगा। यदि ३५ संख्या बाईं तरफ से छोड़ कर वह शीर्षक १० अक्षरों का टाइप किया जायगा तो वह कागज़ के बीच में होगा।

कागज़ के बीच में कुछ टाइप करने के लिये इस हिसाब का खयाल रखना चाहिए। कागज़ की चौड़ाई की आधी संख्या में से शीर्षक की आधी संख्या घटा कर जो संख्या मिले, उतना ही स्थान बाईं तरफ छोड़ कर टाइप करने से कागज़ के बीच में टाइप होगा।

निम्नलिखित अभ्यासों में शीर्षक कागज़ के बीच में टाइप किया जायगा।

स्वर्ण जयंती पर श्री जवाहिरलाल जी का संदेश

श्री जवाहिरलाल जी ने बेडेनवाइलर जर्मनी से कॉंग्रेस स्वर्ण जयंती के अवसर पर स्वदेश-वासियों को निम्नलिखित आशय का संदेश भेजा है।

इस समय बाहर बरफ पड़ रही है। प्रकृति सफेदी से ढक गई है और चमक

रही है। बरफ़ के गोले हवा में उड़ रहे हैं और चुपचाप गिर कर हर एक चीज़ को जाड़े का सुंदर परिधान पहना रहे हैं। हरे-भरे पेड़ पौधे गोलों को पकड़ने के लिये अपनी टहनियाँ रूपी बाहें फैला रहे हैं और जो बेचारे कल तक ठूठ बने उदास खड़े थे, वे भी इस श्वेत परिधान को बड़े चाव से पहन कर खिलौना से बन रहे हैं तथा उनकी टहनियाँ बारीक जालियों की शोभा प्राप्त कर रही हैं। बड़ा ही मनोरम दृश्य है। देख कर मन मुग्ध हो जाता है।

पर यद्यपि यहाँ बेडेनवाइलर में काले जंगल के किनारे बैठा हूँ जहाँ से सुंदर क्षितिज पर राइन नदी और फ्रांस की सीमा की रेखा दिखाई दे रही है, मेरा मन समुद्रों और महाद्वीपों को लांघ कर जननी जन्मभूमि की गोद में विचर रहा है। काँग्रेस की स्वर्ण जयंती के इस अवसर पर खास कर मेरा मन उस महान् राष्ट्रीय संस्था की ओर जा रहा है। मैं सोच रहा हूँ, काँग्रेस ने भारत के लिये तथा हम में से हर एक के लिये क्या किया। भूतकाल में वह क्या थी, अब क्या है, भविष्य में क्या हो सकती है।

एक राष्ट्र के जीवन में ५० वर्ष कुछ बड़ी चीज नहीं। भारत के सहस्रों वर्ष व्यापी भूतकाल में एक क्षण के समान, पर एक व्यक्ति के जीवन में ५० वर्ष काफी लम्बा समय है, जिसके अंदर प्रयत्नों और सफलताओं की लम्बी माला गूँथी जा सकती है। इन ५० वर्षों में एक युग बीत गया, एक दुनियाँ बदल गई, सर्वत्र महान् परिवर्त्तन हो गये।

पर इस काल में हमारी कारगुज़ारी क्या रही। जीवन की वेगवती धारा के साथ क्या हम आगे बढ़ते रहे और निरंतर बदलती हुई परिस्थिति के अनुकूल बनने का यत्न करते रहे। अथवा किनारे के पानी में जो स्थिर रहता और बहुत कम बदलता है, हमारे मन और उत्साह को शिथिल कर देनेवाली सिवार में उलझे पड़े रहे। असली परिवर्त्तन और विकास मन तथा भाव का ही है और शेष सभी बातें तो इन्हीं का अनुगमन करती हैं।

ईश्वर करे वह अपने इस लक्ष्य को कभी न भूले और उन करोड़ों भारतवासियों को पहले की अपेक्षा भी अधिक सच्ची प्रतिनिधि तथा आवाज़ बने जो दिन भर बैल की तरह जुते रहकर भी भर पेट अन्न को तरस रहे हैं। और उन राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक बेड़ियों को काट फेंकने का यत्न करें जो उनको अपनी स्वाभाविक ऊँचाई तक उठने और उनके मनुष्यत्व को पूर्ण विकसित नहीं होने दे रही है।

अभ्यास ५०

पूँजीवाद की मुख्य विशेषता

पूँजीवादी व्यवस्था में सभी पैदावार बाजार के लिये उत्पन्न की जाती है,

अतः वह सब जिन्स होती है। हर एक कारखाना या मिल साधारण अवस्था में एक विशेष पैदावार की उत्पत्ति करता है और यह समझना सुगम है कि उत्पादक अपने प्रयोग के लिये ही उनको उत्पन्न नहीं करता। जब एक कारखाने का मालिक अपनी मिल में कपड़े तैयार करता है तो वह उन सब कपड़ों को खुद इस्तेमाल नहीं करता। पूँजीवाद में उत्पन्न की जानेवाली किसी वस्तु पर यदि हम तनिक विचार करें, तो उसे बाज़ार के लिये ही उत्पन्न की जानेवाली पावेंगे। चाहे वह वस्तु बटन, किताब, सूई, शक्कर, मशीन, छाता, जूता, अन्न या कुछ भी हो। जिन्स संविधान में अवश्य वैयक्तिक मिल्कियत सन्निहित है। स्वतन्त्र दस्तकार, जो जिन्स पैदा करता है, अपने छोटे कारख़ाने या औज़ारों का मालिक होता है। जहाँ वैयक्तिक मिल्कियत या जिन्स की उत्पत्ति विद्यमान होगी, वहाँ ग्राहकों के लिये कलह या बेचनेवालों के लिये प्रतिद्वन्द्विता होगी। फैक्टरियों के मालिकों और बड़े बड़े पूँजीदारों के पूर्व जब स्वतंत्र दस्तकार वस्तुओं को उत्पन्न करते थे, तो उनमें भी ग्राहकों के लिये कलह रहा करती थी। उनमें से जो सब से बली और सब से अधिक योग्य होता था, जिसके पास सब से अच्छे औज़ार होते थे और सबसे जो अधिक सयाना होता था और विशेष कर जिसके पास कुछ अधिक द्रव्य (धन) होता था, वही जीतता था और अपने प्रतिद्वन्द्वियों को मटिया-मेट कर देता था। इस प्रकार उस क्षुद्र मिल्कियत की व्यवस्था और जिंस संविधान में, जो उसपर स्थित थी, बड़ी मात्रा की मिल्कियत के परमाणु मौजूद थे, जिसका अर्थ अनेकों का सर्वनाश हुआ।

जिन्स संविधान का केवल अस्तित्व ही पूँजीवाद की स्थापना के लिये पर्याप्त नहीं होता। पूँजीदारों से शून्य संविधान का अस्तित्व हो सकता है। वह आर्थिक संविधान जिसके उत्पादक केवल दस्तकार हों, बाज़ार के लिये वस्तुएँ उत्पन्न करते हैं, बेचते हैं। इस प्रकार वे वस्तुएँ जिन्स खरीद-विक्री की वस्तुएँ होती हैं। और कुल उत्पादन जिन्स उत्पादन होता है। ऐसा होने पर भी यह पूँजीदार उत्पादन नहीं है। यह शुद्ध जिन्स उत्पादन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। शुद्ध जिन्स उत्पादन को पूँजीदार उत्पादन में परिवर्त्तित करने के लिये एक ओर यह आवश्यक है कि उत्पत्तिके साधन औज़ार, मशीनरी, इमारतें, भूमि आदि थोड़े से सम्पत्तिशाली पूँजीदारों की वैयक्तिक मिल्कियत हो जायँ और दूसरी ओर यह आवश्यक है कि स्वतंत्र दस्तकारों और किसानों का नाश हो जाय और उनका परिवर्त्तन श्रमिकों के रूप में हो जाय।

अभ्यास ५१

स्वतंत्रता के पथ पर

अपने जीवन में मैंने प्रथम बार अनुभव किया कि माँ वसुन्धरा की गोद कितनी

सुखकर है और उसके नीले लहराते अंचल में कितना प्यार भरा है। मैं सीतापुर जेल की सात फुट चौड़ी कोठरी में अपना सूना, एकाकी तथा निर्वासित जीवन बिता रहा था। उस निपट अंधकार में कभी दो चार भूली-भटकी सूरज की किरणें लोहे के सीकचों से विदीर्ण होकर मेरी अन्धकारमयी दुनिया में प्रवेश कर उसको आलोकित करने का प्रयत्न करती थीं। मैंने कई बार लोहे के सीकचों से बाहर झाँका। पर वार्डर की खाकी वरदी और उसके चमकते बिल्ले के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया। यदि दृष्टि दूर से भी दूर डालता तो जेल की दीवार पर जाकर रुक जाती। मेरी दुनिया का यही क्षितिज था। उस समय मेरे दर्द भरे दिल ने रो रोकर करुण स्वर में गाया—

उरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ताँ होगा।
जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आस्माँ होगा॥

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये हम अङ्गरेज़ों से मरते दम तक लड़ेंगे, लेकिन उन्हें गाली देने के बजाय यह अच्छा होगा कि हम उनके देशप्रेम तथा उच्च चरित्र की ओर दृष्टि डालें और उनके सद्गुणों को अपनाने का प्रयत्न करें। ब्रिटिश साम्राज्य केवल कल्पना से एक दिन में नहीं बन गया। इसकी नींव अनेक स्वदेशप्रेमी तथा स्वार्थ-त्यागी वीरों की वज्र तुल्य अस्थियों पर डाली गई है। कहा जाता है और सच कहा जाता है कि प्रत्येक अङ्गरेज़ इङ्गलैंड के लिये जीता है और उसी के लिये मरता है। अपने सब कामों को वह इङ्गलैंड को अर्पण करता है। ब्रिटिश पार्लिमेण्ट के राजनितिक दल आपस में लड़ते हैं, पर ब्रिटेन के हित के लिये ब्रिटिश लारेंस खानाबदोश फिरते हैं, रेगिस्तानों की खाक छानते हैं और जंगलों में भटकते फिरते हैं। किस लिये? उनका एक ही लक्ष्य है—इंगलैण्ड की राष्ट्रीय पताका की रक्षा। अंगरेज़ एक ही धर्म को पहचानते हैं। वह है कर्त्तव्य। उनके लिये जन्म और मृत्यु एक दूसरे के रूपान्तर मात्र हैं। स्वर्गीय लिविंगस्टन् अभी जिन्दा है। अफ़रीका की मरुभूमि में वह पानी की एक बूंद के लिये तरसा। आकाश में उड़ते हुए बादलों से एक रोज दो चार बूँदें बरस पड़ीं। रूमाल फैलाकर उसने वह अमूल्य बूँदें समेटीं और इस तरह अप्राप्य स्वाति बूँदों से अपना सूखा कलेजा कुछ तर किया। ऐसी भयंकर यातनाओं को भी सहकर वह यूनियन जैक लेकर अफ्रिका में घूमा।

ब्रिटेन में एक नहीं, सैकड़ों, हजारों नेलसन हुए हैं। इसी लिये तो अंगरेज जाति आज माथा उठाकर गर्व से कहती है—रूल। रूल। ब्रिटानियाँ रूलस दि वेव्स। अर्थात् शासन करो, शासन करो। ब्रिटानिया समुद्र की तरङ्गों पर भी शासन करती है।

अभ्यास ५२

नई आर्थिक नीति

बोलशेविक दल में और भी कितने ही बड़े बड़े दिमागवाले आदमी थे, बुखारिन, त्रोत्सकी प्रमुख थे। इन दोनों को भी बोलशेविक दल के नेता बनने की चाह थीं और त्रोत्सकी तो उसके लिये अधीर हो रहा था। लेकिन पोलित ब्यूरो, साम्यवादी पार्टी और जनता ने इतने जबरदस्त बहुमत से स्तालिन को अपना नेता चुना था कि वह कुछ न बोल सकते थे। हाँ, आगे देश के लिये क्या होना चाहिये, यह विषय सामने आया। उस वक्त नई अर्थ नीति का जमाना था, गृहयुद्ध और विदेशियों के सशस्त्र विरोध के कारण रूस के रहे सहे उद्योग-धन्धे तथा रेलें टूट-फूट गयी थीं। १९१३ में जार के शासन के समय से अब अवस्था और बुरी हो गई थी। तीन-चार बरस की लगातार लड़ाई के कारण जहाँ लाखों आदमी मारे गये थे, वहाँ करोड़ों एकड़ जमीन भी परती पड़ गई थी। अकाल पड़ रहा था। ऐसे समय लेनिन ने नयी अर्थ नीति की घोषणा की थी, जिसके अनुसार छोटे छोटे व्यवसाय और वाणिज्य में पूँजीवाद को सह्य माना गया। उस समय सारी शक्ति देश के उद्योग-धन्धों को पुनः संगठित करने में लगी हुई थी। स्तालिन के प्रमुख बनने पर उसके सामने काम था शीघ्र-से-शीघ्र सोवियट संघ के उद्योग-धन्धों को सुदृढ़ कर आगे बढ़ाना, देश को आर्थिक और सैनिक दोनों शक्तियों से मजबूत करना। उसने यह कहते हुए अपना प्रोग्राम रखा कि पूँजीवादी देश हमारे अस्तित्व को फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते। अगर वे एक राय होकर अपने शस्त्र बल से हमें नष्ट कर देने को तैयार नहीं हुए, तो उसका कारण था उनकी पारस्परिक अनबन। सोवियट शासन के आरम्भिक जीवन में, जब कि वह बहुत निर्बल था उन्होंने रूस से साम्यवादी शासन को मिटा नहीं दिया। इसका उन्हें हमेशा बहुत अफसोस रहेगा। क्योंकि वह जानते हैं कि उनके अस्तित्व का सबसे बड़ा शत्रु दुनियाँ के मजदूरों और किसानों को आशा और उत्साह प्रदान करने वाला भी वही सोवियट शासन है। एक बड़ी लड़ाई में करोड़ों की जन-धन हानि सह कर पूँजीवादी देश कुछ निर्बल हो थकावट दूर कर रहे हैं। साथ ही युद्ध की लूटों को संभालने में लगे हैं और इसीलिये वह साम्यवादि शासन की तरफ झूठी खबरों के कागजी गोलों को फेंक कर सन्तोष कर रहे हैं। लेकिन यह अवस्था बहुत दिनों तक नहीं रहेगी। इस बीच में हमें अपने देश को मज़बूत कर लेना चाहिये, हमें अपने शत्रुओं से मुकाबिला करने और अपने देशवासियों को सुखी और सन्तुष्ट बनाने के लिये सेना और उद्योग-धन्धों को मज़बूत करना है और इसके लिये समय बहुत कम है। हमारी गति तीव्र होनी चाहिये।

अभ्यास ५२

शक्ति की उपासना

विजया दशमी शक्ति की उपासना का त्यौहार है। कहते हैं, इसी दिन विख्यात भारतीय वीरांगना दुर्गा देवी ने राक्षस प्रकृति महिषाकार अनार्य राजा का मान-मर्दन किया था जिसे हमारे पोंगापन्थी पौराणिक भाई महिषासुर के नाम से पुकारते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचंद्र ने विजया के दिन ही लंकेश्वर रावण पर चढ़ाई करने के लिये प्रस्थान किया था। विजया दशमी का त्यौहार इस बात का स्मारक है कि प्राचीन समय में आर्य सभ्यता का विजय-प्रवेश दाक्षिणात्य अनार्य देशों में हुआ था। अर्थात् अनार्यों को आर्य-धर्म में दीक्षित करने के लिये तथा भारत में आर्य-सभ्यता का प्रचार करने के लिये आर्यों ने इसी दिन को उनपर चढ़ाई की थी। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से नरेशोंने दूसरे नरेशों पर इसी विजया को ही आक्रमण किया था इसी लिये विजया शक्ति की उपासना का प्रधान त्यौहार माना गया है। आज का ही दिन है जब कि अखिल भारतवर्ष सामूहिक रूप से शक्ति की आराधना में लीन हो जाता है। इतिहास हमें बताता है कि प्राचीन आर्यगण शक्ति की महिमा से पूर्ण रूप से परिचित थे इसलिये व्यवहारिक रूप से शक्ति की उपासना किया करते थे। उन्होंने प्रकृति के संहारक समूह को अच्छी तरह पहचाना था। वे वर्तमान समय के हिंदुओं की तरह पत्थर या मिट्टी की देवी की मूर्ति के सामने निरीह पशुओंकी हत्या करके शक्ति की उपासना नहीं किया करते थे। उन्होंने प्रकृति की संहारिणी मूर्ति को काल्पनिक रूप देकर उसका एक विग्रह अवश्य बना लिया था, परन्तु उसी को शक्ति समझ कर और उसके चरणों पर फूल-अच्छत् चढ़ाकर ही शक्तिशाली बनने की मूर्खता नहीं किया करते थे। बल्कि उस दिन वह किसी ऐसे कार्य का अनुष्ठान करते थे जिससे शक्ति का संचय हो और वे शक्तिमान हो सकें। आज हजारों वर्षों की राजनीतिक गुलामी धार्मिक अंधविश्वास और गुरुण्य के जाल में शक्ति की आराधना ने उस महत्वपूर्ण आदर्श को नष्ट कर दिया। राष्ट्रीयता की कमर तोड़ दी और भारतीय राष्ट्र को सब प्रकार से शक्ति-हीन बना डाला। आज हमारी शक्ति-पूजा हिजड़ों के अभिनय की सी मालूम होती है। देवी की मूर्त्ति के सामने बकरों की बलि चढ़ा कर शक्तिमान बनने की आशा रखने वालों में शायद ही ऐसा कोई होगा जो समय पड़ने पर अपनी आत्मरक्षा कर सकता हो। जो लोग आज शक्ति के उपासक बने फिरते हैं उनकी स्त्रियों को गुंडे उनकी बगल से उठा कर चंपत हो जाते हैं परंतु उनसे किया धरा कुछ नहीं होता। इन शक्ति उपासना की डींग हाँकने वालों में बहुत कम ऐसे मिलेंगे जो छुरी तो क्या सुई चुभाने की पीड़ा भी बिना उफ किये बर्दास्त कर सकते हों।

शक्ति के उपासक थे, भगवान रामचंद्र, भगवान कृष्ण और वे अनेक वीर जिन्होंने अपने दुर्दान्त शत्रुओं को पराजित कर शक्ति की उपासना का क्रियात्मक आदर्श उपस्थित कर दिया है और जिनके नाम की माला आज घर घर में जपी जा रही है। शक्ति की क्रियात्मक उपासना के क्षीण होते ही आर्य-वीरता का भी अंत हो गया। शक्ति की उपासना का नाश किया था बौद्ध और जैन धर्म ने। फलतः दोनों ने अपने को क्षीण बना कर देश को भी निर्वीज सा कर दिया। बौद्धमत के अशोक के पश्चात् मौर्य राज्य के नाश का कारण भी शक्ति उपासना से पराङ्मुख होना ही है। मि० हैवेल ने भी इस बात की पुष्टि की है कि बौद्ध धर्म में सामाजिक तथा राजनीतिक विषय संबंधी इतनी कमजोरियाँ थीं कि अशोक के शासन के बाद ही मौर्य साम्राज्य फौरन टुकड़े टुकड़े हो गया।

अहिंसावाद और पारलौकिक मनोवृत्ति ने भी भारतीय शक्ति को एक प्रकार से जर्जरित कर दिया। यद्यपि जगद्गुरु शंकराचार्य ने बौद्धों को खदेड़ने में काफी सफलता प्राप्त की थी किंतु उनका आभ्यन्तरिक रूप किसी-न-किसी रूप में बना ही रहा। आखिर यह जाता ही कैसे जब कि एक अर्से से बौद्ध धर्म के अहिंसावाद ने सर्वसाधारण में घर कर लिया था। बौद्ध धर्म न रहा पर उसका एक विकृत रूप सन्यास, वैराग्य और उदासियों के रूप में प्रकट हुआ। मोक्ष और निर्वाण के लिये लोग बौखला उठे। संसार की असारता का यह राग अलापा गया कि समाज संक्षरण की चिंता ही न रह गई। मतमतांतर बरसाती कीड़ों की तरह बढ़ने लगे। फिर एक दूसरे में भेदभाव होना स्वाभाविक था ही। इस संसार को असार बता कर दूसरे संसार की चिन्ता में निमग्न रहने वाले साधु स्वयं तो संसारसे पराङ्मुख हुए ही परन्तु अपने साथ अपना एक सम्प्रदाय भी कायम करते गये जिस के अनुयायी भी वही 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' की डफली पीटने लगे। परिणामतः वीरता दुम दबा कर हिन्दू जाति से प्रयाण कर गई और क्लैव्य ने भारत पर एक छत्र राज्य करना आरम्भ कर दिया और मुसलमानों को देश में घुसने तथा आक्रमण करने का मौका दिया। हैवेल साहब भी हमारे कथन की पूर्ति में कहते हैं, "बौद्ध धर्म ने अपने विशालपति-संघ की बदौलत देश से मर्दानगी को दूर भगाने में लाजवाब काम किया। अरबों को सिन्ध पर विजय प्राप्त करने में आसानी इसी लिये हुई कि हजारों मर्द मठों में आराम से जिन्दगी बिताने लग गये थे। मर्दानगी बेचारी को वे पास तक नहीं फटकने देते थे।

अभ्यास ५४

उद्योग-धंधों की उन्नति क्यों नहीं होती

एक समय था जब भारत का दर्शन और जीवन देखने का उसका दृष्टि-बिंदु भारत के लिये ही नहीं बल्कि दुनियाँ के लिये उपयोगी था, अन्यथा भारत के बाहर

श्याम, चीन, जावा, जापान आदि में भारतीय बौद्ध-धर्म न फैलता। मगर अब वह जमाना चला गया। आज कल विज्ञान का युग है, मशीनों का जमाना है और उद्योग-धंधों का बोलबाला है। जो देश उद्योग-धंधों में बढ़े हुए हैं वे ही देश छोटे होने पर भी बड़े बड़े विशाल देशों पर शासन कर रहे हैं।

इंगलैण्ड, जर्मनी, इटली, अमेरिका, फ्रांस किसी भी देश को ले लीजिये, आप देखेंगे कि वहाँ की समृद्धि का मुख्य स्रोत उद्योग-धंधे ही हैं। और तो और साम्य-वादी रूस भी नवीन नीति और नियमों का पोषक हो कर भी उद्योग धंधों के विकास के महत्व को न भुला सका। जैसे ही रूस की स्थिति में शान्ति विराजी वहाँ के नेताओंने पंच वर्षीय योजना बना कर देश के उद्योग-धंधों की स्थापना, विकास और वृद्धि प्रारम्भ की। यूरोप और एशिया का प्रत्येक जागृत देश अपने यहाँ के उद्योग-धंधों को प्रगतिशील बनाने में लगा हुआ है।

किंतु हमारी क्या हालत है? भारत जैसे विशाल देश में जहाँ कच्चे माल की प्रचुरता है मजदूरी सस्ती है, पूँजी काफी है, वहाँ कुछ उद्योग-धंधे जैसे मोटर आदि तो हैं ही नहीं, जो कुछ हैं वे भी देश की आवश्यकता की पूर्ति के लिये पर्याप्त नहीं हैं। इस संबंध में कुछ लोगों की यह भी भ्रांत धारणा है कि भारत तो कृषि-प्रधान देश है, यह उद्योग-प्रधान देश नहीं हो सकता। लेकिन इसमें तत्त्व कुछ भी नहीं है। क्योंकि उद्योग-प्रधान देश होने की सम्पूर्ण आवश्यकताएँ और संभावनाएँ भारत में वर्तमान हैं। भारत प्रतिवर्ष मशीनों और मशीन से बनी चीजों के लिये करोड़ों रुपये खर्च करता है, भारतीय जन-समाज मशीन की बनी चीजों की कद्र करता है। ऐसी अवस्था में यह कहना बिल्कुल युक्तियुक्त है कि भारत को औद्योगिक देश बनना है।

ऊपर कहा जा चुका है कि हमारे यहाँ जो उद्योग व्यवसाय हैं उनमें अधिकांश बाल्यावस्था या अपूर्णावस्था में हैं, यही कारण है कि वे अन्य देशों के मुकाबिले में देश के लिये उपयोगी नहीं हो सकते और उनमें काम करने वाले अन्य देशों से बदतर हालत में हैं। किंतु हमें प्रयत्न करना चाहिये कि हम इस अवस्था का शीघ्र अंत कर दें।

इस अवस्था का अन्त उद्योग-धंधों को पूर्ण सफल बनाने से होगा। अधिक से अधिक उत्पादन बढ़ाने से होगा, ताकि हम आज-कल की भाँति विदेशों के आसरे न रहें। हम अभी तक कच्चा माल बाहर भेजते हैं और बना हुआ माल बाहर से मँगाते हैं। हमारे उद्योग-धंधे अभी तक इस हालत में नहीं पहुँचे कि वे हमारी माँग को पूरा कर सकें। कच्चा माल, श्रम तथा धन रहने पर भी हमारे उद्योग-धंधों का विकाश हमारी आवश्यकता के अनुसार नहीं हो रहा है, यह एक ऐसी समस्या है, जिस पर हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिये।

भारत में धन, श्रम, कच्चा माल तो है, मगर? मगर यह है कि उस धन को एकत्र कर उद्योग-धंधों में लगाने का जो आधुनिक साधन है, उसके सम्बन्ध में हम बड़े

लापरवाह हैं। धन बैंकिंग या पूँजी लगाने वाले दूसरे संघटनों से एकत्र होता है। किन्तु क्या हमारा बैंकिंग का कारबार इतना विकसित हो गया है कि भारत के प्रत्येक गाँव में उसकी शाखा हो गई हो और प्रत्येक भारतीय देश के लिये, अपने लिये कुछ न कुछ बचाता हो ? भारत, ब्रिटेन से बड़ा, बहुत बड़ा देश है, किन्तु यहाँ बैंकों की शाखाएँ इंगलैंड के बैंकों की शाखाओं से बहुत ही कम दशांश ही हैं। दूसरी बात यह भी है कि बैंक जो धन संग्रह करते हैं वह भी उद्योगीकरण के लिये व्यवहृत नहीं होता। हमारे बैंक औद्योगिक नहीं व्यावसायिक हैं, ये अपने धन को नये उद्योग-धन्धे खोलने में नहीं लगाते, क्योंकि ये बैंक औद्योगिक धरातल पर काम नहीं करते। जरा जर्मनी और जापान को देखिये, इन दोनों देशों ने जो औद्योगिक उन्नति की है उसमें उन देशों के औद्योगिक बैंकों का प्रधान भाग है। अतएव इस तरह के बैंकों का भारत में न होना, हमारी औद्योगिक अवनति का एक कारण है।

भारत की जनसंख्या विशाल है, यहाँ श्रमिकों की कमी नहीं है, वे मेहनती और चतुर भी हैं किन्तु अशिक्षित हैं। जिन मेहनती आदमियों को शिक्षा मिली वे क्लर्क हो गये। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली क्लर्क पैदा करने के लिये चलाई गई थी और उसने क्लर्क जरूरत से ज्यादा पैदा कर दिये। किन्तु चतुर मशीनमैन, होशियार कारीगरों की हमारी जरूरत उससे पूरी नहीं हो सकती। बड़े दुःख का विषय है ! एक तो देश का अधिकांश भाग अशिक्षित है, और जिन्हें शिक्षा मिली भी वह भी गलत। इसका परिणाम स्वभावतः ही यह हुआ कि हमारे मजदूर मेहनती होने पर भी अपने कार्य में उतने निपुण नहीं हैं जितने दूसरे देशों के! यह बात सच है कि इस अनिपुणता के लिये मुख्यतः मजदूर दोषी नहीं हैं, किन्तु यह भी सच है कि मजदूरों की इस अवस्था के कारण ही हमारे उद्योग-धन्धों का उत्पादन इतना कम है।

हमारे उद्योग-कर्त्ताओं, कारखानेवालों की अवस्था देखिये। यहाँ के अधिकांश कल कारखाने एक आदमी के बूते और धन पर चलते हैं। मालिक धन और श्रम को एक साथ लगा कर मशीन का तमाशा देखता है। वह धन लगाने को तैयार रहता है, यदि नफा हो कम-से-कम घाटा न हो, उसकी अक्ल के भरोसे कल कारखाने चलते हैं। उसके साहस पर उद्योग का भविष्य निर्भर करता है। उसके विचार और सूझ पर उद्योग का बढ़ना-गिरना निर्भर रहता है।

मैनेजिङ्ग एजेंसी की पद्धति में भी एक आदमी या कुछ आदमियों पर कारखाना चलाने, उसकी नीति निर्द्धारण करने और उसकी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने का भार रहता है। शेयरहोल्डर कुछ अवधि के लिये उन्हें प्रबन्ध का अधिकार दे देते हैं। उन्हें आफिस का खर्च मिलता है। नफे या बिक्रीपर कमीशन मिलता है आदि। किन्तु जिनका धन किसी कम्पनी में न लगता हो उन्हें सिर्फ योग्यता के

लिए ही किसी कम्पनो का सर्वेसर्वा बना दिया जाय या नहीं, यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

सन् १९२२ तक सरकार का ध्यान भी देश के उद्योग-धन्धों की सहायता की तरफ नहीं गया था इसके बाद से ही सरकार ने भारतीय चीजें खरीदनी शुरू कीं। फिर भी वह अभी तक विदेशी चीजें काफी परिमाण में खरीदती है। भारत सरकार की नीति भारत की व्यावसायिक उन्नति के प्रक्ष में बहुत कम रहती है! क्योंकि उसे इंगलैण्ड के स्वार्थों का खयाल भी रखना पड़ता है। यहाँ शीशे के व्यवसाय को अभी तक सरकारी संरत्तण नहीं मिलता! इसी प्रकार उनके उद्योग को भी संरक्षण प्राप्य नहीं है। भारतीय उद्योग-धन्धों के विकास के बहाने इंगलैण्ड के स्टील, कपड़े आदि को प्रोत्साहन मिल रहा है! इसका कारण यही है कि हमारी सरकार राष्ट्रीय सरकार नहीं है।

किन्तु विभिन्न प्रान्तों में काँग्रेसी मंत्रिमण्डलों के स्थापित हो जाने से इस दिशा में नवीन परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है। पिछली बार विभिन्न प्रान्तों के मंत्रियों की जो कान्फरस दिल्ली में हुई थी उसने भारत के उद्योगी-करण का निश्चय किया था और नेशनल प्लानिंग कमीशन तथा उसकी उपसमितियों के रूप में ऐसा विश्वास हो रहा है कि पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारत के औद्योगिक विकास की प्रगति होगी। अब देश के व्यवसायियों का कर्तव्य है, कि वे देश के उद्योग-धन्धों को बढ़ाने में उक्त कमीशन को हर प्रकार का सहयोग और सहायता दें।

अभ्यास ५५

साधारण पत्र लिखने में किसी खास नियम का उतना पालन नहीं किया जाता, जितना व्यापारियों के पत्रों में या अपने से बड़े के प्रति लिखे गये पत्रों में नियमों का ध्यान रखा जाता है। हमारे यहाँ पत्र लिखने का जो ढंग पहले प्रचलित था वह अब कम हो रहा है। यद्यपि कुछ लोग अब भी उस ढंग पर पत्र लिखते हैं। आज-कल पत्र लिखने के अंग्रेजी ढंग का ही विशेषकर उपयोग होने लगा है। लेकिन हमारे यहाँ पत्र लिखने का जो ढंग पहिले प्रचलित था तथा अब भी है, अंग्रेजी ढंग से किसी अंश में अपूर्ण नहीं है। रूप में अन्तर तो अवश्य है पर वह अपने में पूर्ण है। अंग्रेजी ढंग की एक खास विशेषता यह है कि पत्र को सुन्दर तथा आकर्षक बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है वहाँ हमारे यहाँ ढंग बिलकुल सरल तथा सादा होता है। उसमें उतनी सजावट नहीं होती। यद्यपि यह सजावट, सजावट ही है तब भी वर्तमान युग की बदली हुई मनोवृत्ति के लिए कुछ अंश में यह आवश्यक भी हो गया है। अब पत्र के ऊपर दाहिने कोने पर अपना पता तथा तारीख लिखना, उसके बाद बाईं तरफ शिष्टतापूर्ण सिरनामा या सम्बोधन जिसे अंग्रेजी में

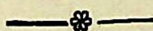
(Salutation) कहते हैं, देना आवश्यक समझा जाता है। पूरे पत्र को कई पदों में साधारण पत्र को कम-से-कम तीन पदों, पैराग्राफ (Paragraph) में लिखा जाता है। अन्त में दाहिने कोने पर हस्ताक्षर रहता है। साधारण पत्रों का यही वर्तमान रूप है।

हमारे पुराने ढंग के पत्रों में ये सब कुछ नहीं है। सिरनामे में पहिले स्थान, तब जिसके पास पत्र लिखना है उनका पूरा नाम तथा केवल उनका शहर या गाँव, उसके बाद भेजने वाले का नाम और तब नमस्कार—राम राम बंचने, मेरा पायलागन पहुँचे, इत्यादि रूप में होता है। पत्र के अन्त में हस्ताक्षर नहीं होता, बल्कि तिथी लिखी होती है। इस प्रकार अंग्रेजी ढंग से हमारा पुराना ढंग किसी प्रकार अपूर्ण नहीं है, केवल रूप का अन्तर है।

सरकारी दफ्तरों में तो हिन्दी का प्रवेश है ही नहीं। यद्यपि अब कुछ हिन्दी में सरकारी दफ्तरों में पत्र लिखने लगे हैं लेकिन सरकार की तरफ से किसी को हिन्दी पत्र नहीं लिखा जाता। अब कुछ प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रिमण्डल होने से मंत्री लोग हिन्दी में पत्र लिखने लगे हैं। लेकिन अभी तक उसका कोई वैसा रूप निश्चित नहीं हो सका है जैसा अंग्रेजी में सरकारी पत्रों (Official letter) में है।

व्यापारियों ने तो हिन्दी पत्रों के लिए एक रूप (Form) निश्चित कर लिया है। चिट्ठी लिखने का कागज भी अब लोग हिन्दी में छपाकर रखते हैं और उसीका उपयोग करते हैं। छपे हुए कागज पर आढ़त, कम्पनी, दुकान या फर्म का नाम तथा पता छपा हुआ होता है। कागज के बीच में ऊपर फर्म का नाम बड़े बड़े अक्षरों में होता है। उसके बाद बायें कोने पर टेलीफोन नम्बर तथा तार का पता (Telegraphic Address) होता है। दाहिनी तरफ पता तथा उसके नीचे तारीख होती है। इसके बाद अंग्रेजी ढंग के अनुसार भेजने वाले का पूरा पता लिखा जाता है और तब सम्बोधन (Salutation) के बाद पत्र आरम्भ किया जाता है।

कुछ व्यापारी अभी तक हिन्दी में ही हुण्डी (Bill of exchange) इत्यादि लिखते हैं। नीचे दिए हुए अभ्यासों में सब तरह के पत्र, हुण्डी इत्यादि दिये हैं जिनमें प्रत्येक को पाँच बार टाइप करके पूर्ण अभ्यास कर लेना चाहिए।



अभ्यास ५६

नन्दूराम खेदन लाल

सुर्ती-जर्दा-प्रस्तुतकार

चेतगंज–काशी

ता० १० जनवरी, १९३९

श्री सोहन लाल एण्ड ब्रदर्स,
हौर्न बार्ड रोड,
बम्बई, ४

प्रिय महाशय,

आपका ता० ७ जनवरी १९३९ का पत्र मिला। आपके कहे अनुसार माल आज भेज दिया गया है, जिसका बीजक पत्र के साथ में जा रहा है। माल के साथ नये साल के कुछ कैलेण्डर भी हैं, आशा है जिसे आप पसन्द करेंगे।

हम लोगों ने किमाम का एक नया किस्म तैयार किया है जो हमारे यहाँ के सभी किमामों से अच्छा है। इसका भाव ५) तोला है। इसका थोड़ा सा नमूना भी माल के साथ भेज रहा हूँ। माल की रेलवे-रसीद तथा रु० ३०५।६।७ पाई का एक मिती हुण्डी आज से तीन महीने के ड्यू पर अर्थात् १० जनवरी १९३९ से ९ अप्रेल १९३९ तक के लिए, दी इलाहाबाद बैंक लिमिटेड को आपके मंजूरी के लिए दिया है।

आशा है हुण्डी मंजूर करके शीघ्र माल छुड़ाने का कष्ट करेंगे।

आपका
गिरधारी लाल
मैनेजर
वास्ते नन्दूराम खेदन लाल

अभ्यास ५७

बलदेव दास एण्ड सन्स

थोक कपड़े के व्यापारी

तार का पता, साटन
टेलीफोन नं०, १७३९

हिवेड-रोड
इलाहाबाद

ता० २८ दिसम्बर १९३८

मेसर्स जुग्गीलाल कमलापति
कानपुर।

प्रिय महाशय,

अभी हाल में आपका एक सरकुलर प्राप्त हुआ था जिसमें आपने नये साल में कुछ कपड़ों के दामों पर कमी करने की घोषणा की थी, इसलिये कृपया आप अपना नया सूचीपत्र भेजें।

आशा है शीघ्र उत्तर देंगे,

आपका

गोकुलदास

अभ्यास ५८

जुग्गीलाल कमलापति

मिल मालिक

तार का पता, कॉटन — कानपुर।

टेलीफोन नं०, २३११ — ता० २५ जनवरी १९३९

ए० बी० सी० कोड (चतुर्थ संस्करण)

मेसर्स बलदेव दास एण्ड सन्स

हिवेड रोड,

इलाहाबाद।

प्रिय महाशय,

आपके ता० २८ दिसम्बर १९३८ के पत्र के अनुसार ता० २ जनवरी १९३९ को आपके पास नया सूचीपत्र भेजा गया था, अभी तक जिसके पहुँचने की कोई सूचना नहीं मिली और न माल के लिए कोई आर्डर।

जाड़े के मौसिम के लिए कमीज के अच्छे डिजाइन के कपड़े इत्यादि इस समय तैयार हैं। मौसिम खतम होने के पहले आर्डर देकर माल मँगा लें तो अच्छा हो।

साथ में बुकपोस्ट से नये साल का कैलेण्डर भेजा जा रहा है।

नये सालकी बधाई,

आपका

परशुराम

मैनेजर

वास्ते जुग्गीलाल कमलापति

अभ्यास ५९

बलदेव दास एण्ड सन्स

थोक कपड़े के व्यापारी

तार का पता, साटन
टेलीफोन नं०, १७३९

हिवेट रोड
इलाहाबाद।
ता० २९ जनवरी १९३९

मेसर्स जुग्गीलाल कमलापति
कानपुर।

प्रिय महाशय,

आपका ता० २५ जनवरी १९३९ का पत्र मिला। आपका भेजा हुआ सूची-पत्र यथासमय मिला था, लेकिन कुछ कपड़ों का दाम अधिक मालूम पड़ा जिसके लिए अभी तक आर्डर नहीं भेजा गया।

सब रंग का शर्टिंग का कपड़ा नं० ७५०९९ N नं० ११३३, नं० ९९९९ A और B, डोरिया नं० ४००७, नं० ११७७, नं० १५०७ और तंजेब नं० ५५५ और १२४२ के एक एक गाँठ का आर्डर दे सकता हूँ यदि ५ रु० सैकड़े कमीशन आप दे सकें। इस समय बाजार में केलको मिल्स तथा मद्रासी शर्टिङ्ग के कपड़ों की माँग बहुत ज्यादा है। उनके साथ बाजार में टिकने के लिए आपके यहाँ के कपड़े कुछ सस्ते होने चाहिएँ क्योंकि आपके यहाँ के कपड़ों पर वैसा ग्लेज नहीं होता।

आर्डर यदि आपको स्वीकार हो तो कृपया शीघ्र सूचित कीजिएगा, तथा बिल्टी दी इलाहाबाद बैंक लिमिटेड द्वारा भेजिएगा।

आपका
बलदेव दास एण्ड सन्स
गोकुलदास

अभ्यास ६०

आवेदन पत्र

श्रीयुत अध्यक्ष,
युक्तप्रान्त व्यवस्थापिका सभा
लखनऊ।

श्रीमन्,

समाचारपत्रों से ज्ञात हुआ है कि व्यवस्थापिका सभा के लिए एक हिन्दी रिपोर्टर की आवश्यकता है, जिसके लिए मैं भी प्रार्थी हूँ।

शिक्षा के विषय में मुझे निवेदन करना है कि मैंने प्रथम श्रेणी में वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा (हिन्दी-उर्दू) दोनों भाषाओं को लेकर पास की है। मैंने द्वितीय श्रेणी में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्य मध्यमा-पीरक्षा पास की है। हिन्दू-विश्वविद्यालय की एडमिशन परीक्षा भी द्वितीय श्रेणी में पास की है।

हिन्दी संकेत लिपि के विषय में मैंने नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी, के संकेत लिपि विद्यालय में पंडित निष्कामेश्वर जी मिश्र की प्रणाली का अध्ययन किया है और इस समय १५० शब्द प्रति मिनट की गति से कोई भी भाषण लिख सकता हूँ तथा हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रति लिपि कर सकता हूँ।

मैं हिन्दी टाइप राइटिंग भी जानता हूँ तथा इस समय २५ शब्द प्रति मिनट की गति से रेमिङ्गटन मशीन पर कार्य कर सकता हूँ।

मैं बाइस वर्ष का एक ब्राह्मण युवक हूँ और बनारस जिले का रहने वाला हूँ। आपकी सेवा में मैं परीक्षाओं के प्रमाणपत्र निरीक्षण के लिये भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि मुझे अपने प्रान्तीय सरकार की सेवा करने का अवसर मिलेगा।

आपका आज्ञाकारी होने में
श्रीमन्,
मैं गौरव अनुभव करता हूँ-
बलिराम तिवारी।

सदलपुर।
१५ जनवरी १९३९।

पता :—
बलिराम तिवारी,
पो० सदलपुर,
जि० बनारस।

अभ्यास ६१

नं० २५९

मेमोरैन्डम।

युक्तप्रान्त व्यवस्थापिका सभा
लखनऊ, २० जनवरी, १९३९

युक्तप्रान्त व्यवस्थापिका सभा में हिन्दी रिपोर्टर के स्थान के लिए ता० १५ जनवरी, १९३९ के प्रार्थी श्री बलिराम तिवारी को सूचित किया जाता है कि वे

पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा में सम्मलित हों, जो ता० ५ फरवरी, १९३९ को ११ बजे दिन में सभाभवन में होगी।

केदारनाथ स्थाना
असिस्टेण्ट सेक्रेटरी,
युक्तप्रान्त व्यवस्थापिका सभा

श्री बलिराम तिवारी,
पो० सदलपुर,
जि० बनारस।

अभ्यास ६२

सिद्धि श्री बम्बई शुभ स्थाने श्री पत्री भाई धनपतराय दलपतराय को जोग लिखी बनारस से सकलराम भाई राम का राम राम बाँचना। आगे मिती माघ बदी ७ के आर्डर का माल आज दिन छुड़ाया और उसमें ३५ गाँठ रूई नमूने से खराब है। उसमें बिनौला बहुत ज्यादा है, भाव में कुछ कमी होनी चाहिए। जिसकी खबर मिलने पर माल बेची के लिए निकाला जायगा। एक हफ्ते के भीतर खबर न मिलने पर दाम पर ५। रु० सैकड़े ब्याज रखा जायगा। आगे रूई का भाव रु० १३। ९। रखा जाय जो बजार भाव इस समय है।

मिति माघ बदी ११ सम्वत् १९९५

अभ्यास ६३

(दर्शनी हुण्डी)

सिद्धि श्री अलीगढ़ शुभ स्थाने श्री पत्री भाई साधोराम नरायनलाल जोग लिखी आगरा से रामबहादुर श्यामबहादुर की राम राम बाँचना आगे हुण्डी किनी एक आप ऊपर दिया रुपया ५०० आँकड़े पाँच सौ की नीमा दो सौ पचास की दूने पूरे देना यहाँ रखा भाई दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया आगरा वाले को मिती कातिक बदी २ से पहुँचे दाम धनी जोग बिना जाब्ता बाजार चलान हुण्डी की रीत ठिकाने लगाए दाम चौकस कर देना मिती कातिक बदी २ सम्वत् १९८९।

अभ्यास ६४

(मिती हुण्डी)

सिद्धि श्री महा शुभ स्थाने भाई रामचन्दर साजनलाल लिखी मेरठ से केदार नाथ रामरिचपाल की राम राम बाँचना अपरंच हुण्डी १ रुपिया २५०० आँकड़े पचीस सौ, जिसका नीमा रुपया साढ़े बारह सौ का दूना पूरा अट्ठे रखा दी इलाहाबाद बैंक लिमिटेड पास मिती कातिक बदी दुइज (२) से दिन ६१ इकसठ पीछे नामे शाह जोग हुण्डी चलान कलदार दीजा मिती कातिक बदी २ दुइज सम्वत् १९८९।

अभ्यास ६५

लखनऊ
५–९–३८

प्रिय महादेव भाई नमस्कार,

मैं इस पत्र को संकोच के साथ लिख रहा हूँ, क्योंकि महात्माजी इस समय मौन धारण किए हुए हैं और उनके सामने कई बड़े प्रश्न हैं। फिर भी मैं जो बात लिख रहा हूँ, उसका विशेष महत्व है, इसलिए मेरी प्रार्थना है कि कृपया आप यह पत्र उन्हें सुना दें और वे जो आदेश दें उससे मुझे सूचित कर दें।

इधर मैं बनारस गया था। वहाँ काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से मुझे एक अभिनन्दन पत्र दिया गया। उसके उत्तर में मैंने जो भाषण किया उस पर उर्दू-पत्रों में बड़ी टीका-टिप्पणी हो रही है। कई पत्र जो कांग्रेस के घोर शत्रु हैं आज कांग्रेस के प्रस्तावों की दुहाई दे रहे हैं और उनको मेरी बातों में साम्प्रदायिकता की दुर्गन्ध आती है। मेरे कहने का तात्पर्य यह था–कोई भाषा हो उसका स्वरूप उसके क्रियापदों पर, जो भाषा के मूल स्तम्भ (Bases) हैं, निर्भर करता है। भाषा में अन्य भाषाओं के चाहे जितने शब्द लिए जायँ उसका मूल रूप वही रहता है। मराठी, गुजराती, बंगला, फारसी के शब्द हैं, अंग्रेजी में लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच इत्यादि के शब्द हैं, ईरानी में फारसी, अरबी के शब्द हैं, फिर भी इनके नाम नहीं बदले। इस तरह तो हमारी भाषा का नाम चाहे उसमें फारसी अरबी के कितने शब्द हों, हिन्दी होना चाहिए था। पुराने मुसलमान कवियों ने भी इसे बराबर "हिन्दी जुबान" कहा है। परन्तु बीच में यह प्रथा चल पड़ी कि उसके इस रूप को जिसमें संस्कृत के तत्सम् और तद्भव शब्द अधिक हों हिन्दी और जिसमें फारसी, अरबी के शब्द अधिक हों उर्दू कहा जाय। अब "हिंन्दुस्तानी" शब्द चलाया जा रहा है। इसमें किसी को आपत्ति न होनी चाहिए। पर इसका स्वरूप समझ लेना चाहिए। हिन्दुस्तानी में न तो हठात् संस्कृत, अरबी, फारसी के शब्द ठूँसे जाने चाहिएँ, न प्रचलित शब्द उसमें से निकाले जाने चाहिए। अंग्रेजी में एक ही अर्थ के कई शब्द हैं। जो भिन्न मार्गों से उसमें आए हैं। यही हिंन्दुस्तानी में होना चाहिए। इससे भाषा का शब्द-भंडार भरा रहता है। साहित्य में सुगमता होती है, और क्रमशः (Shades of Moaning) उत्पन्न हो जाते हैं। आज कल खराबी यह है कि कुछ लोग हिन्दुस्तानी के नाम से "उर्दू" का प्रचार करना चाहते हैं। दिल्ली और लखनऊ के "रेडियो स्टेशन्स" गेहूँ न कहकर 'गन्दुम' कहते हैं। 'पञ्च' जैसे सीधे शब्द को न बोलकर "सालिश" कहते हैं। पुस्तकों की समालोचना करते समय उर्दू की पुस्तकों को तो हिन्दुस्तानी पुस्तक कहते हैं और हिन्दी को हिन्दी रहने देते हैं इससे बुरा असर पड़ता है।

एक बात मैंने और कही थी। अंग्रेजों ने अपनी भाषा जबरदस्ती चला दी, पर युक्तप्रान्त वाले तो सारे भारत में अपनी भाषा जबरदस्ती नहीं चला सकते। हमको भाषा के स्वरूप का निश्चय करते समय यह देखना होगा कि राष्ट्र भाषा होने के कारण उसे महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल और मद्रास के लोगों को भी व्यवहार में लाना होगा। इन लोगों के खयाल से हमको संस्कृत से निकले शब्दों को पर्याप्त संख्या में रखना पड़ेगा। लिपियाँ तो दोनों हालत में अभी रहेंगी।

मेरा विश्वास है कि इसमें कोई ऐसी बात नहीं है जो कांग्रेस के किसी सिद्धान्त या मन्तव्य के विरुद्ध हो या देश की राजनैतिक, साहित्यिक या सांस्कृतिक प्रगति के लिए हानिकर हो। यदि हमने ईरानियों, तुर्कों की भाँति अपनी भाषा में से संस्कृत, फारसी, अरबी के शब्दों को निकालना शुरू किया तो बड़ा अन्धेर होगा फिर तो संस्कृत शब्दों का तो यहाँ के बहुत बड़े अंश के जीवन से ऐसा सम्बन्ध है कि उनके बहिष्कार से जो भाषा बनेगी कृत्रिम होगी।

यदि आप इस सम्बन्ध में अवसर देखकर महात्माजी से परामर्श ले सकें और मुझे सूचित कर सकें तो मैं ऋणी हूँगा।

आपका—
सम्पूर्णानन्द

अदालत में अभी हिन्दी का उतना प्रचार नहीं हो सका है लेकिन नागरी प्रचारिणी सभा; काशी के प्रयत्न से नागरी लिपि का प्रवेश कचहरियों में हो गया है। मज़मून तो उर्दू भाषा में ही होता है, लेकिन लिपि नागरी होती है।

ऐसे चार अभ्यास नीचे दिए जाते हैं।

अभ्यास ६५

तमस्सुक किस्तबन्दी

मैं कि अमर पिसर ग़ुलाब सिंह कौम जाट साक़िन हलालीपुर परगना छपरौली तहसील बारापत ज़िला मेरठ का हूँ। चूँकि मुबलिग ५००) सिक्का चेहरा शाही निस्फ़ जिसके २५०) होते हैं पास से लाला गंगाराम पेसर लाला सीताराम क़ौम महाजन साकिन मौज़ा हलालीपुर परगना छपरौली तहसील बारापत ज़िला मेरठ से नक़द कर्ज़ा लिए हैं। या बाबत हिसाब लेखा बही बाकी है लिहाज़ा इक़रार करता हूँ कि ज़र मजकूर मै सूद आइन्दा मुबलिग सौ रुपया ज़ुमला मुबलिग ६००) बिला सूद अन्दर तीन साल (अगर तमस्सुक क़िस्तबन्दी है तो इतने दिन के अन्दर) दाइन मौसूफ़ को अदा और बेबाक कर दूँगा व सूरत वादा खिलाफी किसी एक क़िस्त (या दो किस्त जैसा कि इक़रार पाया हो) कुल रुपया मैं सूद फी सदी एक

रुपया माहवार सूद शशमाही वार ता० वादा ख़िलाफी से अदा करने का जिम्मेवार हूँगा लिहाज़ा ये चन्द क़लमा बतरीक़ तमस्सुक क़िस्तबन्दी तहरीर कर दिए कि सनद हो और वक्त ज़रूरत के काम आवे। फ़क़त ता०...तहरीक...नाम कातिब तफ़सील इकसात...किस्त अव्वल १००) एकुम जून सन् २३ वगैरह वगैरह।

अभ्यास ६६

तमस्सुक मकफ़ूली (रेहननामा)

मैं कि अमर सिंह पिसर गुलाब सिंह कौम जाट साकिन हलालीपुर परगना छपरौली तहसील वाग़पत ज़िला मेरठ का हूँ। चूँकि मुबलिग १०००) चेहरा सिक्का साही निस्फ जिसके ५००) होते हैं पास से लाला गंगाराम वल्द सीताराम महाजन साकिन हलालीपुर परगना छपरौली जिला मेरठ वदी तफसील वग़रज अदाये ज़रे करज़ा ज़िम्मगी खुद दाद आए मालगुज़ारी करज़ा लिए हैं। लिहाज़ा इकरार करता हूँ कि मुबलिकान मज़कूर मय सूद व सरह फी सदी मुबलिग एक रुपया माहवारी सूद बालये शशमाही बार दाईन मौसूफ को अदा व बेवाक करूँगा और सिर्फ इतमीनान दाईन मौसूफ के मवाजी में बिगहा सात आराजी अज़ चहारुम हिस्सा मख़मूल खाता खेवट नम्बर एत काही चौंतीस बिगहा पन्दरह बिस्वा खाता जमअी एक्कासी रूपया वाका मौजा हलालीपुर परगना छपरौली तहसील वागपत ज़िला मेरठ के हकूक हर किस्म जो कुछ इसके मुतअल्लिक हैं और जिनपर मैं आज तक काबिज व दख़ील मुतालिबा तमस्सुक हजासिल व सूद में मुस्तफरक कर दी लिहाजा यह चन्द कलमे बतौर तमस्सुक मकफूली तहरीर कर दिए कि सन्देहों और वक्त जरूरत के काम आवे।

अभ्यास ६७

रेहन नामा दख़ली व सादा

मैंकि परमारथ सिंह पिसर द्वारिका सिंह कौम क्षत्री साकिन सिंहपुर परगना बेलहावास तहसील लालगंज जिला आजमगढ़ का हूँ जोकि मवाजी सात बिघा नुसवह पोख्ता आराजी वाका खाता खेवट वसूवह जमई मुबलिग ९८) वाका मौजा सिंहपुर परगना बेलहाबांस तहसील लालगंज जिला आजमगढ़ ममलूकि व मकबूज: बिला शिरकत गैर मनमुकर है और मुवाखिज़ा बवार से बरी है। बहालत सेहत व नफ्स साबिते अक्ल अपनी हकीकत मजकूरह वाला को मय जुमला हकूक तावा व हकूक दाखिला व खारिजा व मय आबपाशी मय दरख्तान मुतफ़रका व एकजाई गरजे जो कुछ इसके मुतल्लिक हो बावजह मुबलिग एक हजार छः सौ रुपया सिक्का चेहरा शाही कि निस्फ जिसके आठ सौ रुपये होते हैं, पास

भागवत सिंह पिसर बैजनाथ सिंह कौम महाजन साकिन मौजा कष्टहरनपुर परगना बेलहाबांस तहसील लालगंज जिला आजमगढ़ के हैं वा तजबीज कर दी और जर रेहन वदी तफसील जैल मुर्तहीन से वसूल पाया। दाखिल खारिजा अदालत माल में होने से इन्कार करे या किसी खिलाफत वाफजा की वजह से या किसी और वजह से कब्जः मुर्तहीन मौसूफ में कुछ खलल वाका हो तो इसकी तो जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। मुर्तहीन को अख्तियार होगा कि जुज या कुल रेहन मय सूद फीसदी एक रुपया माहवारी के तारीख सीका से जायदाद मजकूरह वाला दीगर जायदाद मुजक्कर से वसूल करे। ऐसा ही हक दाईन मौसूफ को वापसी जर रेहन का यह निफाजा किफालत जायदाद व मरहून व जात मुजक्कर से हर वक्त हासिल है लिहाजा यह रेहननामा दखली लिख दिया कि सन्देहों और वक्त जरूरत के काम आवे।

तफसील वसूलयाबी

बाबत बेवाव हिसाब वहीखाता जिम्मगी खुद या फितनी दाईन मौसूफ मुबलिग ५००)

वगैरह वगैरह   मोरखा, कातिब

नोटः—

यह मजमून ऐसे मौके का लिखा है कि जिसके वापसी रुपये की नालिश हो सकती है लेकिन अकसर राहेनान का यह मन्शा नहीं होता कि मुर्तहीन जब चाहे रुपया वापिस ले ले इसलिए कातिब का फरज है कि वह राहिन से इस शर्त के लिए खासतौर से दरयाफ्त करे और अगर वह इस तरह के लिए रजामन्द न हो और रेहन नामा सिर्फ दखली न हो और रेहननामा सिर्फ दखली हो तो वापसी की शर्त नहीं लिखनी चाहिए।

अभ्यास ६८

वसीअत नामा

मैं कि रामकरन राम वल्द चन्द्रवदन राम कौम जाट साकिन मौजा हलालीपुर परगना छपरौली तहसील वागपत जिला मेरठ का हूँ जो कि मिनमुकर मुवाजियात हलालपुर वदरखा मुतवाजह परगना छपरौली तहसील वागपत जिला मेरठ में हिस्सेदार हैं। चूँकि मिनमुकर की उम्र सत्तर साल के करीब हो गई है पैमाना उम्र वरेज नजर आता है और मिनमुकर के कोई अवलाद पिसरी या दुखतरी नहीं है इसलिये यह मुनासिब है कि अपने जीन व हियात में अपने मरने के बाद अपने माल व मुताअ व जायदाद मशकूरअ व गैर मनकूलअ का इन्तजाम कर जावें। लिहाजा बहालत सेहत व नफ्स वह साबित अक्ल अपनी ऐन खुशी व रजामन्दी से इस्ब जेल वसीअत करता हूँ।

(१) यह कि मेरे मरने के बाद मेरी जौजः मुसम्मा हुकमती मेरी कुल जायदाद मन्कूला व ग़ैर मन्कूला की मालिक मुस्तकिल मस्ल मेरे होंगी।

(२) यह कि बाद वफात मुसम्मात हुकमती मजकूर मेरी कुल जायदाद सिकनी व ग़ैर सिकनी, असबाव खानादारी नक़दी वग़ैरह ग़रज़े जो कुछ मेरी जायदाद मन्कूला या ग़ैर मन्कूला है उसका मालिक मुसम्मी धन सिंह पिसर. मनबहाल सिंह कौम जाट साकिन मौजा हलालीपुर जो कि रिस्ता मनमुकर का पोता लगता है मालिक होगा लिहाजा यह वसीयतनामा लिख दिया कि सदेहों व वक्त जरूरत कामआवे। फ़क़त

(नाम कातिब)

तहरीर ता० २० अप्रैल १९१९

व्यक्तियों के तथा स्थानों के नाम लिखने में कुछ अधिक समय लगता है, खास कर विदेशी नामों के लिखने में। इसलिए ये ६ अभ्यास ऐसे दिए गए हैं जिनमें व्यक्तिवाचक संज्ञा अधिक है।

अभ्यास ६९

प्रत्येक अभ्यास को ३ बार

मैडम टैवूरनेले ओवर पत्रमें लिखा है कि हर हिटलर ने सीनियर मुसोलिनी के पास यह खबर भेजी है कि अगले मंगलवार से हालैंड की सीमा पर कुछ महत्व पूर्ण सैनिक कार्रवाई की जायगी। इसका उद्देश्य लोक तंत्रवादी राष्ट्रों को यह बता देना है कि जर्मनी के सैनिक अधिकारी वर्तमान समय को अन्तरराष्ट्रिय हलचल पैदा करने वाले साहसिक कार्य के लिए उपयुक्त समझते हैं। खबर है कि अन्तरराष्ट्रिय स्थिति और देश की रक्षा के प्रश्न पर बारीकी के साथ विचार करने की दृष्टि से फ्रांसीसी सिनेटन की एक गुप्त बैठक की जाने की संभावना है। यदि ऐसा हुआ तो योरोपीय युद्धके बाद यह पहली ही बैठक होगी जो इस तरह गुप्त रूप से आमंत्रित्त की गई हो। यह भी कहा जाता है कि सिनेटन की तीन रक्षा कमेटियों की गुप्त बैठकों के बाद विदेशी मामलों की कमेटी के साथ जल, स्थल और हवाई सेना की कमेटियों की संयुक्त बैठक भी गुप्त रूपसे की जायगी। न्यूजक्रानिकल के श्रीवर नानलेट को अत्यन्त विश्वसनीय जरिए से खबर मिली है कि हालैंड में जर्मनी की कार्रवाइयों पर बड़ी चिन्ता के साथ निगाह रक्खी जा रही है। हालैंड की परराष्ट्र नीति बदलवाने के लिए जर्मनी उसपर तीन तरह से आर्थिक दबाव डालने की फिक्र में है। राइन नदी में चलनेवाले डच जहाजों के साथ भेदभाव की नीति बर्तकर बेलजियम के व्यवसाइयों को अपना माल आमस्टर्डम की राह न भेज-

कर एन्टवर्प बेलजियम की राह भेजने को समझाकर तथा हालैण्ड से आनेवाली खेती की पैदावार को रोक कर । श्री वारलेट ने दिसम्बर के अन्त में भी लिखा था कि हिटलर का दूसरा आक्रमण अब हालैण्ड पर होगा । उस पर सरकारी नात्सी प्रचार विभाग के आदेश से जर्मन पत्रों ने उनकी इतनी तीव्र निन्दा की थी जिससे लन्दन के कई राजनीतिज्ञों के मन में शंका हो गई थी । हिटलर अब किस देश पर आक्रमण करेंगे इस सम्बन्ध में की अन्य अफवाहों में रूमानिया, यूक्रेन, मेमेल, डैनजिंग आदि का भी नाम लिया गया है ।

ब्रिटिश अधिकारी इन अफवाहों की तरफ सरकारी तौर से ध्यान देकर बढ़ती हुई घबराहट को और बढ़ाना नहीं चाहते । हालैण्ड के सम्बन्ध में ब्रिटेन की क्या स्थिति है इसका निश्चय बेलजियम की तरह किसी सन्धि द्वारा किया जा सकता है । फिर भी ऐतिहासिक सम्बन्ध तथा हालैण्ड की भौगोलिक स्थिति के कारण ब्रिटेन और हालैण्ड के स्वार्थ एक दूसरे से बहुत सम्बद्ध हैं । जर्मनी हालैण्ड पर आर्थिक दबाव डालना चाहता है । ब्रिटिश सरकारी हलकों में इसकी कोई खबर नहीं है । और इस पर विश्वास नहीं किया जा रहा है कि इस तरफ सैनिक आक्रमण करने का खतरा जर्मनी उठायेगा ।

अभ्यास ७०

स्वर्गीय ह्यूम साहेब ने अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस का निर्माण किया । निर्माण काल में इसका ध्येय था हिन्दुस्तानियों को सरकारी नौकरियों में स्थान दिलाना । अंगरेजों के साथ यहाँ जो रियायतें की जाती थीं, वही हिन्दुस्तानियों के साथ भी की जायँ । इसी उद्देश्य को लेकर इसका जन्म हुआ । प्रतिवर्ष इसका अधिवेशन होता था । आज के ऐसे लोग उस समय इसमें न थे । इसका कारण यह था कि उस समय देशवासियों में ऐसे विचार पैदा ही नहीं हुए थे । उस समय इसके सभापति होते थे श्री जार्ज यूल सरविलियम बेडर बर्न, श्री अलफ्रेड वेब, सर हेनरी काटन के ऐसे विदेशी सज्जन जिनके हृदय में भारत तथा भारतवासियों के प्रति कुछ सहानुभूति थी । देश के विद्वान तथा वकील बैरिस्टर भी इस संस्था के सभापति होते थे जो देश के सामाजिक आन्दोलन के अगुआ होते थे । उनमें श्री उमेशचन्द्र बैनर्जी, दादा भाई नौरोजी, श्री बद्रुद्दीन तैयबजी, सर फिरोज शाह, मेहरबानजी मेहता, राव साहेब आनन्द चार्लू, सर सुरेन्द्रनाथ बैनरजी, श्री रहमतुल्लासयानी, सर संकरनायर श्री आनन्दमोहन बसु, रमेशचन्द्र दत्त, सर नारायण गणेश चंदावर्कर, सर दिनशा इदुलजी वाचा, लाल मोहन घोष इत्यादि ।

इसके बाद कांग्रेस क्षेत्र में दूसरे विचार के लोग दिखाई पड़ने लगे । लोगों में भारत को अन्यराष्ट्रों के बराबर या एक स्वाधीन देश बनाने का विचार उत्पन्न होने

लगा। इस विचार की रूपरेखा लेकर श्रीगोपाल कृष्ण गोखले, श्री रासबिहारी घोष, पंडित मदन मोहन मालवीय, पंडित विशन नारायण, राव बहादुर रंगनाथ नरसिंह मुधोलकर, नवाब सैयद मुहम्मद बहादुर, श्री भूपेन्द्र नाथ बसु, सर सत्येन्द्र प्रसन्न सिंह, श्री अम्बिका चरण मजुमदार ऐसे लोग इस बीच में अवतीर्ण हुए। इसके बाद वंग-भंग के आन्दोलन ने राष्ट्र को स्वतंत्र कर दिया। राष्ट्र में नई स्फूर्ति दिखाई देने लगी, स्वाधीनता की लोग कल्पना ही नहीं अब इच्छा करने लगे। इस भावना को लेकर पंडित मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपत राय, श्री चक्रवर्ती, विजय राघवा चरण राय, हकीम अजमल खाँ, देश बन्धु चित्तरंजन दास, मौलाना मुहम्मद अली ऐसे व्यक्ति देश पर देश की इस महती माँग पर अपनी कुर्बानी देने को आगे बढ़े। इसके बाद देश की यह संस्था राष्ट्र की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था हो गई इसकी आवाज देश की महती आवाज मानी जाने लगी। महात्मा गांधी देश को इस स्थिति पर लाने वाले प्रधान व्यक्ति हैं। अध्यात्म और सत्य पर निर्भर अपने स्निग्ध शासन में उन्होंने देश को कितने सच्चे सिपाही तैयार कर दिए हैं यह सभी जानते हैं। लेकिन देश का प्राण यह महा पुरुष बैलगांव के ३९ वीं कांग्रेस अधिवेशन में ही राष्ट्रपति के पद पर दिखाई पड़ा। नहीं तो बराबर यह अपने सहयोगियों को ही आगे बढ़ाते रहे। उस अधिवेशन के बाद देश का युवक वर्ग जाग उठा। भारत के युवक इस पद पर दिखाई पड़ने लगे जिनका देश के बड़े-बूढ़े सभी ने एक सा आदर किया ऐसे युवकों में हैं पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्री राजेन्द्र प्रसाद, श्री सुभाष चन्द्र बोस, डाक्टर मुख्तार अहमद अन्सारी। इस अखिल भारतीय राष्ट्रीय महा सभा के अध्यक्ष पद पर महिलाएँ नहीं आई हैं। ऐसी बात नहीं है। श्रीमती एनी बेसेन्ट, श्रीमती सरोजिनी नायडू, तथा नलिनी सेन गुप्त, इसकी अध्यक्षा हो चुकी हैं और सफलता पूर्वक देश तथा राष्ट्र का नेतृत्व कर चुकी हैं।

अभ्यास ७१

मालूम होता है कि जर्मनी की काकदृष्टि अब साइप्रस द्वीप पर पड़ी है। जर्मन पत्र उसपर के ब्रिटिश कब्जे की टीका करने लग गए हैं। सानसेवस्तियान के सहकारी ब्रिटिश वाणिज्य दूत श्री अर्निट गोल्डिंग तथा आपकी पत्नी को बागी पक्ष की सैनिक पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। फिलस्तीन में अरबों की स्वाधीनता की हिंसात्मक लड़ाई जारी है। लंदन में होनेवाले फिलस्तीन सम्मेलन के लिए प्रतिनिधि रवाना हो रहे हैं। यरूशलेम के उत्तर सड़क पर अरबों ने एक मोटर पर गोलियों की गहरी वर्षा की जिससे ब्रिटिश पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट श्री जी० डी० सैन्डर्सन की मृत्यु हो गई और सर चार्ल्स टेगार्ट जो पुलिस सम्बन्धी विषयों में सरकार के परामर्शदाता हैं बाल बाल बच गए। अरब राष्ट्र रक्षा दल के स्थापनापन्न नेता श्री

फरवरी वे नशाशिवी ने अरब के राजाओं के पास पत्र भेजकर अनुरोध किया है कि फिलस्ती में गत तीन वर्षों से उपस्थित आतंक राज्य में जाँच करने के लिए एक मुसलिम कमीशन भेजे। वैरन हिरानुमा ने जापान का नया मन्त्रिमण्डल बनाया है। आपने प्रिन्स कोनोवे को भी अपने मन्त्रीमण्डल में रक्खा है पर आपके जिम्मे कोई विभाग नहीं किया गया है। मध्य चीन की जापानी सेना के प्रधान सेनापति जनरल हाटा के स्थान पर ५७ साल उम्र के लेफ्टिनेन्ट जनरल ओटो जो यमादा की नियुक्ति हुई है।

चीन में विदेशियों के गमनागमन तथा कार्यों पर जापन ने जो रुकावटें डाल दी हैं उनका विरोध करते हुए अमेरिका ने जापान सरकार को पत्र लिखा है। बरमा की शान रियासतों के संघ ने लाशियों से क्यूकोक तक की सड़क फिर बनाने या उसकी मरम्मत करने के लिए दस लाख रुपया दिया है।

अभ्यास ७२

देश की राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने देश के कोने कोने में इसका संदेशा पहुँचाने के लिए क्या क्या नहीं किया। देश के मुख्य मुख्य स्थानों में इसके वार्षिक अधिवेशन हुए। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, प्रयाग, लाहौर, नागपूर, दिल्ली, अमृतसर, गया, कोकोनाडा, बेलगाँव, कानपूर, गोहाटी, ऐसे ऐसे भारत के शहरों में वहाँ के तथा उस प्रांत की जनता के सम्मुख इसने देश की वास्तविक अवस्था रखी। उन तक देश का संदेश पहुँचा दिया। भारत के बंगाल, संयुक्त प्रान्त, बिहार, उड़ीसा, पंजाब, सिंध, बम्बई, मद्रास, मध्य प्रान्त, बरार, आदि प्रांतों में कहाँ इस राष्ट्रीय संस्थाने अपना उद्देश्य लोगों को नहीं सुनाया, हाँ, अब इस भाव में परिवर्तन हुआ है। जहाँ पहिले बम्बई, कलकत्ता जैसे बड़े बड़े शहर इसके अधिवेशन के स्थान होते थे अब छोटे छोटे गाँवों में इसका वार्षिक अधिवेशन होता है। हरिपुरा और त्रिपुरी जिसे पहले बहुत कम लोग जानते थे अब शायद देश इन स्थानों को बड़े आदर के साथ स्मरण करेगा। महात्माजी ने गंडी और बारडोली को पहले ही अमर कर दिया था अब उन्हीं के दिखाए पथ पर चलकर कांग्रेस फिर भारत के उन गाँवों को महत्व दे रही है जहाँ हमारी सभ्यता और संस्कृति का जन्म हुआ था।

अभ्यास ७३

यह तो सभी जानते हैं कि शिक्षा की कमी के कारण किसी जाति या राष्ट्र की उन्नति नहीं होती। भारतवर्ष में शिक्षा की कमी है और इसी लिए आज यह राष्ट्र अपने पतन की परम सीमा पर पहुँच गया है। बहुत सी जातियाँ होने के कारण भी देश की उन्नति में बाधा पहुँच रही है। हिन्दू मुसलमान ये ही दो बड़े

फिरके हैं जिनमें मुसलमानों में शिक्षा की कमी अधिक है। इसमें बहुत ही थोड़े से पढ़े लिखे व्यक्ति ऐसे हैं जो जन वर्ग के सम्पर्क में आ सकते हैं। सांप्रदायिक क्षेत्र में मि० मुहम्मद अली, जिन्ना, सर सिकन्दर हयात खाँ, मि० फजलुल हक साहिब, नवाब छतारी, सर मुहम्मद याकूब, सर गुलाम हुसेन, हिदायतुल्ला, सय्यद अबदुल अजीज, मौलाना जाफर अली खाँ, सर रजा अली इत्यादि के ही नाम विशेष कर लिए जाते हैं। इस समय आपही लोग मुसलिम लीग के कर्णधार हैं। सांप्रदायिकता के आधार पर आज आप लोग मुसलिम जनता को जागृत करने में जी जान से लगे हुए हैं। चाहे किसी भी आधार पर हो, देश के ये सोये हुए लोग पहले किसी प्रकार जाग तो जाँय।

भारत की राष्ट्रीय सभा कांग्रेस के साथ देश की लड़ाई के लिये जीजान से जुटे हुए मुसलमान वीरों की कमी नहीं है। उनका नाम लेने में भी आज देश को कितना अभिमान है, यह सब लोग नहीं जानते। सरहदी गाँधी श्री अब्दुल गफ्फार खाँ, मौलाना अबुल कलाम आजाद, रफी अहमद किदवई, ऐसे वीरों पर आज देश को नाज है। हमारे युक्तप्रांतीय कांग्रेस कमेटी में भी इस साल सर्व श्री हुसेन अहमद, डा० के० एम० अशरफ, हफीजुर्रहमान, यूसुफइमाम, जेड० ए० अहमद इत्यादि देशसेवक हैं। सर्व श्री अब्दुल जलील खाँ, हमीम मुहम्मद हसन, मंजर अली सोख्ता, मुहम्मद कासिम ऐसे लोग इस साल अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य हैं। कुछ लोग ऐसे भी है जो सिद्धान्ततः कांग्रेस के साथ हैं जैसे सिंध के प्रधान मंत्री अलाबख्श।

आज संसार में सब तरफ हाहाकार मचा हुआ है। कहीं दैवी प्रकोप है, तो कहीं राज्य-लिप्सा के हेतु मानव-संहार है और कहीं संप्रदाय के नाम पर नृशंस हत्या। उस दिन सबके देखते देखते इटली ने अबिसीनिया को जिस बर्बरता से अपने शिकंजे में कस लिया, वह सबने देखा। अपने अपने स्वार्थ के लिये आज इटली और जर्मनी स्पेन को कुचल देने में तत्पर हैं। जेनरल फ्राँको जिस निर्दयता से मानव का खून कर रहे हैं यह फ्रान्स और ब्रिटेन ऐसे शक्तिशाली साम्राज्य देखते हुए भी चुप हैं। उस दिन जर्मनी ने जिस चालाकी से जेकोस्लावाकिया की स्वतंत्रता का अपहरण किया वह भी सबने देखा और साथ ही यह भी सबने देखा कि एक का सर्वनाश करके ब्रिटिश प्रधान मंत्री श्री चेम्बरलेन ने किस प्रकार शान्ति के पुजारी होने का सार्टिफिकेट प्राप्त किया। आज भी जर्मनी के डिक्टेटर हर हिटलर जर्मनी के यहूदियों को किस बर्बरता से देश से निकाल रहे हैं यह सब लोग देखते हुए भी चुप हैं। उधर ब्रिटिश सरकार यहूदियों को यरुशलम में बसा कर किस प्रकार मुसलमानों और यहूदियों पर अत्याचार कर रही है यह भी सब देखते हुए चुप हैं। इधर जापान चीन की छाती पर मूँग दल रहा है और इन

खून खराबियों में किस प्रकार दूसरे शक्तिशाली राष्ट्र उसकी मदद कर रहे हैं, यह भी किसी से छिपा नहीं है। यदि इतना ही होता तो गनीमत थी। उस दिन दक्षिण अमेरिका के चीली प्रान्त में भूकम्प से तीस हजार व्यक्ति देखते देखते शेष हो गए फिर भी मानव अपने इस क्षण भंगुर अस्तित्व पर न जाने क्यों इतना अभिमान और इसके लिये संघर्ष करता रहता है।

गति देखने का नियम

कितने की गति से कोई टाइप करता है यह देखने के लिये एक खास नियम है। यदि यह देखना है कि प्रति मिनट कितने अक्षर टाइप किए गए हैं तो सब अक्षरों, मात्राओं, अर्द्धविराम तथा पूर्णविराम चिह्नों को तथा शब्दों के बीच स्थानों को गिन कर उस संख्या में जितने मिनट में पूरा मजमून टाइप किया गया है उतने से भाग देने से प्रति मिनट की गति मालूम हो जायगी। समय बचाने के लिये किसी एक पंक्ति के अक्षरों को गिन कर जितनी पंक्तियाँ हैं उतने से गुणा करने से कुल मजमून के अक्षरों की संख्या मालूम हो जायगी। फिर उसी हिसाब से गति मालूम कर लेनी चाहिए।

यदि यह देखना है कि प्रति मिनट कितने शब्द टाइप होते हैं तो मजमून के सब शब्दों को गिन कर जितने मिनट में टाइप किया गया है उतने से भाग देकर गति मालूम करनी चाहिए। निम्नलिखित दो अभ्यासों में से एक के अक्षर गिन कर तथा दूसरे के शब्द गिन कर दिए गए हैं। दोनों को पहली बार टाइप करके गति देखनी चाहिए और फिर प्रत्येक को १५ बार टाइप करके यह देखना चाहिए कि कितनी गति बढ़ी।

अभ्यास ७४

साथ ही साथ ब्रिटिश साम्राज्यवाद की कमजोरी दिन पर दिन ज्यादा साफ होने लगी है। वह हमारे माली मसलों को हल करने में स्वभावतः लाचार है और न हमें हमारी भयानक गरीबी के पंजे से छुड़ा सकता है जो ज्यादातर उसी की पैदा की हुई है। वह भयंकर दमन के सहारे और हमारी नागरिक और जाती आजादी को भी छीन कर जी रहा है। वह हमारे चारों तरफ खुफियों का जाल फैलाए हुए है और उसकी हुकूमत का खास मददगार है मुखबिरों और भड़काने वालों का गिरोह। उसके मुलाजिम अपनी अयोग्यता और भीतरी खराबियों को ढकने के लिये एक दूसरे की तारीफ के गीत गा कर अपने दिल को दिलासा देते रहते हैं। दलील की जगह पुलिस के डंडों, सैनिक की संगीन और जेलखानों ने ले रखी है। और तो और, टैक्स लगाने और उसे वसूल और खर्च करने के अजीब सरकारी तरीकों का

समर्थन गुंडाशाही से किया जाता है। यह देख कर ताज्जुब होता है कि हमारे हुकाम अपनी ताकत बनाए रखने के वास्ते बेहूदगी के किस हद तक पहुँच गए हैं और यह देख कर तो दिल को सख्त चोट पहुँचती है कि हमारे ही कितने भाई जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद में अंग्रेजों से भी ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं, इन गंदी कार्रवाइयों में उनसे भी आगे बढ़ जाते हैं। उनकी दिमागी हालत इतनी गिर गई है, वे कांग्रेस और राष्ट्रीय आंदोलन से इतने डर गए हैं कि जिसे वे चाहते हैं उसी बात को ठीक समझने लगते हैं, अपनी ख्वाहिश के मुताबिक घटनाओं को गढ़ लेते हैं और सरकारी कागजों में इनको प्रकाशित करते हैं। हिंदुस्तान में ब्रिटिश गवर्नमेंट का जोर इसी पर कायम है, और लोग बिना इस्तगासा या मुकदमे के जेलों में बंद कर दिए जाते हैं या नजरबंद कर दिए जाते हैं।

(१४०४ अक्षर)

अभ्यास ७५

ब्रिटेन को स्वप्न में भी आशा न थी कि जर्मनी व इटली इस प्रकार उन्नति कर जायँगे। अबतक ब्रिटेन किसी तरह अपनी प्रभुता स्थापित किये रहा पर अब हर हिटलर व मुसोलिनी ही मध्य यूरोप के सर्वेसर्वा हो रहे हैं। समुद्री ताकत ब्रिटेन की इतनी शायद ही किसी की हो। इटली, फ्रांस और जर्मनी तीनों शक्तियों से ब्रिटेन अकेला ही समुद्री टक्कर ले सकता है, पर मुश्किल तो यह है कि लड़ाई में अब हवाई जहाजों व बम बरसाने के सामानों आदि की जरूरत है। जर्मनी ने चुपके चुपके अपनी हवाई शक्ति इतनी बढ़ा ली है कि ब्रिटेन और फ्रांस मिलकर भी उसकी विशाल हवाई शक्ति का मुकाबिला कठिनता से कर सकते हैं। इसी हवाई शक्ति के ऊपर हर हिटलर गर्व से कूद रहे हैं।

श्री चेम्बरलेन भी एक अत्यंत चतुर राजनीतिज्ञ हैं। चेकोस्लोवाकिया के लिये सारे यूरोप में युद्ध छेड़ देना आपने उचित न समझा, क्योंकि यदि विश्वव्यापी युद्ध छड़ जाता तो लंदन और पेरिस खाक हो गये होते और लड़ाई भी वर्षों तक जारी रहती। अंत में ये लोग जीतते अवश्य, पर इनकी आर्थिक दशा दो कौड़ी की हो जाती और यह नुकसान बीसों वर्षों में पूरा किया जा सकता। ब्रिटेन आत्मरक्षा की यथेष्ट तैयारी भी नहीं कर पाया था। श्री चेम्बरलेन ने समझा चलो हिटलर इतने से ही संतुष्ट हो जायँगे और आगे कदम न बढ़ायेंगे। पर इधर मामला कुछ दूसरा ही है। माँग पर माँग बढ़ती ही जा रही है। यद्यपि जर्मनी की आर्थिक दशा अत्यंत शोचनीय है तथापि हर हिटलर प्रतिदिन युद्ध के लिये अधिक तैयारी कर रहे हैं। हालैंड, मेमेल, डैनजिग व यूक्रेन आदि प्रदेशों पर हिटलर की आँख लगी हुई है। न जाने कब वे उन्हें पाने के लिये आक्रमण कर दें।

मुसोलिनी को विश्वास है कि स्पेन में जनरल फ्रैंको की विजय अवश्य होगी। ब्रिटिश मंत्रियों का रोम जाना विशेष सार्थक न हो सका। हाँ, उनका स्वागत जरूर खूब किया गया पर ऊपर से भभकी भी दी गयी कि यदि कोई भी शक्ति स्पेन में रिपब्लिकनों के सहायतार्थ सेना भेजेगी तो इटली को अख्तियार होगा कि वह जो चाहे करे। यह भी खूब रही। खुद तो अपने सैनिकों द्वारा जनरल फ्रैंको की सहायता कर रहे हैं और दूसरों से कह रहे हैं कि कोई शक्ति सैनिक आदि किसी भी तरह की सहायता स्पेन की सरकार को न दे। इसका अर्थ तो यह है कि फासिष्ट राष्ट्र धीरे धीरे एक एक देश जीतते जाँय और लोकतंत्रात्मक देश उनका मुँह देखा करें। यही न है आजकल की स्थिति।

(३१८ शब्द)

अभ्यास ७६

बहुत से ऐसे मजमून मिलते हैं जिनकी कई प्रतिलिपियाँ करनी पड़ती हैं। यदि एक ही मजमून की चार, छः प्रतिलिपियाँ करनी हों तो कार्बन कागज द्वारा बहुत आसानी से की जा सकती हैं। लेकिन यदि एक ही मजमून की बहुत सी प्रतिलिपियाँ करनी हैं तो इसके निम्नलिखित तीन साधन हैं।

१—प्रेस कापिंग सिस्टम

२—ग्लेटिंग प्रोसेस

३—स्टेंसिल कटिंग सिस्टम

इनमें से केवल स्टेनसिल कटिंग सिस्टम (Stencil cutting system) से ही टाइप राइटिंग से संबंध है। इस प्रकार किसी मजमून की बहुत सी कापियाँ करनी हों तो टाइप राइटिंग पर कार्बन पेपर द्वारा या स्टेंसिल कटिंग द्वारा काम लिया जा सकता है।

कार्बन कापी

बाजार में कई तरह के कार्बन पेपर मिलते हैं। ८ इं० चौड़ा १० इं० लंबा या ८ इंच, १२ इंच के कारबन विशेष कर उपयोग में लाए जाते हैं। रंग में काला, नीला, बैंगनी तथा हरा ही ज्यादा प्रचलित है। इन पर तीन तरह से रंग चढ़ा होता है। बहुत हल्का (Feather weight), मध्यम या मिडियम (medium) और बहुत गाढ़ा (Heavy) रंग चढ़ा हुआ कार्बन होता है। हलके रंग का कार्बन तब इस्तेमाल किया जाता है जब एक साथ १५ कापी लेनी होती है। यह बहुत पतला होता है। गाढ़े रंग का कार्बन एक दो कापी के लिये इस्तेमाल किया जाता है। यह बहुत मोटा होता है और जल्दी खराब नहीं होता। मध्यम (medium)

कार्बन ही विशेष कर इस्तेमाल किया जाता है जिससे ५–६ कापी तक निकाली जाती है।

कार्बन कागज की और दो किस्में होती हैं। एक तरह के कार्बन पर तो केवल एक ही तरफ रंग लगा होता है और एक तरह के कार्बन पर दोनों तरफ स्याही लगी होती है। दोनों तरफ स्याही लगे हुए कार्बन टाइप राइटर पर इस्तेमाल नहीं होते। टाइप राइटर पर केवल एक तरफ स्याही लगा हुआ कार्बन ही इस्तेमाल होता है।

जिधर स्याही लगी होती है उधर के हिस्से पर कुछ चमक होती है। जिस कागज पर कार्बन द्वारा प्रतिलिपि लेनी हो उसपर कार्बन का स्याही वाला हिस्सा होना चाहिए। टाइप राइटर पर कार्बन चढ़ाने के लिये दो कागजों के बीच कार्बन ठीक तरह से रखकर मशीन पर चढ़ाना चाहिए। मशीन पर तीनों को एक साथ लेकर कार्बन के स्याही वाले रुख को सामने रखकर बेलन पर चढ़ाना चाहिए। यदि कार्बन का स्याही वाला रुख सामने रहेगा तभी टाइप करने से बेलन पर दूसरा उल्टा रुख होगा, क्योंकि बेलन द्वारा कागज घूमकर उलट जाता है। जब पहले कागज के पृष्ठ पर कार्बन का उल्टा हिस्सा होगा तभी दूसरे पृष्ठ पर कार्बन की प्रतिलिपि हो सकेगी।

स्टेंसिल कटिंग

(Stencil Cutting)

किसी मजमून की बहुत सी प्रतिलिपियाँ लेने के लिये रोटरी मशीन (Rotary Duplicator) होती है। इसके लिये एक विशेष कागज होता है जिस पर हाथ से लिखने के लिये एक खास कलम होती है जिसे स्टाइलस (Stylus) कहते हैं। इसके लिये स्टेंसिल पेपर (Stencil Paper) का प्रयोग होता है जिसमें निम्नलिखित कागज रहते हैं—

१–पतला कागज—जो मोम लगे कागज के ऊपर होता है।

२–मोम लगा हुआ कागज—(Wax Sheet) इसी पर लिखा या टाइप किया जाता है।

३–मोटा मोमी कागज (Oiled Sheet)—जो मोम लगे कागज के नीचे रहता है।

जिस तरकीब से इन कागजों को एक दूसरे के बाद रख कर टाइप करना चाहिए उसी प्रकार यह बाजार में ठीक से लगा हुआ मिलता है। पीछे के मोटे मोमी कागज (Oiled Sheet) का किनारा कुछ उठा हुआ रहता है जिससे टाइप पर कागज चढ़ाने में सहूलियत होती है। उसमें चार छोटे छेद भी बने होते हैं जो रोटरी (Rotary) के हुक में लगा दिए जाते हैं।

मशीन पर स्टेंसिल कागज चढ़ाने के पहिले निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

१—अक्षरों (Types) को स्पिरिट और कड़े ब्रुश से खूब मजे में साफ कर लेना चाहिए। विशेष कर ब, व, क, ख, य, भ, ट, ठ, ड, ढ, छ को अच्छी तरह साफ करना चाहिए जिससे इनमें स्याही न लगी रहे।

२—रिबन इंडिकेटर (Ribbon Indicator) को सफेद दाग पर लाकर रिबन को (स्याही का फीता) अक्षरों और वेलन के बीच में आने से रोक देना चाहिए। यदि मशीन में रिबन इंडिकेटर न हो तो रिबन निकाल देना चाहिए।

३—स्टेंसिल कागज को अच्छी तरह देख लेना चाहिए कि उसमें कहीं दाग तो नहीं है या कहीं मुड़ा तो नहीं है, वह साफ है कि नहीं और ठीक तरह से तीनों कागज एक साथ लगे हुए हैं या नहीं।

४—स्टेंसिल काटते (टाइप करते) वक्त कोई गलती न हो, इस ख्याल से मजमून को पहिले एक स्टेंसिल कागज के बराबर किसी दूसरे कागज पर लिख लेना चाहिए।

निम्नलिखित ढंग से मशीन पर स्टेंसिल चढ़ाकर टाइप किया जाता है—

१—बेलन और फीडरोल्स के बीच 'फीड रोल रिलीज की' (Feed Roll Release key) द्वारा कागज चढ़ाने के लिये स्थान बना लेने के लिये उसे पीछे कर देना चाहिए।

२—स्टेंसिल कागज (पतले कागज और मोटे मोमी कागज के सहित) को पकड़ना चाहिए जिससे मोटा मोमी कागज सामने हो और बेलन पर कागज चढ़ाने पर पतला कागज सामने रहे। मोमी कागज से निकले हुए किनारे को नीचे करके बेलन के पीछे लगाना चाहिए। इस बात का ख़याल रखना चाहिए कि कागज़ पर बराबर दबाव पड़े।

३—फीड रोल्स रिलीज की (Feed Rolls Release key) के द्वारा फिर कसकर थम्ब ह्वील (Thumb wheel) को घुमाकर कागज को बेलन पर चढ़ाना चाहिए। कागज चढ़ाने पर यह देखना चाहिए कि पतला कागज सामने है कि नहीं।

४—एक बार फिर यह देख लेना चाहिए कि रिबन हटाया हुआ है या नहीं। रिबन यदि हटाया नहीं गया है तो हटा देना चाहिए, क्योंकि रिबन रहने से स्टेंसिल पेपर पर टाइप नहीं होगा और कागज भी बेकार हो जायगा।

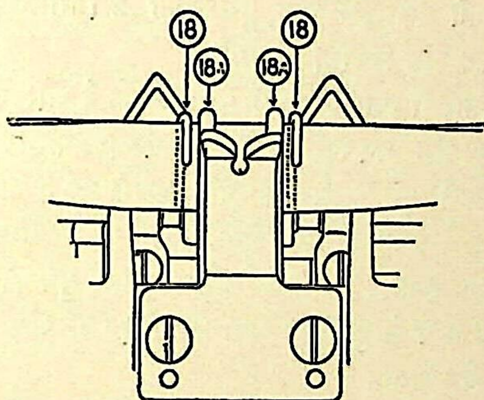
५—फुर्ती तथा हल्के हाथ से टाइप करना चाहिए। ब, व, ष, न, म, ख और ट, ठ अक्षरों को तो बहुत हल्के हाथ से टाइप करना चाहिए। संयुक्ताक्षरों के लिये भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

६—विराम चिह्न, जैसे बिन्दी, हलंत इत्यादि को बहुत हलके हाथ से टाइप करना चाहिए।

७—जब पूरा मजमून टाइप हो जाय तो कागज को बहुत सावधानी से निकाल लेना चाहिए। इसके पतले कागज को अलग करके दोनों कागजों को रोटरी पर लगा देना चाहिए।

८—स्टेंसिल पर यदि हस्ताक्षर करना हो तो स्टेंसिल कागज के नीचे टिन या कोई कड़ी चीज रखकर स्टाइलस (Stylus) से करना चाहिए।

अभ्यास ७७



स्याही–फीता का लगाना

(Changing of Ribbons)

मशीन में स्याही-फीता कहाँ से चलता है तथा इसमें कौन कौन से पुर्जे कार्य करते हैं, उनका स्थान मशीन के दिए हुए चित्र से अच्छी तरह समझा जा सकता है। दोनों तरफ दो छोटे दरवाजे लगे हुए हैं जो लगे हुए छोटे से हैंडिल को घुमाकर आसानी से खोले जा सकते हैं। इन दोनों दरवाजों के भीतर गड़ारी लगी होती है जिन पर स्याही-फीता लपेटा रहता है और टाइप करते समय एक से दूसरे पर चढ़ता जाता है। इन गड़ारियों को स्पूल (Spool) कहते हैं। फीता यदि एक स्पूल पर से दूसरे स्पूल पर चढ़ता न रहे तो टाइप नहीं हो सकता। जब सब फीता बाईं तरफ के स्पूल पर चढ़ गया हो और टाइप न होता हो तो दाहिने तरफ के दरवाजे से कुछ हट कर लगे पेंच, जिसे रिबन स्पूल क्रैंक (Ribbon spool crank) कहते हैं, भीतर की ओर दबा देने से दाहिने स्पूल पर फीता चढ़ने लगेगा और टाइप भी होने लगेगा। इसी प्रकार दाहिने से बाएँ स्पूल पर फीता लाने के लिए रिबन स्पूल क्रैंक को जरा बाहर खींच लाना चाहिए।

रिबन जब खराब हो जाय और दूसरा रिबन लगाना हो तो निम्नलिखित ढंग से बदलना चाहिए:—

१—पुराने फीते की रिबन स्पूल क्रैंक घुमा कर दाहिने स्पूल पर चढ़ा लेना चाहिए।

२—जब दाहिने स्पूल पर सब फीता आ जाय तो बाएँ स्पूल से फीते का सिरा, जो स्पूल के काँटे से अटका रहता है, खोल लेना चाहिए।

३—दाहिने स्पूल को, जिस पर पुराना फीता चढ़ा हुआ है, निकाल लेना चाहिए। स्पूल के आगे एक हुक लगा हुआ होता है जिससे स्पूल अटका रहता है, उसे ऊपर उठाकर स्पूल निकाला जाता है।

४—रिबन बाजार में स्पूल पर चढ़ा हुआ मिलता है और स्पूल पर 'दाहिना' (Right) लिखा होता है। नए स्पूल पर से करीब एक फुट फीता खोल कर रिबन को दरवाजे के अंदर से बाएँ स्पूल तक ले जाकर बाएँ स्पूल के हुक में अटका दिया जाय।

५—स्पूल के एक तरफ बड़ा छेद होता है और दूसरी तरफ छोटा-छोटा छेद हुक पर बाहर की ओर होता है। स्पूल के आगे लगे छोटे हुक को ऊपर से उठाकर स्पूल के बड़े छेद की तरफ से हुक पर चढ़ा कर पीछे को ओर जरा दबा देने से स्पूल ठीक तरह से बैठ जायगा।

६—कल उठाओ को कल बंद के द्वारा बंद करके दिया जाय जिससे रिबन केरियर (Ribbon Carrier) ऊपर उठ जाय।

७—दोनों स्पूलों से लगा हुआ रिबन हाथ से उठाकर रिबन केरियर के पीछे लगा दिया जाय और फिर रिबन को जरा झुका कर रिबन केरियर के हुक में लगा दिया जाय। इस प्रकार रिबन लगाने का कार्य पूरा होता है। (देखिए ऊपर दिया हुआ चित्र)

८—एक ही रिबन में दो रंग भी मिलते हैं—लाल और नीला। ऐसा रिबन लगाते समय यह ख्याल रखना चाहिए कि लाल रंग नीचे हो और नीला ऊपर।

९—बाईं और दाहिनी तरफ के लिये अलग अलग स्पूल मिलते हैं जिनमें बाएँ स्पूल पर 'बायाँ' और दाहिने स्पूल पर 'दाहिना' अंग्रेजी में लिखा होता है। इसलिये स्पूल को ठीक स्थान पर ही लगाना चाहिए।

१०—बिना आवश्यकता के रिबन को इधर उधर के स्पूलों पर न चढ़ाना चाहिए।

अभ्यास ७८

मशीन तथा उसके कल पुर्जे

अब हमें मशीन के खास खास कल-पुर्जों के कार्यों पर भी कुछ विचार करना है। मशीन में उसके फ्रेम तथा कुछ पेंच इत्यादि को छोड़कर टाइप करने के समय

सभी कल पुर्जे चलते और कार्य करते रहते हैं। नीचे थोड़े में भिन्न भिन्न पुर्जों के कार्य, अन्य पुर्जों से उनका संबंध, तथा स्थान आदि के संबंध में आवश्यक बातें बताई गई हैं।

अक्षर पंक्तियाँ

(THE KEY BOARD)

अक्षर पंक्तियों को देखने से विदित होगा कि अक्षर वर्णमाला के क्रम से नहीं रखे गए हैं; बल्कि "क" कहीं है तो "ख" उससे कहीं दूर है। इसका खास कारण है। वर्णमाला में कुछ ऐसे स्वर और व्यंजन हैं जिनका उपयोग अधिक होता है। उन अक्षरों को इसमें ऐसे स्थान पर रखा गया है कि वहाँ से वे आसानी से टाइप किए जा सकते हैं। ऐसे अक्षरों में अ उ ए य क व च त ह य द म और न हैं।

मशीन में अक्षर पंक्ति के निम्नलिखित और भी हिस्से हैं जिनके कार्य तथा उपयोग के विषय में पहिले ही अभ्यासों में बताया जा चुका है—

(१) अक्षर (Type Keys)
(२) कल बदल तथा कल बंद (Shift key and shift key lock)
(३) स्पेस बार (Space Bar)
(४) पीछे हटाओ (Back Space Bar)
(५) लाइन बढ़ाओ (Tabulation keys or Stop)

अक्षर

(TYPE KEYS)

अक्षर से तात्पर्य यहाँ उन अक्षरों से हैं जो बेलन पर जाकर टाइप करते हैं। ये किस ढंग पर बने हुए हैं तथा कैसे कार्य करते हैं, यही यहाँ बताया जायगा। प्रत्येक अक्षर एक अर्द्ध गोलाकार चिपटे लोहे की तीली पर बना होता है जिससे दो अक्षर या चिन्ह टाइप होते हैं। ये टेढ़ी तीलियाँ लोहे के पतले छड़ से लगी होती हैं जो मशीन के नीचे एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगी रहती हैं। इसी छड़ में ये तीलियाँ अक्षर बटनों की तीलियों से इस प्रकार जुड़ी हुई होती हैं कि अक्षर बटन पर दबाव पड़ने पर ये अपने स्थान से उठती है और अक्षर टाइप होते हैं।

कल बदल तथा कल बन्द

(SHIFT KEY AND SHIFT KEY LOCK)

अक्षर-पंक्ति में ये दोनों तरफ ऐसे स्थान पर रखे गए हैं जहाँ तक दोनों हाथ की छोटी उँगलियाँ आसानी से पहुँच सकें। ये टेढ़ी तीली के द्वारा मशीन के

भीतर के छड़ से जुड़े होते हैं और वहाँ से इनका सम्बन्ध ऊपर के बेलन तथा पूरी "कैरेज" से होता है। इस प्रकार जब इन्हें दबाया जाता है तब बेलन का छड़ ऊपर की ओर उठ जाता है और इस प्रकार ऊपर के अक्षर टाइप होते हैं। इनके दबाने से बेलन इतना ही उठता है जिससे ऊपर के अक्षर टाइप हो जायँ। बेलन गोल है तथा ये अक्षर सीधे हैं, इसलिये ऊपर नीचे करने से केवल एक ही टाइप होता है। यद्यपि दोनों अक्षर पास ही पास होते हैं।

जब कल पर से दबाव हटा लिया जाता है तो इसके नीचे का स्प्रिङ्ग बेलन से जुड़ी हुई तीली को नीचे खींच लेता है। इस प्रकार बेलन फिर अपने स्थान पर आ जाता है।

कल बन्द का कार्य तो पहले ही बताया जा चुका है। कल बन्द एक स्प्रिङ्ग द्वारा कल बदल की तीली से जुड़ा हुआ होता है और इसमें एक ऐसा हुक होता है जो इसके दबाए जाने पर मशीनों के फ्रेम में लग जाता है और इस प्रकार कल बदल को रोके रहता है।

स्पेस बार

(SPACE BAR)

मशीन के पीछे जिस पुर्जे पर "कैरेज" की चाल निर्भर रहती है, जिसे डाग (Dogs) कहते हैं, उससे बीच मे एक छड़ द्वारा स्पेस बार की दोनों तीलियाँ जुड़ी हुई होती है। जैसे ही स्पेस बार पर दबाव पड़ता है, स्प्रिङ्ग नीचे की ओर खिचती है और इस प्रकार "डाग" को एक स्थान तक चलाती है।

अभ्यास ७९

कैरेज

(THE CARRIAGE)

टाइप करते समय बेलन के साथ मशीन का जो भाग दाएँ बाएँ चलता है उसे कैरेज "The Carriage" कहते हैं। कैरेज के अध्ययन के लिये उसके भिन्न भिन्न यंत्रों के विषय में जानना होगा।

पूरे कैरेज की चाल में कुछ ऐसे यंत्र भी कार्य करते रहते हैं जो मशीन के अन्दर होते हैं और ऊपर से दिखलाई नहीं पड़ते। जो यंत्र ऊपर दिखलाई पड़ते हैं उन्हीं का यहाँ वर्णन किया जायगा।

कैरेज दो पटरियों पर अन्दर लगी हुई गड़ारियों के बल पर चलती है। इसकी एक चाल तो मशीन के यंत्रों द्वारा होती है और दूसरी हाथ से खींचने पर।

कैरेज-रिलीज या लीवर

बेलन के दोनों तरफ पालिश की हुई दो चिपटी पटरी लगी होती है जिसे कैरेज रिलीज या लिवर (The Carriage Release keys or Lever.) कहते हैं। कैरेज को किसी स्थान पर जल्दी से हटाने के लिये इसका उपयोग होता है।

लाइन स्पेस गाज और नौब

(THE LINE SPACE GAUGE AND KNOB.)

बेलन के दाहिनी ओर कुछ गोलाकार एक पतली सी पटरी होती है जिसपर एक दूसरे से बड़े तीन दाँत कटे होते हैं। इसे 'लाइन स्पेस गाज' कहते हैं।

इसके द्वारा पक्तियों के बीच स्थान दिया जाता है। इसके तीन दाँतों द्वारा पंक्तियों में कम बेशी स्थान छूटते हैं।

एक छोटा काँटा इसके ऊपर लगा रहता है, जो तीनों दाँतों में किसी पर हटा कर बैठाया जा सकता है। इसे 'लाइन स्पेस नौब' कहते हैं।

यदि सबसे छोटे दाँत पर नौब को बैठाया जाय तो पंक्ति एक दूसरे के बहुत पास पास टाइप होगी। यदि बीच के दाँत पर बैठाया जाय तो पंक्तियों के बीच एक अक्षर का स्थान छूटेगा। इसी प्रकार तीसरे दाँत द्वारा दो अक्षरों का स्थान छूटेगा।

सबसे छोटे दाँत का उपयोग पद्य, नोट या कुछ छूटी हुई बात हाशिये पर लिखने के लिये तथा किसी तालिका के बनाने में किया जाता है। बीच के दाँत का जिससे एक पंक्ति का स्थान छूटता है, साधारणतया सबमें उपयोग होता है। लेख, निबन्ध, पत्र तथा सरकारी कागजात सभी में पंक्तियों के बीच एक ही स्थान छोड़ा जाता है।

सबसे बड़े दाँत का उपयोग बहुत कम होता है। जहाँ किसी ऐसे लेख को टाइप करना है जिसमें अशुद्धियाँ अधिक हैं जिन्हें हाथ से ठीक करने की आवश्यकता है वहाँ अथवा खूबसूरती से कुछ टाइप करने में इसका उपयोग होता है।

कैरेज के अन्य यंत्रों के विषय में, विषय-प्रवेश में तथा आवश्यकतानुसार पिछले अभ्यासों में बताया जा चुका है।

पोर्टेबुल

स्वर-व्यंजन की बहुतायत के कारण अभी तक हिंदी के लिये जो बड़े टाइप राइटर (Standard Typewriter) बने हैं, वे भी पूर्ण नहीं हैं। ऐसी हालत में छोटी मशीन (Portable) का निर्माण करना और भी कठिन है; लेकिन काम चलाने के लिये ऐसी मशीनें भी तैयार हो गई हैं और आज इनका उपयोग भी बहुत होता है। छोटे छोटे दफ्तरों में तो इन्हीं का उपयोग किया जाता है। ये दोनों में सस्ते पड़ते हैं और इन्हें यात्रा आदि में भी साथ ले जाया जा सकता है, जब कि बड़ी मशीन को

आकार और वजन के कारण यात्रा आदि में नहीं ले जाया जा सकता। इसी से लोग छोटी मशीनों को अधिक पसंद करते हैं।

बड़ी मशीनों का जो माडल हमारे सामने है उसमें ४६ अक्षर रखे गए हैं। इन अक्षरों से यद्यपि हम पूर्णतया कार्य नहीं कर पाते, और कुछ अक्षरों के अभाव में हमें कभी कभी अशुद्ध संयुक्ताक्षर बनाने पड़ते हैं, जैसे द्ध के बदले ब्द बनाना पड़ता है, तो भी इसको और छोटा करने की समस्या हमारे लिये एक कठिन विषय है। जो छोटी मशीनें आजकल उपयोग में लाई जाती हैं उनमें केवल ४२ अक्षर हैं। इन चार बटनों के कारण छोटी मशीन में आठ अक्षर और चिह्न कम कर दिए गए हैं, और फ को हटा कर फ के लिए वही नियम रखा है जो क्ष के लिये है। इसी प्रकार छोटी मशीन में ध, क्ष, फ, ौ, ह्म, ष, ञ, रू और । का चिह्न नहीं है।

ध, क्ष, और ष के लिये इन अक्षरों का आधा अर्थात् ध्, क्ष्, और ष् दे दिया है। छोटी मशीन में भी हमारी निदर्शक पंक्ति वही होगी जो बड़ी मशीन में हैं। निदर्शक पंक्ति में ा मात्रा के ऊपर (In uppercase) ऐसा ही एक चिह्न और दिया गया है जो इन आधे अक्षरों के बाद टाइप करने से उनमें मिलकर पूरे अक्षर बन जाते हैं। इस प्रकार बड़ी मशीन में जहाँ ध, क्ष, और ष के लिये केवल एक बटन दबाना पड़ता है वहाँ इसमें दो बटन। इसी प्रकार फ के लिये भी हमें प पहिले टाइप करके, का चिह्न टाइप करना पड़ता है। ौ मात्रा के लिये भी हमें पहले ै मात्रा टाइप करके ा की मात्रा टाइप करनी पड़ती है। या े मात्रा टाइप करके ो मात्रा टाइप करनी पड़ती है।

ञ, रू, । और ह्म का अस्तित्व ही मिटा दिया गया है। इनमें ञ को तो हम किसी प्रकार टाइप नहीं कर सकते और ह्म के लिए हमें हलंत लगा कर काम चलाना पड़ता है। पूर्ण विराम के लिये ा मात्रा का उपयोग करना पड़ता है और रू के लिये र में ू की मात्रा नीचे लगानी पड़ती है। इस प्रकार हम किसी तरह अपना काम तो निकाल लेते हैं लेकिन इसमें समय अधिक लगता है, और बड़ी मशीन पर ४० शब्द गति प्राप्त करने के लिये जहाँ हमें तीन महीना लगता है वहाँ छोटी मशीन पर उतनी गति प्राप्त करने में कम से कम छ महीना लगेगा, और फिर भी हम अशुद्ध लिपि का प्रयोग करने के लिये बाध्य होंगे।

इतना सब कुछ होते हुए भी हम आवश्यकता के कारण छोटी ऐसी मशीन को रखते हैं और इसपर भी गति प्राप्त करना, इसकी शब्द-पंक्ति का अध्ययन करना आवश्यक है। जहाँ बड़ी मशीनों में ऊपर और नीचे वाली दोनों पंक्तियों में ११-११ अक्षर और चिह्न हैं, वहाँ छोटी मशीनों में केवल १०-१० अक्षर हैं। इसी प्रकार बीच की दोनों पंक्तियों में १२-१२ के स्थान पर केवल ११-११ अक्षर और चिह्न हैं।

निदर्शक पंक्ति में केवल ो और ौ मात्रा का चिह्न घटा दिया गया है और बाकी सब वैसे ही हैं। इसलिये जैसे बड़ी मशीन पर निदर्शक अक्षरों पर अभ्यास किया जाता है वैसे ही इसपर भी किया जायगा, और उसी प्रकार ऊपर नीचे वाले पंक्तियों का अभ्यास भी किया जायगा।

इसके पहिले जितने अभ्यास दिए गए हैं यदि उन्हें नियमानुसार किया जाय तो तीन महीने में ४० शब्द प्रति मिनट की गति प्राप्त करना कोई मुश्किल बात नहीं है। मेरे कई एक विद्यार्थियों ने ऐसा किया है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है गति बढ़ाने के लिये सबसे मुख्य बात यह है कि गति की चिंता छोड़कर नियमानुसार शुद्ध शुद्ध टाइप करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाय; यदि प्रारम्भ से ही इस नियम का पालन किया जाय तो गति अवश्य बढ़ जाती है। गति बढ़ाने के लिये कुछ लोग एक ऐसे ढंग का आश्रय लेते हैं जो गति बढ़ने से रोक देती है। वह ढंग यह है कि यदि आप ४० शब्द प्रति मिनट की गति चाहते हैं तो प्रत्येक चालीस चालीस शब्द पर निशान बना लीजिए और घड़ी रख कर एक मिनट में किसी प्रकार उस चालीस शब्द को टाइप करने की कोशिश कीजिए। ऐसा करने से दो एक रोज में चालीस शब्द की गति तो प्राप्त हो जायगी, लेकिन यह गति कभी स्थायी नहीं हो सकती। इसका एक कारण यह है कि "किसी प्रकार" टाइप करने के लिये स्वभावतः आपको देख कर टाइप करने के लिये अग्रसर होना पड़ेगा, और इस प्रकार आपकी गति कभी नहीं बढ़ सकती। ऐसे उदाहरण मुझे कई एक संस्थाओं में दिखलाई पड़े जहाँ विद्यार्थी कुछ फीस देकर इस विषय को सीखता है और किसी वैज्ञानिक प्रणाली के अभाव में अपूर्ण और अशुद्ध ढंग का आश्रय लेता है। इसलिये मैं यही सलाह दूँगा कि गति बढ़ाने के लिये इन सब उपायों का अवलम्बन न करके केवल नियमानुसार टाइप करना चाहिए।

अंत में पंद्रह अभ्यास इसलिये दिए जा रहे हैं कि यदि इनमें से प्रत्येक को दस वार शुद्ध टाइप किया जाय तो पचास शब्द तक गति अवश्य पहुँच जायगी। इन अभ्यासों में ऐसे अभ्यास रखे गए हैं जो सभी क्षेत्र के हैं। इनमें कई एक संयुक्तप्रांत, विहार, मध्यप्रांत और बरार व्यवस्थापिका सभा के भाषण हैं। इन भाषणों में हिंदी, अंगरेजी और उर्दू के वे शब्द विशेष कर मिलेंगे जो ऐसे स्थानों पर प्रयुक्त होते हैं। इनके अतिरिक्त 'आज' साप्ताहिक तथा अन्य पत्र पत्रिकाओं से कुछ अभ्यास लिए गए हैं। जिनमें हिंदी के साहित्यिक तथा बोलचाल के शब्द बहुतायत से मिलेंगे।

प्रत्येक अभ्यास के शब्दों को गिन कर संख्या दे दी गई है। प्रथम बार समय देखकर अपनी साधारण गति से अभ्यास को टाइप करना चाहिए। इन अभ्यासों के करते समय भी इस बात की चिंता छोड़ देनी चाहिए कि हमें गति बढ़ानी है,

बल्कि शुद्ध टाइप करने की ओर ध्यान देकर एक अभ्यास दस बार करना चाहिए और अंत में दसवीं बार फिर समय मिला लेना चाहिए। अभ्यासों के जो शीर्षक हों उन्हें कागज के मध्य में टाइप करना चाहिए। इन अभ्यासों के मध्य में भी कहीं कहीं शीर्षक आ गए हैं और उन्हें भी इसी प्रकार टाइप करना चाहिए। कागज के मध्य में टाइप करने का ढंग पिछले अभ्यास में बताया जा चुका है। इसी प्रकार इन पंद्रहों अभ्यासों के कर लेने पर कम से कम पचास शब्द प्रति मिनट की गति अवश्य हो जायगी।

अभ्यास ८०

कांग्रेस कार्यसमिति ने युद्ध के संबंध में जो नीति निर्धारित की है उसे कार्यान्वित करने का मौका निकट आता जा रहा है। यूरोप की असाधारण स्थिति के संबंध में अब किसी प्रकार का सन्देह करने की गुंजाइश नहीं रही। युद्ध की संभावना अत्यधिक बढ़ती जा रही है। ब्रिटेन भले ही डैंजिग के प्रश्न पर भी चुप्पी साध ले; संभव है पोलैण्ड के उस तंग भूभाग के संबंध में भी वह मौन हो जाय जो जर्मनी को पूर्वी एशिया से संबद्ध करता है; मुमकिन है पोलैंड के चतुर्थ बँटवारे के संबंध में यदि वह होने लगे और जिसकी आशंका है, ब्रिटेन न बोले, पर इससे यह नहीं समझा जा सकता कि मामला यहीं खतम हो जायगा। जर्मनी की उंगलियाँ इस समय घी में है। ब्रिटेन यदि इस मौके पर दब गया तो निस्संदेह वह अपनी सारी नैतिक शक्ति खो देगा, जिसके विनष्ट होने के बाद उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जायगा। जर्मनी के लिए यह स्वाभाविक होगा कि निर्बल पतित और अपमानित ब्रिटेन से वह अपनी और माँगें भी पूरी करा ले। उपनिवेशों की माँग लेकर उपस्थित होने में उसे देर न लगेगी। जिब्राल्टर की माँग का, जिसे लेकर फ्रांको उपस्थित हैं समर्थन किया जायगा। ये तमाम नये नये प्रश्न खड़े होंगे। ब्रिटेन दबता जायगा और दबते दबते क्या अपने को विनष्ट कर देने के लिए तैयार हो जायगा? इन बातों को देखते हुए हमें यह आशा नहीं होती कि युद्ध अधिक समय तक टल सकता है। श्री चेम्बरलेन की निकम्मी, निर्जीव और दब्बू सरकार के लिए भी अब अधिक सहन करना संभव न होगा। इस स्थिति में कांग्रेस कार्यसमिति के प्रस्ताव की ओर हमारा ध्यान जाता है, क्योंकि हमें अपने कर्तव्य की चिन्ता होती है। हमें खेद है कि ऐसे समय जब देश की सारी शक्ति संघटित होनी चाहिए थी, जब हमें विश्व के संमुख उपस्थित सबसे बड़ी समस्या का अध्ययन और उसके अनुसार अपना कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए था, हम गृह-कलह में पड़े हुए हैं। वर्गहितों का संघर्ष और साम्प्रदायिक तनातनी राष्ट्रदेह

को क्षत विक्षत कर ही रही थी—पर उससे भी अधिक भयंकर उन लोगों का परस्पर झगड़ा है जो भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध के स्तंभ रहे हैं, जिनपर देश का सारा उत्तरदायित्व है, जो राष्ट्र की आशा हैं और जिनके ही भरोसे भविष्य में कुछ होने की संभावना हम देखते हैं। हमारा मतलब कांग्रेसजनों के गृह-कलह से है। उग्रतावादी और प्रतिक्रियावादी कह कर हम परस्पर कीचड़ उछाल रहे हैं और कांग्रेस संघटन पर अधिकार जमाने तथा दलगत शक्तिवृद्धि के लिए परस्पर खींचा तानी कर रहे हैं।

आज मुख्य प्रश्नों की ओर किसी का ध्यान नहीं है। कांग्रेस कार्यसमिति ने जो प्रस्ताव स्वीकार किया है उसे किस तरह अधिक से अधिक उपयुक्त प्रकार से और प्रभावकारी ढंग से हम कार्यान्वित कर सकते हैं, इसकी ओर न कोई अपनी दृष्टि लगा रहा है और न विचार कर रहा है। अपने को उग्र कहने वाले अपनी उग्रता का परिचय कड़े प्रस्तावों और शब्दों के प्रयोग मात्र में दे रहे हैं। आवश्यकता तो इस बात की थी कि काम अधिक किया जाता और बोला कम जाता, पर इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। फारवर्ड ब्लाक की कार्यसमिति ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि कांग्रेस कार्यसमिति का निश्चय काफी नहीं है। वे अपनी उग्रता प्रकट करने के लिए एक कदम और आगे बढ़कर कह गये कि केंद्रीय असेम्बली के सदस्यों को पदत्याग कर देना चाहिये था। हम नहीं समझ पा रहे हैं कि इस प्रकार की बातों से कौन सा लाभ हो रहा है। भले ही अपनी उग्रता का परिचय दे दिया जाय पर इससे कोई उग्रकार्य भी होगा यह हमारी समझ में नहीं आ रहा है। यदि फारवर्ड ब्लाक के लोग देश में भावी संकट का सामना करने के लिए आवश्यक संघटन करते, यदि वे राष्ट्रीय सिपाहियों की नियंत्रित सेना खड़ी करते अथवा गांव गांव और शहर शहर में युद्धविरोधी प्रचार करते तथा भावी स्वातंत्र्य युद्ध के लिए कोई नया कार्य क्रम रखते अथवा तैयार करते तो हम उनकी उग्रता की सार्थकता समझ सकते थे। जो हो रहा है उसमें भी कुछ न करना और जो कहना उसे करने की शक्ति न रखना, यदि उग्रता है तो इस उग्रता से कोई लाभ होने वाला नहीं है। हम समझते हैं कि राष्ट्र के कर्णधारों को समय की गंभीरता का अनुभव करके परस्पर के इन कल्पित, अनुचित और अनावश्यक तथा हानिकारक मतभेदों और संघर्षों को समाप्त करना चाहिये। मुख से नहीं बल्कि कार्य से ही सिद्धि प्राप्त होती है। हमारा अपना विश्वास है कि किसी भी कार्यक्रम की उग्रता उसके शब्दों से नहीं बल्कि उसके पीछे उसे कार्यान्वित करने वाली शक्ति, बुद्धि और नीयत तथा प्रेरणा में सन्निहित है। नरम से नरम कार्यक्रम भी क्रांतिकारी हो सकता है, यदि उसके पीछे क्रांतिकारी मनोवृत्ति कार्य करती हो।

(७२५ शब्द)

अभ्यास ८१

हिंदुस्तान को जो राज कायम करना है, जो समाज बनाना है वह मुट्ठी भर लोगों के लिए नहीं, सारी जनता के लिए होगा। तभी वह सच्चा राज और समाज बना ऐसा कहा जा सकता है। अब तक जो राज्य-व्यवस्था यहां रही है और जो समाज बना हुआ है, उसमें समाज के सुख का तो खयाल रखा गया है, मगर उसकी आजादी और आजाद भावों से बननेवाली प्रणालियों और संस्कृतियों का और उनकी रक्षा का खयाल नहीं किया गया है। अब जो राज प्रणाली बनेगी, जो संस्कृति रची जायगी उसमें स्वाधीन भावों का पूरा खयाल रखा जायगा। क्या इस भावी राष्ट्र-निर्माण की कल्पनाओं का प्रतिबिंब हमारे वर्तमान साहित्य में मिलता है ?

हिंदुस्तान अहिंसात्मक साधन से आजादी हासिल करने के लिए प्रयत्नशील है और अब ऐसा दिखाई देने लगा है कि इसी तरीके से वह आजाद हो जायगा। यदि ऐसा हुआ तो हमारी शासन, रचना, सुधार, प्रगति संबंधी कल्पनाएँ आमूल बदल जायँगी। अब भी बदल रही हैं। अहिंसात्मक युद्ध का एक नया ही शास्त्र बन रहा है, इसी प्रकार अहिंसात्मक समाज व्यवस्था का शास्त्र भी बनेगा और बनाना पड़ेगा। क्या इस प्रवृत्ति और प्रयोगों का परिचय हमारे वर्तमान साहित्य से अच्छी तरह मिलता है।

हम यह मोटे तौर पर कह सकते हैं कि हिन्दी के कुछ लेखकों और कवियों ने भी गुलामी की पीड़ा को अनुभव किया है, आजादी की पुकार को सुना है, लेकिन उसके सच्चे स्वरूप को, सफल हो सकने योग्य साधन को, कितनों ने अच्छी तरह पहचाना है ? भावी भारतीय समाज की कल्पना तो शायद ही किसी को छू तक गई हो। इनपर अगर किसी ने लिखा है तो वह साहित्य सेवियों में नहीं, राष्ट्रसैनिकों में खपने वाले होंगे। इस प्रकार लिखनेवालों, या राष्ट्रभाषा का प्रचार करनेवालों को तो साहित्यसेवी कहानेवाले साहित्य सेवा के आँगन में आने लायक ही नहीं समझते। इधर कुछ दिनों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन में राष्ट्रीय वृत्ति के हिन्दी भक्तों का प्रभाव बढ़ रहा है तो बस हमारे ऐकांतिक साहित्य सेवी ऐसा मानने लगे हैं, मानो साहित्यसेवा के क्षेत्र में अनधिकार लोग घुस पड़े हों और साहित्य पर कुठाराघात हो रहा हो। उनके दिल में ऐसा डर न पैदा होता, वे इतना नाराज न होते, अगर हिन्दुस्तान के जीवन में उन्होंने अपने आप को डुबा दिया होता। वे उससे बिलकुल या बहुत कुछ अछूते हैं, इसीलिए उनकी रचनाएँ पाठक के हृदय को छूती नहीं हैं और न जनसमाज में प्रिय या प्रचलित ही होती हैं। हिन्दी साहित्यिकों को इस बात की बड़ी शिका-

यत रहती है कि हिन्दी लेखकों और साहित्यसेवियों की कोई कद्र नहीं करता, उन्हें अर्थकष्ट से पीड़ित रहना पड़ता है, और कुछ ऐसा लगता है जैसे पुरस्कार, पारिश्रमिक या ऐसी ही कुछ कसौटी उन्होंने बना रखी है किसी लेखक की सफलता की, उसकी कद्र की। पुरस्कार, रुपए, रोटी की जिन्हें शिकायत रहती है, उन्होंने क्या तो साहित्यिक के आदर्श और जिम्मेदारी को समझा है और क्या उनसे साहित्य-सेवा होगी या हुई होगी? यह समझना भूल है कि दिमाग की कोरी कल्पनाओं से, मन की मस्त हिलोरों से, कोई साहित्य सृजन कर सकता है, जब तक कि वह जीवन की गहराई में गोते न लगाता हो और उनमें से रत्न चुन चुन कर न लाता हो। जिन कल्पनाओं, भावों और विचारों का जीवन से, जीवन की अनुभूतियों से कोई नाता न हो, हमारे आसपास के नित्य और प्रत्यक्ष जीवन से जिनका लेन-देन न होता हो, उनमें न सजीव प्रेरणा रहती है न वास्तविक अनुभूति की अभिव्यक्ति। वे कल्पना-जगत के अथवा मिथ्या हैं। इसीलिए वे लोकहृदय पर अधिकार नहीं जमा सकते।

जीवन या मानव जीवन, अमर प्रेरणा, अनंत अनुभूति और दिव्य संदेशों का स्रोत है। उससे सूखे रहकर हम न खुद ही जीवन पा सकते हैं न दूसरोंको दे सकते हैं। जीवन का लक्ष्य या आदर्श तो हमें सिर्फ इस बात के लिये जागृत और सावधान रखता है कि हम गलत दिशा में तो नहीं जा रहे हैं। परंतु जीवन का वर्तमान हमें यह सिखलाता है कि किस समय क्या कहें, क्या लिखें और क्या करें? घर में आग लगी है, उस समय जो साहित्यसेवी शृंगाररस का काव्य लिख रहा होगा, वह क्या सत्य की, जीवन की, या साहित्य की सेवा का दावा कर सकता है? जो अनुभूति आसपास की विकलता, वेदना, आनंद, उल्लास यानी सुख दुख से अछूती रहती है, वह सत्य की अनुभूति कैसे हो सकती है? जिन साहित्यसेवियों के उच्च विचार, सुंदर भाव और दिव्य तत्त्व उनके दैनिक जीवन से मेल नहीं खाते, उनकी साधना के विषय नहीं बनते, वे यदि लोगों को खोखले ही लगें और लोगों में अधिक दिन तक न ठहरें तो यह किसका कसूर? (६३५ शब्द)।

अभ्यास ८२

अध्यक्ष महोदय!

आज जो कट आया है उसके भाषण में कोआपरेटिव के फेल होने का सब कसूर पतपेढ़ी के मेम्बरों को लगाया जाता है। मेरी समझ में मेम्बरों से कई दर्जे कोआपरेटिव चड़बड़ के बड़े बड़े अफसर और कार्यकर्ता जिम्मेदार हैं। वे इसका बहुत विचार करते थे कि किस मेम्बर को कब और कितना रुपया कर्ज दें, किस मेम्बर की क्या हैसियत है? इतनी चौकसी होने पर भी कर्जदार गुनहगार ठहराए जाते हैं, यह बड़े दुःख की बात है। कोआपरेटिव चड़बड़ में बड़े बड़े आफिसर हैं और इन-

क्वायरी होते हुए भी कर्ज क्यों डूबने लगे ? अब जब बैंक के फेल होने का नतीजा आया तो लोगों का ख्याल इधर जाने लगा। इसके ठीकेदारों को दोपट चौपट कैसे रकम मिली, इसके लिये इस समय मेरे पास आकड़ों का सबूत नहीं है, लेकिन हाँ ! इतना तो कह सकता हूँ कि दोपट चौपट तक तो क्या छपट तक रकम वसूल की गई है ! एक रुपया सैकड़ा चक्रवृद्धि व्याज की दर से कोई भी रकम ६ साल में दोपट हो जाती है। जिन कर्जों पर अवार्ड लिया जाता है उसके लिये १। रुपये का व्याज लगाया जाता है। १। रुपये की दर से यह रकम और भी सवाई हो गई, इसमें कोई संदेह ही नहीं। सेंट्रल बैंक के बचाने के लिये चारों ओर से आवाज आ रही है मगर पेढ़ी के बचाने के लिये थोड़े लोगों का ख्याल जा रहा है। आफिसर्स का भी ख्याल इस ओर नहीं जा रहा है। वे साफ कहते हैं कि ठेविदारों का पैसा वापस करो। लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर ठेविदार सीधे से अपने पैसे लेलें तो इस हालत में भी हम काश्तकारों से विनती करेंगे कि वह अपना कर्ज मुद्दल अदा कर दें। अगर ठेविदार मुद्दल लेने को तैयार है तो उसको देने के लिये जनता सरकार की मदद चाहेगी। सरकार मदद करेगी तो वे वापस करेंगे, लेकिन सरकार इसे मंजूर करेगी इसमें मुझे शंका मालूम होती है। अगर ठेविदार मुद्दल लेने को तैयार हों तो यह सारी रकम वहुत जल्द अदा हो सकती है और उस चड़बड़ को अपने हाथ में लेने को कुछ लोग तैयार हैं। जिन मेम्बरों ने चड़बड़ से लेन देन किया वे तवाह हो गए। एक मेम्बर सिर्फ इसलिये मर गए कि उनके ऊपर सिर्फ ८०० का कर्जा था और उनसे २००० का जवाव उठाया गया था। उनके बाल बच्चे तवाह हो गए। ज़मीन हिरासत में ले ली गई। इसी तरह से जमीन हिरासत में होती गई। आज जमीन की कीमत १।४ हो गई है, अगर यही दशा रही तो कोआपरेटिव चड़बड़ क्या स्टेट्स भी लिक्वीडेशन् में आ जावेंगे। हम विनती करते हैं कि कोआपरेटिव आपत्ति के समय व्याज बंद कर दें। यह कोआपरेटिव चड़बड़ की रीति है जो दोपट, चौपट व्याज लेती है, दूसरा कोई नहीं लेता। यह बहुत अन्याय हो रहा है। इससे गवर्नमेंट ही बचा सकेगी। अगर अपने ऊपर कुछ जिम्मेदारी आवे तो उसे भी लेना चाहिए। अगर आज कर्जा लेनेवाला किसी चड़बड़ से अपने छुटकारे की बात तय कर लेता है तो ऊपर के अफसर कहते हैं कि यह नहीं हो सकता।

२७ साल से ली गई रकम पर व्याज लेना और बुड़ीत रकम पर इन्टरेस्ट वसूल करना कोआपरेटिव चड़बड़ में ही होता है। इससे इसके अधिकारी बदनाम हो गए। अब गवर्नमेंट ही इसको बचाए तो बचाए दूसरी कोई सूरत नहीं मालूम होती। इस आपत्ति से बैंक को बचाने के लिये दाम दुपट न लिया जाय, मुद्दल ले लिया जाय। (५४२ शब्द)

अभ्यास ८३

शेक्सपीयर के टेम्पेस्ट नाटक के साथ कालिदास के शकुन्तला नाटक की तुलना करने का भाव मन में सहज ही उदित होता है। इनके बाह्य सादृश्य और आन्तरिक अनैक्य आलोचना करने के उपयुक्त विषय हैं।

निर्जनलालिता मिरैण्डा के साथ फर्डिनैण्ड का प्रणय वैसा ही है जैसा तापस-कुमारी शकुन्तला के साथ दुष्यन्त का। घटना-स्थल में भी सादृश्य है—एक ओर समुद्रवेष्टित द्वीप है तो दूसरी ओर तपोवन।

इसी प्रकार दोनों के कथा भाग में एकता है। किन्तु इन दोनों के काव्यरस का आस्वादन एकदम भिन्न है। इसका अनुभव पढ़ने से ही हो सकता है।

यूरोप के कविकुलगुरु गेटे ने एक ही पद्य में शकुन्तला की समालोचना की है। उन्होंने काव्य को खण्ड करके विच्छिन्न नहीं कर दिया है। उनका पद्य दीपवर्तिका की शिखा की भाँति छोटा है, पर दीपशिखा की भाँति ही वह सारी शकुन्तला को क्षण भर में उद्भासित करके दिखा भी देता है। उन्होंने एक ही बात कही है; वह यह कि यदि कोई तरुणावस्था के फूल और परिणतावस्था के फल तथा यदि कोई मर्त्य और स्वर्ग एक साथ देखना चाहे तो उसे शकुन्तला में दिखलाई पड़ेगा।

बहुत से लोग इसे कवि का उच्छ्वासमात्र समझ उसकी ओर गहरा ध्यान नहीं देते। वे साधारणतः इसका अर्थ यही समझते हैं कि शकुन्तला नाटक अतीव उपादेय है। किन्तु यही बात नहीं है। गेटे का यह पद्य आनंद की अत्युक्ति ही भर नहीं है, ऐसा रसज्ञों का विचार है। इसमें कुछ विशेषता है। कवि ने इसे विशेष भाव से ही कहा है। शकुन्तला में एक गम्भीर परिणति का भाव है। वह परिणति फूल से फल में, मर्त्य से स्वर्ग में और स्वभाव से धर्म में परिणति है। मेघदूत में जैसे पूर्व मेघ और उत्तर मेघ है, अर्थात् पूर्व मेघ में पृथ्वी के विचित्र सौन्दर्य का पर्यटन करके उत्तर मेघ में अलकापुरी के नित्य सौन्दर्य में उत्तीर्ण होना पड़ता है, वैसे ही शकुन्तला में एक पूर्व मिलन और एक उत्तर मिलन है। प्रथम अङ्क के उस मर्त्यलोक सम्बन्धी चञ्चल, सौन्दर्यमय तथा विचित्र पूर्व मिलन की यात्रा ही शकुन्तला नाटक है। यह केवल विशेषतः किसी भाव की अवतारणा नहीं है और न विशेषतः किसी चरित्र का विकास ही है। बल्कि यह सारे काव्य को एक लोक से अन्य लोक में ले जाना और प्रेम को स्वभाव सौन्दर्य के देश से मंगल सौन्दर्य के अक्षय स्वर्ग धाम में उत्तीर्ण कर देना है। इस प्रसंग की आलोचना विस्तार रूप से हमने एक दूसरे ही प्रबंध में की है, इससे यहाँ उसकी पुनरुक्ति करना नहीं चाहते।

स्वर्ग और मर्त्य का जो यह मिलन है, इसे कालिदास ने सहज सम्पादित कर लिया है। उन्होंने फूल को इस सहज भाव से फल में परिणत कर दिया है, मर्त्य की सीमा को उन्होंने इस प्रकार स्वर्ग के साथ मिला दिया है कि बीच का व्यव-

हार किसी के दृष्टिगोचर नहीं होता। प्रथम अङ्क में शकुन्तला के पतन के बीच मृत्युलोक की कोई बात छिपाई नहीं गई है। उसमें वासना की कितनी प्रबलता है, इसको कवि ने दुष्यन्त और शकुन्तला के व्यवहार से स्पष्ट कर दिया है। यौवन मदमत्तता के हाव, भाव, लीला, चाञ्चल्य, परम लज्जा के साथ आत्मप्रकाश के प्रबल संग्राम, आदि सभी बातों को खोलकर रख दिया है। यह शकुन्तला की सरलता का निदर्शन है। अनुकूल अवसर में इस भावावेश के आकस्मिक आविर्भाव को रोकने के लिए वह पहिले से प्रस्तुत नहीं थी। उसने अपने को दमन करने के लिए—छिपा रखने के लिए कोई उपाय नहीं किया था। जो हरिणी व्याध को नहीं पहचानती, वह क्या उसके बाणों से बहुत देर तक कभी बच सकती है ? शकुन्तला कामदेव को अच्छी तरह पहचानती नहीं थी। इसीसे उसका मर्मस्थान अरक्षित था। न तो कामदेव का और न दुष्यन्त का, किसी का उसने कभी अविश्वास नहीं किया। जिस प्रकार, जिस जंगल में हमेशा शिकार हुआ करता है उस जंगल में व्याध को आत्मगोपन के लिए अधिक चेष्टा करनी पड़ती है, उसी प्रकार जिस समाज में स्त्री पुरुषों का सहज ही सदा सम्मिलन हुआ करता है, उस समाज में कामदेव को बड़ी सावधानी के साथ अपने को छिपाकर काम करना पड़ता है। तपोवन की हरिणी जिस भाँति शङ्कित नहीं रहती, उसी भाँति तपोवन की बालिका भी सतर्क नहीं रहती। (५४८ शब्द)

अभ्यास ८४

जब हम रात में आकाश की ओर देखते हैं, तब अनेक तारे चमकते हुए देख पड़ते हैं। उन्हें देखकर हमारे मन में अनेक प्रश्न—ये तारे कितनी दूरी पर हैं, ये कितने बड़े हैं, चलते हैं या स्थिर हैं, यदि चलते हैं तो किस गति से ? क्या ये बराबर स्थायी रहते हैं या प्राणियों के सदृश जीते मरते रहते हैं, ये क्यों चमकते हैं, इत्यादि—उठते हैं। अनेक वर्षों के अन्वेषण के फलस्वरूप वैज्ञानिक इन प्रश्नों के हल करने में समर्थ हुए हैं। वैज्ञानिकों ने निश्चित रूप से यह पता लगाया है कि ये तारे क्यों चमकते हैं।

तारे चमकते हैं क्योंकि वे गरम हैं। गरम चीजें चमकती हैं। ईंट की भट्ठियाँ जब जलती हैं तब वे रात में दूर से चमकती हैं। लोहे की भट्ठियाँ और भी तेज चमकती हैं। तारों से हमारे पास चमक आने के लिये उन्हें बहुत तेज गरम होना चाहिए क्योंकि हमारे और उनके बीच बहुत बड़ी दूरी है। वैज्ञानिकों ने जो प्रकाश उन तारों से हमारे पास आता है, उसके रंग और तीव्रता से उन तारों के तापक्रम का पता लगाया है। जो तारे लाल रंग के होते हैं, उनका तापक्रम २००० डिगरी से ३००० डिगरी शतांश होता है। सूर्य का तापक्रम ५००० डिगरी शतांश कूता गया है। अभितार सिरिअस सदृश सफेद तारों के तापक्रम १०००० डिगरी

श० और मृगराशि के तारों के २०००० डिगरी श० और सबसे अधिक चमकीले तारों के तापक्रम ५००८० डिगरी शतांश आँके गए हैं। इन तारों का तापक्रम इतना ऊँचा क्यों है और हमें कैसे मालूम होता है कि इनका तापक्रम इतना ऊँचा है ? तारों का उपर्युक्त तापक्रम वस्तुतः वाह्य तल का तापक्रम है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनके आभ्यंतर भागों का तापक्रम और भी ऊँचा है। भीतर से वाहर गरमी निकलती रहती है पर यह कैसे मालूम होता है कि उनके भीतर के भाग अधिक गरम हैं। ग्रहों पर सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से हमें सूर्य के पिंड का पता लगता है। इस पिंड का घनत्व जल की तुलना में १'४ गुना भारी है। इस पिंड के अभ्यंतर भाग पर उसके बाह्यतल के आकर्षण से अपरिमित दवाव उत्पन्न होता है। यदि पिंड के सब भागों का घनत्व एक सा हो, जैसा होना साधारणतया संभव नहीं, तो पिंड के केंद्रपर प्रति वर्ग इंच पर ९८,०००,००० टन का दबाव होगा। इस बृहत् दबाव से ही पिंड गरम हो जाता है। सूर्य पिंड के केंद्र पर गणना से यदि वहाँ केवल हाइड्रोजन नामक सबसे हल्की गैस हो तो उसका तापक्रम लगभग २०,०००,००० डिगरी शतांश पर पहुँच जाता है। यह बात सब तारों के संबंध में लागू है। पर यह तापक्रम वस्तुतः तारों में स्थित तत्वों के परमाणु भार पर निर्भर करता है। यदि वहाँ लोहा है तो लोहे का परमाणु भार ५६ होने के कारण उसका तापक्रम उपर्युक्त अंक से ५६ गुना अधिक बढ़ जायगा। इस कारण सूर्य का तापक्रम वस्तुतः उसके पिंड पर स्थित तत्वों पर निर्भर करता है। पर उस ऊँचे तापक्रम पर सब तत्व गैस की अवस्था में ही स्थित रह सकते हैं। अतः सब तत्व एक तप्त गैस के सदृश ही व्यवहार करते हैं। ये गैसें उस ऊँचे तापक्रम पर परमाणु दशा में ही रहती है और प्रोटून और एलेक्ट्रन से वनी हैं। तत्वों की तौल प्रोटून के कारण होती है, एलेक्ट्रन की तौल अपेक्षाकृत वहुत अल्प है। अतः इसके कारण तौल की गणना बहुत सरल हो जाती है।

यदि सूर्य का पिंड केवल हाइड्रोजन से बना हो तो उसका तापक्रम १ करोड़ डिगरी होता है, यदि हीलियम से बना हो तो २ करोड़ ६। लाख डिगरी और यदि अन्य भारी धातुओं का बना हो तो ४ करोड़ डिगरी होता है। यदि हम एक तारे के तापक्रम की दूसरे तारे के तापक्रम से तुलना करें तो मालूम होता है कि यह पिंड व्यासार्ध पर निर्भर करता है। अग्नि तारे का पिंड सूर्य के पिंड से २'४ गुना बड़ा और व्यासार्ध १'८ गुना बड़ा होता है। इस कारण इसके केंद्र का तापक्रम सूर्य के केंद्र के तापक्रम से ३० प्रतिशत ऊँचा होना चाहिए। सबसे बड़ा तारा ज्येष्ठा है। इसका पिंड सूर्य से ४६ गुना बड़ा और इसका व्यासार्ध २० गुना बड़ा है। इस तारे के अभ्यंतर का तापक्रम सूर्य के तापक्रम से दूना होना चाहिए।

(६१६ शब्द)

अभ्यास ८५

एशिया के दो प्रसिद्ध व्यक्ति

च्यांग काई शेक

श्री जान गुंथर ने अपनी इनसाइड एशिया नाम की पुस्तक में एशिया के कई प्रसिद्ध व्यक्तियों के संबंध में बड़ी रोचक बातें लिखी हैं। चीन के च्यांग काई शेक बड़े संयम से रहते हैं। वे न शराब पीते हैं और न तमाखू, कहवा और चाय से ही उन्हें कोई रुचि है। अपनी डायरी लिखने का उन्हें बड़ा शौक है, एक बार इसी ने उनकी जान बचाई। सियान विद्रोह के दिनों में उनकी डायरी कुछ विद्रोहियों के हाथ पड़ गई, उसको पढ़कर वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना विचार ही बदल दिया। एकांत में रहना उन्हें बहुत पसंद है। १९३० ई० से उन्होंने ईसाई धर्म स्वीकार करलिया है। उनकी स्त्री ईसाई घराने की है। जब पहले उससें उनका प्रेम हुआ तो उसके घर वालों ने कहा कि बिना ईसाई हुए विवाह न हो सकेगा। इस पर काई शेक ने जवाब दिया कि मुझे इसमें आपत्ति नहीं है, परंतु इससे मेरी प्रेयसी मुझे बड़े कमजोर स्वभाव का आदमी समझेगी। इस उत्तर से सब लोग बड़े प्रसन्न हुए और उनका विवाह हो गया। अपनी स्त्री से जिसकी शिक्षा अमेरिका में हुई है, उन्हें बड़ा प्रेम है। उसी के प्रभाव में पड़कर वे ईसाई हो गए, पर अपने यहाँ के पूर्वज पूजन का भाव उनके हृदय में अब भी बना हुआ है।

वे पक्के अनुशासक हैं इसलिये उनमें कुछ कठोरता भी है। काई शेक का अर्थ है 'सीमा पत्थर' और आप हैं भी वैसे ही। विदेशी शत्रुओं को बाहर रखने के लिये दो हजार वर्ष पूर्व बनी हुई प्रसिद्ध चीनी दीवार से वे कहीं अधिक दृढ़ हैं। देश की एकता के वे प्रतीक हैं, उनमें धैर्य्य की कमी नहीं है। १९३६ ई० में जब साम्य-वादी विद्रोहियों के नेता चांग ने उन्हें गिरफ्तार किया तो उसकी आँखों में आँसू आ गए और उसनें उनके पैर पकड़ कर प्रार्थना की कि आप हमलोगों की कुछ माँगें मान लीजिए। पर काई शेक ने तुरन्त उत्तर दिया कि यदि मेरा वध करना है तो कर डालो पर मैं अपने सिद्धांतों से कभी डिग नहीं सकता।

रजा शाह पहलवी

ईरान के रजा शाह पहलवी ही संसार के एक ऐसे शासक हैं जो होटलों का व्यवसाय करते हैं। उनका बहुत सा रुपया वहाँ के प्रसिद्ध होटलों में लगा हुआ है। अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये उन्हें होटलों में यात्रियों की सुविधा का बड़ा ध्यान रहता है। ऊँटों से उन्हें खास चिढ़ है, राजधानी तेहरान में कोई ऊँट घुसने

नहीं पाता। उनकी नींद जरा सा शोर होने से भी टूट जाती है, इसी लिए अपनी यात्रा में जब वे किसी स्थान पर पहुँचते हैं तो वहाँ के कुत्ते पहले ही मार दिए जाते हैं, जिसमें उनके भूँकने से शाह की नींद में खलल न पड़े। रेल से उनको बड़ा शौक है, ईरान में पहले पहल उन्हीं ने इसका प्रचार किया। ४५ करोड़ रुपया लगाकर हजार मील की एक लाइन खोली जा रही है जिसके बीच में सौ सौ मील चौड़े पहाड़ और दूर तक रेगिस्तान हैं। इस में मजा यह है कि स्टेशन पहले से ही बना दिए गए हैं, पर लाइन का पता तक नहीं है।

उनकी राष्ट्रीयता बड़ी उग्र है। तेहरान की सड़कों पर कोई विदेशी भी फारसी के सिवा और किसी भाषा में अपना नाम तक लिखकर नहीं टाँग सकता। बीमार पड़ने पर शाह अपना इलाज ईरानी डाक्टरों से ही कराते हैं। अपने देश तथा अपनी शान का उन्हें बड़ा ध्यान रहता है। वाशिंगटन में मोटर तेज चलाने के कारण ईरानी राजदूत का चालान हो गया, इसपर अमेरिका से सारा राजनीतिक संबंध तोड़ दिया गया। एक फ्रांसीसी पत्र ने शाह का कुछ मजाक उड़ाया था, इसका पता लगते ही ईरानी राजदूत वहाँ से वापस बुला लिया गया। किसी पत्र में ईरान या उसके शाह के संबंध में कोई बात छपे तो उसकी कतरन शाह के पास अवश्य पहुँचनी चाहिए। इसके लिये अफसरों को कड़ी हिदायत है।

(५२७ शब्द)

अभ्यास ८६

जनाब वाला !

हिंदुस्तान के इतिहास में डिमोक्रेसी अब भली है या बुरी है, यह अलिफ, बे, की बातें हैं। किसी डिमोक्रेसी की कामयाबी उस वक्त तक नहीं हो सकती जिस वक्त तक कि नागरिकता क्या है, लोगों की समझ में नहीं आ जाती। इसके लिये यह जरूरी है कि शिक्षा में तरक्की हो। हुजूरे वाला ! हिंदुस्तान के अंदर यह नकशा है कि यहाँ पर शिक्षा साढ़े चार या साढ़े पांच फीसदी के करीब है। ख्वाह आप कितनी ही कोशिश करें लेकिन डिमोक्रेसी को कामयाब बनाने के वास्ते यह जरूरी है कि शिक्षा बढ़ाई जावे। मैं अगर्चे यह हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी के मजमून के सिलसिले में इस नुकते ख्याल को पेश कर रहा हूँ, लेकिन मैं एक नुकता ख्याल जो इसकी तह में है उसको वाजेह करना चाहता हूँ। वह यह है कि हिंदुस्तान में फी शख्स खर्चा जो शिक्षा पर किया जाता है वह करीब छः सात आने के दरमियान में है। अमेरिका, कनाडा और दूसरे मुल्कों के अंदर जो इखराजात किए जाते हैं। उनमें तालीम पर २०० रुपए फी कस खर्च किया जाता है। अगर

आप उस स्टैंडर्ड से तालीम हिंदुस्तान में करना चाहते हैं, जैसी अमेरिका और दूसरे मुल्कों में होती है तो आपको १०० रुपया और १५० रुपया के नजदीक फी कस खर्च करना चाहिए। तब आप आला किस्म की तालीम हिंदुस्तान में जारी कर सकते हैं। लेकिन मुश्किल यह है कि आप इतना सर्फ नहीं कर सकते। इससे ज्यादा युक्तप्रांत की गवर्नमेंट नहीं दे सकती। खर्च की जितनी कफील हो सकी है वह छः आने और सात आने फी कस है। आप जोर लगा लें चाहे कांग्रेस गवर्नमेंट हो या कोई और हो, और बजाय छः आने के बारह आने खर्च कर दें तो नतीजा यह होगा कि मिंजुमला सतरे के आप दो के बजाय एक मदरसे में भेज देंगे और बजाय ५१।२ के १० या ११ आदमी दाखिल कर सकेंगे। वह जमाना गया जिस वक्त लार्ड मेकाले का यह कौल था कि हमको वह जुगराफिया नहीं चाहिए कि जिसके अंदर शहद और दूध के समुद्र हों और न वह इतिहास चाहिए जिसमें हजार हजार बरस की एक एक की सल्तनत हो; हमको ऐसा जुगराफिया नहीं चाहिए जिसमें बीस बीस फीट लंबे आदमी हों। हिंदुस्तान इतना बड़ा मुल्क है जिसका एक सूबा इतना बड़ा है जितना बड़ा कि जर्मनी, इंगलैंड और जापान है। हमारे सामने यह मसला है कि हमको शिक्षा के विस्तार को बढ़ाना है। लिहाजा तालीम के खर्चे को ज्यादा करना पड़ेगा। इस सूबे की तालीम यहाँ की जबान में होने से आसानी होगी। जिस तरीके से आप यूनिवर्सिटी में शिक्षा दे रहे हैं, मेरी राय नाकिस में इस मुल्क की हालत के ख्याल से यह जरूरी है कि हिंदुस्तान के वास्ते हिंदुस्तानी जबान अख्तियार की जाय और इसी में तालीम दी जाय। बहुत सी बहस इस मामले में इस शक्ल में आ गई है कि यह जबान उर्दू हो या हिंदी, तो मेरे ख्याल में यह मामला साफ है। जहाँ तक जबान का ताल्लुक है, हिंदुस्तानी जबान एक है। हिंदुस्तानी जबान में अगर आप अरबी और फारसी के लफ्ज ज्यादा कर दें तो बिल अमूम गलेतुलआम फसीहुम उसको आप उर्दू कहते हैं। अगर इसमें संस्कृत और इस किस्म के अल्फाज ज्यादा कर देंगे तो उस भाषा को शुद्ध भाषा कहेंगे या हिंदी कहेंगे। बहर कैफ जिन लोगों को अपने इल्म व अदब से प्रेम हो वे अपने इल्म और अदब को फरामोश न करें लेकिन हिंदुस्तान की जो जरूरियात हैं उनके लिये इस बात की जरूरत है कि हिंदुस्तानी जबान इस सूबे की तालीम के वास्ते कबूल कर ली जाय। सन् १९२१ ई० में कांउसिल के अंदर मैंने एतराज किया था और वह गवर्नमेंट ने मंजूर भी किया था कि इस मुल्क के अंदर आला तालीम का इंतजाम हिंदुस्तानी जबान में होना चाहिए, लेकिन हनोज रोज अव्वल है। और इस रिजोल्युशन को कार्यरूप देने के लिये यहाँ पर लोगों ने एक एकेडेमी कायम कर रखी है।

(५२० शब्द)

अभ्यास ८७

हमें विदेशी समाचार कैसे मिलते हैं ?

विदेशी समाचारों में हम अक्सर पढ़ा करते हैं कि सरकारी रूप से यह खबर मिली है......। हरएक बड़े राष्ट्र की राजधानी में एक स्थान होता है जहाँ से ये खबरें मिलती हैं। लंदन का डाउनिंग स्ट्रीट, वाशिंगटन का ह्वाइट हाउस, बर्लिन का विल्हेल्मस्ट्रेस, पेरिस का क्वेडिओरसे आदि ऐसे स्थान हैं। पिछले महायुद्ध के पहले वियेना का बालपैट्स ऐसा ही समाचार-केंद्र था, पर अब उसका नाम सुनाई नहीं देता।

डाउनिंग स्ट्रीट

लंदन का डाउनिंग स्ट्रीट एक सकरा रास्ता है जिसमें सिर्फ ३ इमारतें हैं। रास्ते के ओर पर राष्ट्र-विभाग है और उसके सामने नं० ९ और १० की दो इमारतें हैं। नं० ९ में अर्थसचिव का वासस्थान तथा नं० १० में प्रधान मंत्री का वासस्थान और दफ्तर रहता है। दुनिया के कुछ अति महत्वपूर्ण सम्मेलन नं० १० के इस छोटे से मकान में होते हैं और सामनेवाले पर राष्ट्रीय दफ्तर के प्रेस विभाग से खबरें मिलती हैं।

दुनिया की खबरें मिलने का यह प्रधान साधन है। जिन पत्रकारों के पास खास परवाने होते हैं, वे लिफ्ट में बैठ कर इस दफ्तर की दूसरी मंजिल पर बेखटके चले जाते हैं। इसके बाद एक गलियारे से होकर जाना पड़ता है जिसके दोनों ओर लकड़ी की आलमारियों में डराने वाली फाइलें बराबर झाँका करती हैं। गलियारे के दूसरे छोर पर दो गद्दीदार बेंचें पड़ी रहती हैं, जिनपर आठ दस व्यक्ति बैठ सकते हैं। ऊपर साइनबोर्ड टँगा है कि धूम्रपान करना मना है और शायद इसी बोर्ड के उत्तर में बेंचों के पास अनगिनत सिगरेटों के टुकड़े बिखरे पड़े रहते हैं और गलियारा तमाखू के धुएँ से बदबू करता रहता है।

इसी जगह पत्रकारों को अफसरों से खबरें मिलती हैं। दोपहर को रायटर, हावा, ब्रिटिश युनाइटेट प्रेस, असोशियेटेड प्रेस आदि के प्रतिनिधि वहाँ एकत्र होते हैं और वर्तमान घटनाओं के संबंध में विश्वस्त समाचार पाते हैं। अमेरिकन पत्रों के प्रतिनिधियों तथा अंग्रेजी दैनिक पत्रों के राजनीतिक या लाबी संवाददाताओं को पार्लमेण्ट की साधारण सभा में अलग स्थान दिया जाता है।

अनुभव यह है कि पत्रकारों को सरकारी सूत्र से जितना समाचार मिलता है उससे अधिक आपस में बातें करने से ही मिलता है। हर एक प्रसिद्ध पत्रकार का इंगलैंड के किसी न किसी उच्च अधिकारी से संबंध रहता है।

टाइम्स के संपादक

पर इंगलैंड में सबसे अधिक जानकारी रखनेवाला जो व्यक्ति है वह कभी इस परराष्ट्र दफ्तर के गलियारे में या और कहीं दिखाई नहीं देता। उस व्यक्ति का नाम जिओफ्रे डासन है। दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण पत्र 'दि टाइम्स' के वे ६४ वर्षीय वृद्ध प्रधान संपादक हैं।

यह कोई नहीं कह सकता कि टाइम्स और ब्रिटिश सरकार में क्या संबंध है। टाइम्स का सरकार पर प्रभाव रहता है या सरकार का टाइम्स पर। संभवतः दोनों बातें ठीक हैं। श्री डासन श्री नेविल चेम्बरलेन के घनिष्ठ मित्र हैं और दूसरे मंत्रियों से भी उनकी मुलाकात होती रहती है। इसलिये अक्सर यह समझा जाता है कि टाइम्स का अग्रलेख प्रधान मंत्री के विचारों को व्यक्त करता है। समाचारों के बादशाह श्री डासन आधी रात के बाद तक काम करते हैं, पर उनका नाम कभी नहीं छपता, न उनका चित्र अब तक कहीं मिला है। ये अपनी लेखनी से कुछ भी नहीं लिखते। उनका काम केवल इतना ही है कि वे संपादकों को बुला कर प्रतिदिन उन्हें यह बतला दें कि अमुक अमुक विषय पर अग्रलेख लिखे जाँय और इस ध्वनि को लिए हुए लिखे जाँय। यही कर्तव्य इतने महत्व का समझा जाता है कि आपको उतना ही वेतन मिलता है जितना इंगलैंड के प्रधान मंत्री को। राजनीतिक मंडल में भी उनका सम्मान किसी से कम नहीं होता।

(५८५ शब्द)

अभ्यास ८८

सभापति महोदय !

चूँकि वर्तमान मिनिस्टरी हम लोगों की मिनिस्टरी है, इसलिये हम उसके प्रेस्टिज के विरुद्ध कुछ नहीं कह सकते हैं। हम जो कुछ राय देंगे वह अपने हृदय से राय देंगे और उसे यह मिनिस्टरी करने को तैयार है। हम लोग इस मिनिस्टरी को सजेशंस दे सकते हैं। मैं समझता हूँ विरोधी दल से इस मिनिस्टरी पर अनुचित आक्षेप भी हुए हैं, कांग्रेस पार्टी की दृष्टि से हमीं को उन आक्षेपों का उत्तर देना है। सबसे अच्छी बात जो मिनिस्टर साहेब की स्पीच में है, वह कांस्टिट्युएँट असेम्बली के संबंध में है। सच है, विना अधिकार के हमलोग अच्छा बजट नहीं बना सकते थे।

मैं समझता हूँ प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क कर दी जाय। यू० पी० में मैंने देखा है कई जगहों में जहाँ जहाँ स्कूल और पाठशालाएँ हैं वहाँ वहाँ निःशुल्क शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। आप लोगों में सभी को मालूम है कि हमारे यहाँ हर जगह पाठशालाएँ नहीं हैं। इसलिये हर जगह शिक्षा को अनिवार्य

बनाने में दिक्कत होगी। किंतु जहाँ जहाँ पाठशालाएँ मौजूद हैं वहाँ वहाँ प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य और निःशुल्क कर देना आवश्यक है। चूँ कि बिना कानूनी पाबंदी के हम लोग, अफसोस है, कुछ नहीं कर सकते हैं, इसलिये मेरी सम्मति में जहाँ जहाँ विद्यालय मौजूद हैं, वहाँ वहाँ शिक्षा कम्पलसरी कर दी जाय। मैं समझता हूँ यह संभव भी है। जितने चौकीदार बिहार के हर गाँव में हैं, वे चार पाँच रुपये पाते हैं, वे पढ़ाने का काम कर सकते हैं। इस संबंध में कर्तव्य यह होगा कि जितने चौकीदार हों वे पढ़े लिखे हों। इनके अलावे ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं हैं जो निःस्वार्थ भाव से काम करना चाहते हैं। ऐसे लोग हर गाँव में मौजूद हैं। ऐसे लोगों को इस काम के लिये बहाल किया जा सकता है। जो लोग पढ़े लिखे हैं वे लोग छुट्टियों में घर जाकर गाँवों में सरकार की ओर से पढ़ाने लिखाने का काम कर सकते हैं। इन लोगों के साथ ऐसा प्रबंध किया जा सकता है कि ये लोग अपनी छुट्टी के समय को इस तरफ लगावें। जब तक अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा का प्रबंध नहीं किया जायगा, तब तक एडल्ट फ्रेंचाइज बहुत मुश्किल है।

दूसरी बातें मैं जो करना चाहता हूँ, और जिसकी ओर महात्मा गाँधी का ध्यान सबसे पहले गया है, वह है शराबखोरी के संबंध में। इस डिपार्टमेंट को हम लोग हटाने जा रहे हैं। जो मौरली गलत है वह पोलिटिक्ली भी गलत है। बड़े बड़े कामों ही में नहीं हमें छोटे छोटे कामों में भी मोरालिटी पर ध्यान देना चाहिए। यह सबसे बड़ा काम इतिहास में होने जा रहा है। संसार का यह सब से बड़ा काम होगा।

अब मैं खादी पर आता हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि खादी के लिये जहाँ तक हो सके प्रचार किया जाय। हर गाँव में, सभी गवर्नमेंट के नौकर तथा और भी जितने लोग खादी पहन सकें पहनने की कोशिश करें। यह बहुत मुश्किल काम नहीं है।

मैं कहता हूँ कि रिट्रेंचमेंट की तरफ भी गवर्नमेंट को ध्यान देना चाहिए। जो भाई बहुत खर्च करते हैं उनकी तरफ गवर्नमेंट को ध्यान देना चाहिए। मंत्री लोग जो ५००) रु० में गुजर करने को तैयार हैं, यह सबसे बड़ा त्याग कांग्रेस ने दूसरों के सामने रखा है। आशा है इस त्याग को देख कर ऊंची तनख्वाह वाले अपना वेतन कम कर देंगे। मैं सभी लोगों से कहूँगा, महात्मा गाँधी जी भी कहते हैं कि सूखी रोटी खाकर बाकी पैसा देशसेवा में लगा दो।

(५४५ शब्द)

अभ्यास ८९

कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परंपरा से जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी, इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नए ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे। आभ्यंतर सूक्ष्म भावों की प्रेरणा बाह्य स्थूल आकार में भी कुछ विचित्रता उत्पन्न करती है। सूक्ष्म आभ्यंतर भावों के व्यवहार में प्रचलित पदयोजना असफल रही। उनके लिये नवीन शैली तथा वाक्यविन्यास आवश्यक था। हिंदी में नवीन शब्दों की भंगिमा स्पृहणीय आभ्यंतर वर्णन के लिये प्रयुक्त होने लगी। शब्दविन्यास में ऐसा पानी चढ़ा कि उसमें एक तड़प उत्पन्न कर के सूक्ष्म अभिव्यक्ति का प्रयास किया गया। भवभूति के शब्दों के अनुसार—

व्यतिषजति पदार्थानांतरः कोऽपि हेतुः
न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते।

बाह्य उपाधि से हट कर आंतर हेतु की ओर कविकर्म प्रेरित हुआ। इस नए प्रकार की अभिव्यक्ति के लिये जिन शब्दों की योजना हुई हिंदी में पहले वे कम समझे जाते थे। किंतु शब्दों में भिन्न प्रयोग से एक स्वतंत्र अर्थ उत्पन्न करने की शक्ति है। समीप के शब्द भी उस शब्द विशेष का नवीन अर्थ द्योतन करने में सहायक होते हैं। भाषा के निर्माण में शब्दों के इस व्यवहार का बहुत हाथ होता है। अर्थ-बोध व्यवहार पर निर्भर करता है, शब्द-शास्त्र में पर्य्यायवाची तथा अनेकार्थवाची शब्द इसके प्रमाण हैं। इसी अर्थ-चमत्कार का माहात्म्य है कि कवि की वाणी में अभिधा से विलक्षण अर्थ साहित्य में मान्य हुए। ध्वनिकार ने इसी बल पर कहा है—

प्रतीयमानं पुनरन्यदेवस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।

अभिव्यक्ति का यह निराला ढंग अपना स्वतंत्र लावण्य रखता है। इसके लिये प्राचीनों ने कहा है:—

मुक्ताफलेषुच्छायायास्तरलत्वमिवांतरे।
प्रतिभाति यदंगेषु तल्लावण्यमिहोच्यते॥

मोती के भीतर छाया की जैसी तरलता होती है वैसी ही छाया की कांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। इस लावण्य को संस्कृत साहित्य में छाया और विच्छित्ति के द्वारा कुछ लोगों ने निरूपित किया था। कुंतक ने वक्रोक्ति जीवित में कहा है—

प्रतिभा प्रथमोद्भेद संभवे यत्र वक्रता ।
शब्दाभिधेययोरन्तः स्फुरतीव विभाव्यते ॥

शब्द और अर्थ की यह स्वाभाविक वक्रता विच्छित्ति, छाया और कांति का सृजन करती है। इस वैचित्र्य का सृजन करना विदग्ध कवि का ही काम है। वैदग्ध्य भंगी भणिति में शब्द की वक्रता और अर्थ की वंक्रता लोकोत्तीर्ण रूप से अवस्थित होती है। कुंतक के मत में ऐसी भणिति

शास्त्रादिप्रसिद्धशब्दार्थोपनिबंधव्यतिरेकी

होती है। यह रम्यच्छायांतर स्पर्शी वक्रता वर्ण से लेकर प्रबंध तक में होती है। कुंतक के शब्दों में यह उज्ज्वलाछायातिशय्य रमणीयता वक्रता की उद्भासिनी है।

परस्परस्य शोभायै बहवः पतिताः क्वचित् ।
प्रकाराजनयन्त्येतां चित्रच्छाया मनोहराम् ॥ ३४ ॥

२ उन्मेष व० जी० ।

कभी कभी स्वानुभव संवेदनीय वस्तु की अभिव्यक्ति के लिये सर्वनामादिकों का सुंदर प्रयोग इस छायामयी वक्रता का कारण होता है। वे आँखें कुछ कहती हैं।

अथवा—

निद्रानिमीलितदृशो मदमन्थराया नाप्यर्थवन्ति नच यानि निरर्थकानि ।
अद्यापि मे वरतनोर्मधुराणि तस्यास्तान्यक्षराणि हृदये किमपि ध्वनन्ति ॥

किंतु ध्वनिकार ने इसका प्रयोग ध्वनि के भीतर सुंदरता से किया—

यस्त्वलक्ष्यक्रमो व्यङ्ग्यो ध्वनिवर्णपदादिषु ।
वाक्ये सङ्घटनायां च सप्रबंधेपि दीप्यते ॥

यह ध्वनि प्रबंध, वाक्य, पद और वर्ण में दीप्त होती है। केवल अपनी भंगिमा के कारण "वे आँखें" में "वे" एक विचित्र तड़प उत्पन्न कर सकता है। आनंद-वर्धन के शब्दों में

मुख्या महाकविगिरामलंकृतिभृतामपि ।
प्रतीयमानच्छायैषा भूषा लज्जेव योषिता ॥

कवि की वाणी में यह प्रतीयमान छाया युवती के लज्जा भूषण की तरह होती है। ध्यान रहे कि यह साधारण अलंकार जो पहन लिया जाता है वह नहीं है, किंतु यौवन के भीतर रमणी सुलभ श्री की बहन ही है। घूँघट वाली लज्जा नहीं। संस्कृत साहित्य में यह प्रतीयमान छाया अपने लिये अनेक अभिव्यक्ति के साधन उत्पन्न कर चुकी है। अभिनवगुप्त ने लोचन में एक स्थान पर लिखा है—

परां दुर्लभां छायां आत्मरूपतां यान्ति

प्राचीन साहित्य में यह छायावाद अपना स्थान बना चुका है। हिंदी में जब इस तरह के प्रयोग आरंभ हुए तो कुछ लोग चौंके सही, परंतु विरोध करने पर भी अभिव्यक्ति के इस ढंग को ग्रहण करना पड़ा। कहना न होगा कि ये अनुभूतिमय आत्मस्पर्श काव्यजगत के लिये अत्यंत आवश्यक थे। काकु या श्लेष की तरह यह सीधी वक्रोक्ति भी न थी; बाह्य से हटकर काव्य की प्रवृत्ति आंतर की ओर चल पड़ी थी।

(५९५ शब्द)

अभ्यास ९०

राष्ट्रलिपि

यह कहने की एक रस्म सी पड़ गई है कि हिंदुस्तान में दो लिपियाँ हैं एक हिंदी दूसरी उर्दू। मोटे तौर पर आपकी जो मरजी हो कहिए; लेकिन न तो हिंदी कोई लिपि है न उर्दू। हिंदुस्तान में कम से कम दस प्रधान लिपियाँ प्रचलित हैं। नागरी, बँगला, गुजराती, गुरुमुखी, तामिल, तेलगू, कन्नड़ी, मलयालम, फारसी तथा रोमन। इनमें नागरी या देवनागरी लिपि प्रधान है। हिंदी भाषा तो इस लिपि में लिखी ही जाती है, संस्कृत के अधिकांश ग्रंथ इसी लिपि में छपते हैं, मराठी भाषा की यही लिपि है और गुजराती भाषा की लिपि भी एक प्रकार से शिरोरेखा रहित नागरी ही है। बँगला, गुरुमुखी सदृश लिपियों के ज्ञाता इस लिपि को बड़ी आसानी से सीख सकते हैं, बाकी तेलगू, तामिल आदि जो दक्षिण भारत के प्रांतों की लिपियाँ हैं उनका मूल स्रोत भी वही है जो नागरी लिपि का। द्रविड़कुल की लिपियों की बात जाने दें तो भी १९३१ की मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट के अनुसार हर १०,००० मनुष्यों में ४,०५६ मनुष्य देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली भाषाएँ काम में लाते हैं, और २६६२ मनुष्य देवनागरी लिपि के किसी भी एक प्रकार में लिखी जाने वाली भाषाएँ उपयोग करते हैं। इस प्रकार १०००० मनुष्यों में कम से कम ६७१५ आदमी तो ऐसे ही हैं, जिनकी प्रवृत्ति राष्ट्रलिपि के मामले में स्वभावतः देवनागरी ही के पक्ष में होगी। रही द्रविड़कुल की लिपियों की बात, उनमें उत्तर भारतीय लिपियों के साथ एकरूपता और समानता न रहने पर भी वे नागरी ही की बहिनें हैं, क्योंकि निकलीं वह भी उसी अशोककालीन ब्राह्मी लिपि से हैं, जिससे नागरी लिपि।

ऐसी अवस्था में क्या हम यह समझने में गलती करते हैं कि दक्षिण भारत में प्रचलित लिपियों के ज्ञाताओं की नजरों में भी उनकी अपनी लिपि के बाद देवनागरी का ही स्थान सर्वोच्च है?

अब हमें उनलोगों की दृष्टि से विचार करना है, जो किसी भी लिपि से परिचित नहीं और जिन्हें जल्दी से जल्दी साक्षर बनाना राष्ट्रकर्मियों का पहला कर्तव्य है। हम उन्हें लिपि जल्दी से जल्दी कौन सी सिखा सकते हैं? नागरी लिपि या उर्दू लिपि? एक लिपि में तो एक-एक उच्चारण के लिये एक-एक अक्षर हैं। उन अक्षरों को सीखते ही आप उस लिपि में लिखे हुए शब्द और उन शब्दों से बने हुए वाक्य पढ़ सकते हैं, और दूसरी लिपि में तो दो-दो, तीन-तीन अक्षर हैं, जब उन अक्षरों के शब्द बनाते हैं, तो आधे उच्चारण का तो उपयोग होता है, आधा पता नहीं कहाँ चला जाता है और फिर जब अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाए जाते हैं तो उनको कुछ ऐसे तरीके से जोड़ना पड़ता है कि मूल अक्षरों का रूप बिलकुल ही क्या का क्या हो जाता है। जहाँ आदमी नागरी अक्षर सीख लेने के बाद तुरंत ही उन अक्षरों के मेल से बने हुए शब्दों को पढ़ सकता है, वहाँ उर्दू के अलिफ़, क़ाफ़, लाम सीख लेने के बाद भी उन अक्षरों में लिखे गए शब्दों को काफी अर्से तक नहीं पढ़ सकता। हमें प्राचीन तथा आधुनिक लिपियों के एक बड़े विद्वान का नाम याद आ रहा है जिन्होंने तीन बार प्रयत्न करके भी हताश होकर उर्दू सीख सकने की आशा छोड़ दी।

जैसे देश में बीसियों लिपियाँ हैं, इक्कीसवीं उर्दू लिपि भी रहे। हम उसे निकाल बाहर करने की बात नहीं कहते। जिन्हें एक से अधिक लिपियाँ सीखने का अवकाश और सामर्थ्य है, वह क्यों न उर्दू लिपि भी सीखें? लेकिन जिस प्रकार हम यह कहते हैं कि प्रत्येक भारतीय को देवनागरी लिपि से अवश्य परिचित होना चाहिए उसी प्रकार हम यह नहीं कह सकते कि प्रत्येक भारतीय को उर्दू लिपि से भी अवश्य परिचित होना चाहिए। जो उर्दू लिपि के भी प्रेमी हैं, वह उसमें भी लिखें, पढ़ें। स्वर्गीय प्रेमचंद जी अंत समय तक उर्दू में भी लिखते ही रहे। लेकिन जब हम देवनागरी लिपि को अपनी राष्ट्रलिपि कह रहे हैं तो उसका यह साफ़ मतलब है कि वह नागरी लिपि को अवश्य सीखें; अनिवार्य तौर पर सीखें, और अधिक स्पष्टता से कहना हो तो शायद यूँ भी कह सकते हैं कि किसी को किसी भी दूसरी लिपि का ज्ञान हो चाहे न हो, राष्ट्रलिपि देवनागरी का ज्ञान होना अनिवार्य है और यदि किसी को राष्ट्रलिपि देवनागरी का ज्ञान है, तो उसके लिये किसी भी दूसरी लिपि का ज्ञान अनिवार्य नहीं।

(६८० शब्द)

अभ्यास ९१

माननीय डिप्टी स्पीकर महोदय !

मैं मिस्टर सूटर के अमेंडमेंट का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूँ, मगर मेरा यह ख्याल हर्गिज नहीं है कि इस संशोधन के प्रस्तावक या समर्थकों ने इसको किसी बुरे ख्याल के साथ रखा है या किसी बुरे ख्याल के साथ समर्थन किया है। मगर यह बात जरूर है कि मनुष्य स्वार्थवश जैसा अंधा हो जाता है, उसको इस बात का ख्याल कतई नहीं रहता कि मेरी कौन-सी बात मुनासिब है और कौन-सी नामुनासिब। ठीक इसी तरह हमारे माननीय मिस्टर सूटर का ध्यान भी मिल ओनर व मिल ओनर्स के रिप्रेजेन्टेटिव होने के कारण केवल यही रहता है कि किसी प्रकार भी हो, चाहे किसी के साथ ज्यादती हो या जो कुछ भी, मगर मिल ओनर्स के पास काफी पैसे आने चाहिए और खर्च कम से कम होवे। मगर अभी ता० २४-४-३८ ई० को मेम्बर्स एमालूमेंट बिल पर बोलते वक्त हमारे एक नवाब साहब ने माननीय स्पीकर श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन की ओर इशारा करते हुए यह कहा था कि हमलोगों को तो स्पीकर साहब की रूलिंग्स व कंट्रोलिंग पावर को देखते हुए हमेशा यह ख्याल बना रहता है कि हमलोग स्कूल की बेंचों पर बैठे हुए हैं। मेरी राय में तो यह बात बिल्कुल ठीक है। वाकई कांग्रेस पार्टी इस हाउस में एक मास्टर की हैसियत से ही आई है। इसलिये कांग्रेस पार्टी का यह परम कर्तव्य है कि वह उन राजा, नवाब, मिल मालिक और जमींदारों को जिनके कानों तक कि इस हाउस के बाहर हमलोगों की आवाजें पहुँचना कुछ मुश्किल-सा होता है, इस हाउस में ही सही हर वक्त उसूली बातें सुना सुना कर उनको इस काबिल बना दे कि वह भी देश की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति को सुधारने की ओर ध्यान रखें। अभी ही माननीय मिस्टर वालफोर्ड ने अपनी स्पीच में यह कहा था कि जो स्त्रियाँ गर्भिणी होते हुए भी काम करती रहती हैं और फिर उनको बच्चा पैदा होता है, तो क्या उन स्त्रियों, उनके उन पैदा हुए बच्चों के जिम्मेदार मिल मालिक हैं ? इस आनरेबुल हाउस का प्रत्येक माननीय सदस्य इस बात से भली भाँति परिचित है कि बड़े बड़े क्षेत्र, बड़ी बड़ी धर्मशालाएँ वगैरह धनीमानी सज्जनों ने बनवा रखी हैं, तो क्या उनकी यह जिम्मेदारी है कि वह उन लोगों के खाने और ठहराने का इंतजाम करें जिनसे कि वह परिचित भी नहीं है।

अंत में मेरी तो हाउस से यही प्रार्थना है कि वह इस अमेंडमेंट का घोर विरोध करके मिल ओनर्स को यह कड़वी कुनीन अवश्य पिलावे, ताकि उन निःसहाय अबलाओं की उचित सहायता हो सके। अतः मैं इन चंद शब्दों के साथ मिस्टर सूटर के इस अमेंडमेंट का घोर विरोध करता हूँ। (५६४ शब्द)

अभ्यास ६२

यूरोप में युद्ध का प्रारंभ हुए एक सप्ताह बीत गया पर अभी तक उसने बहुत जोर नहीं पकड़ा है, जैसा कि पिछले महासमर के समय हुआ था। पोलों और जर्मनी के बीच अवश्य घोर संग्राम हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप डैंजिग और कारिडर के अतिरिक्त सीमा पर के कई नगर जर्मनी के अधिकार में चले गए हैं। पर जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर कोई गहरी मुठभेड़ नहीं हुई है। ब्रिटिश सेना शायद अभी तक वहाँ पहुँची ही नहीं है। फ्रांस की सेना अवश्य जर्मन सीमा पर आक्रमण कर रही है किंतु इसकी वजह से जर्मनी को अभी तक कोई परेशानी नहीं जान पड़ती, पोलिश क्षेत्र में उसकी ओर से कोई ढिलाई नहीं देख पड़ती।

पोलैंड की सहायता का प्रश्न

ब्रिटेन और फ्रांस अपने वचन की रक्षा के लिये युद्ध में कूद तो पड़े किंतु पोलैंड की सहायता किस तरह की जाय, यह अभी तक उनकी समझ में नहीं आ रहा है। जैसा कि हम पिछले अंक में लिख चुके हैं, बल्कि समुद्र का रास्ता तो जर्मनी ने बन्द ही कर दिया है। वहाँ पर स्थित जर्मन जंगी जहाजों के बेड़े का सामना करते हुए ब्रिटिश या फ्रांसीसी सैनिकों के लिए उस ओर से पोलैंड के सहायतार्थ जा सकना प्रायः असंभव है। यदि किसी तरह वहाँ तक पहुँच सकना संभव भी मान लिया जाय तो भी वे पोलैंड में प्रवेश नहीं कर सकते, क्योंकि भीतर घुसने का केवल एक ही रास्ता है, डाईनिया और डैंजिग होकर, जिसपर जर्मनी का अधिकार हो चुका है। इस मार्ग की पूर्वी सीमा से सटा हुआ प्रुशिया का भाग है, जो जर्मनी का ही प्रदेश है। उसके बाद लिथुआनिया है। किन्तु यह तटस्थ देश है, अतः इसकी तटस्थता भंग किए बिना यहाँ से भी पोलैंड के भीतर घुसना संभव नहीं।

अब पोलैंड को प्रत्यक्ष सहायता देने के लिए ब्रिटेन और फ्रांस के सामने एक ही रास्ता और रह जाता है, भूमध्य सागर एवं कृष्णसागर होते हुए रुमानिया के रास्ते। रुमानिया ब्रिटेन फ्रांस का मित्र अवश्य है, पोलैंड की तरह उसकी रक्षा का भी आश्वासन ये राष्ट्र दे चुके हैं, पर अभी तक इस युद्ध में वह तटस्थ बना हुआ है। यदि इनके कहने से वह अपनी तटस्थता का परित्याग कर दे, जिसकी आशा कम ही है, तो भी ब्रिटेन तथा फ्रांस के लिए उस ओर से सहायता भेजना बहुत आसान नहीं है। उनके ऐसा प्रयत्न करते ही इस बात की संभावना है कि इटली भी तटस्थता त्याग कर युद्ध में शामिल हो जाय। ऐसा हुआ तो परिस्थिति और भी भयानक हो जाएगी और पोलैंड की सहायता कर सकना बहुत मुश्किल हो जायगा।

ब्रिटेन की कठिनाइयाँ

कठिनाइयों का अन्त यहीं पर नहीं हो जाता। इन राष्ट्रों को, विशेष कर ब्रिटेन

को, पूर्वी एशिया की स्थिति का भी ख्याल रखना जरूरी है। यद्यपि रूस जर्मनी के समझौते के बाद से जापान का रुख कुछ बदला हुआ सा मालूम होता है, अब वह ब्रिटेन के साथ झगड़ा मोल लेने को उद्यत नहीं जान पड़ता, फिर भी आगे चल कर वह क्या नीति अख्तियार करेगा, इसका कोई निश्चय नहीं।

एशिया में जापान को यदि किसी से विशेष भय है तो सोवियट रूस से ही। उसे ही वह अपने साम्राज्य विस्तार के मार्ग में सबसे बड़ा कंटक समझता है। जर्मनी के साथ रूस का समझौता हो जाने से पश्चिम की ओर से यह निश्चिंत सा हो गया है, अतः अब उसके लिए जापान के साथ लोहा लेना अधिक आसान हो गया है। बाह्य मंगोलिया की सीमा पर होने वाली घटनाओं के बहाने वह चाहे जब जापान के साथ युद्ध की घोषणा कर सकता है। संभवतः इसी खतरे का ख्याल कर अब जापान ब्रिटेन के सम्बन्ध में कुछ नरम सा होता जा रहा है। वहाँ के नये मंत्रि-मंडल ने इस विषय में कोई घोषणा तो नहीं की है, पर पहले के मंत्रि-मंडल की अपेक्षा वह ब्रिटेन के पक्ष में अधिक मालूम होता है। (५३५ शब्द)

अभ्यास ६३

भारत का मजदूर आंदोलन अभी प्रारंभिक अवस्था में ही है, अतः इस समय उस पर ऐसा आघात होना दुःखजनक ही होगा। फलतः वे लोग जानना चाहेंगे और उन्हें खोज करनी चाहिए कि आखिरकार इस स्थिति का कारण क्या है? मजदूर नेताओं ने अपने भाषणों में जो बातें कही हैं उनकी विवेचना भी कर लेनी चाहिए। निस्संदेह कहीं न कहीं कोई न कोई बात अवश्य होगी जिसके कारण यह स्थिति पैदा हो गई है। मजदूर नेता इस स्थिति की सारी जिम्मेदारी कांग्रेसी सरकार पर डाल देते हैं। उनका कहना है कि सरकार मजदूर नेताओं की सहायता नहीं कर रही है, उनकी स्थिति मजबूत नहीं करती और उनकी माँगों को पूरा करने तथा शिकायतों को दूर करने की चेष्टा नहीं करती, अतः मजदूरों का विश्वास अपने नेताओं पर से उठता जा रहा है और वे निराश होने लगे हैं। इसके साथ ही उनकी यह भी शिकायत है कि सरकार मजदूर कार्यकर्ताओं की सहायता करना तो दूर रहा, उनका दमन भी करने लगी है जिससे इस आंदोलन को आघात पहुँच रहा है। ये आक्षेप ऐसे हैं जिनकी ओर ध्यान देना आवश्यक है। हमें खेद है कि हम स्वयं इन आक्षेपों में काफी तथ्य पाते हैं। प्रांतीय सरकार को इस बात का ज्ञान हो अथवा न हो, पर साधारण कार्यकर्ता पदे पदे अनुभव कर रहा है कि वर्तमान सरकारी कर्मचारी जनान्दोलन तथा जन-जाग्रति को किसी न किसी प्रकार दबाने की चेष्टा अवश्य कर रहे हैं। मजदूरों और किसानों दोनों ही के आंदोलन को चोट पहुँच रही है। हम मानते हैं कि सरकार की यह मंशा न होगी, पर यह स्पष्ट है कि

उसके कर्मचारी जान में अथवा स्वभाव के कारण अनजान में यही कर रहे हैं। जनता को कांग्रेस सरकार से बड़ी आशा थी और यही आशा आज पतन की ओर ले जा रही है। कार्यकर्ताओं ने कांग्रेसी सरकारों के गुण गा गा कर जनता की इस आशा को और बल प्रदान किया। परिणाम यह हुआ कि मजदूर और किसान दोनों समझने लगे कि उनके कष्टों का निराकरण तुरन्त कांग्रेस द्वारा हो जायगा, क्योंकि उनके बीच काम करने वाले, उनके लिए कष्ट उठाने वाले ही सरकार बने बैठे हैं।

पर दूसरी ओर हालत कुछ और थी। सरकार तक इनके कष्टों को पहुँचा कर भी हम उन्हें दूर नहीं कर पाते, क्योंकि उसकी एजेन्सी जिसके द्वारा वह अपना काम कराती है, निश्चयेन कुछ न करना ही उचित समझती है। मजदूरों में तो नहीं पर किसानों में काम करने का अनुभव हमें भी है। हम जानते हैं कि किसान जब मिट कर, हरी बेगार देने के लिए परेशान होकर और तरह तरह से सताया जाकर आता है और सरकारी कर्मचारियों से सहायता की अपेक्षा की जाती है तो उसे कानून पढ़ाया जाने लगता है। उससे कहा जाता है कि अदालत में आओ। जो भूखों मर रहा है वह गरीब अदालत में जाय ? यदि कष्ट दूर करने के लिए संघटन और आन्दोलन की सृष्टि होती है तो दफ़ा १०७ और धारा १४४ का प्रयोग धड़ल्ले से कर दिया जाता है और कांग्रेस कार्यकताओं को अपनी सरकार होने के नाते सिर झुका देना पड़ता है। परिणाम हो रहा है प्रतिक्रिया की सृष्टि ! यही हालत मजदूरों में भी होगी, यह हमारा विश्वास है। हम अनेक बार कह चुके हैं और फिर कहना चाहते हैं कि यदि कांग्रेसी सरकारें जनान्दोलन को बल प्रदान नहीं कर सकतीं तो उनकी कोई भी उपयोगिता नहीं है। इतना कहने के बाद हम दो शब्द मजदूर नेताओं से भी कहना चाहते हैं। कांग्रेस सरकार को इसका दोष दिखा देना उचित है पर साथ साथ अपने दोष को भी वे भुला नहीं सकते। जो स्थिति उपस्थित हो गई है उसके लिए वे भी जिम्मेदार है, जैसा कि हम पिछली बार लिख चुके हैं। जनता का नियंत्रण और नेतृत्व साधारण काम नहीं है। नेता लोगों को परिस्थिति और संघटन का बल देख कर आगे चलना चाहिए। पुस्तकों में मार्क्सवाद पढ़ कर और बोलशेवी क्रान्ति के इतिहास का पुस्तकी ज्ञान लेकर कल्पना में उड़ना उचित नहीं हो सकता। मजदूरों की परिस्थिति समझे विना बड़ी बड़ी बातें करना और उग्रता का प्रचार करना भले ही हमें अपना जयजयकार सुनने का अवसर दे दे, पर मजदूरों का अहित हो जाना असंभव नहीं है। हमारा अपना अनुभव है कि लीडरी के लिए बात बात में हड़ताल करना, वर्गयुद्ध को जीवित रखने के लिए लड़ाई के मौके ढूँढ़ते रहना भी प्रतिक्रिया उत्पन्न कर देता है। मजदूर नेताओं ने कानपुर में पार्टीबंदी के फेर में यही किया है और उसका परिणाम आज सामने

है। अब सारी जिम्मेदारी कांग्रेसी सरकार पर फेंक देना उचित नहीं है। उन्हें अपना भी ढंग और नीति सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। (६५० शब्द)

अभ्यास ६४

मिश्र पर आक्रमण की संभावना

जब से इटली ने ट्युनिसिया, कार्सिका आदि की माँग पेश की है और स्वेज नहर के नियंत्रण में भी हिस्सा बँटाने की इच्छा जाहिर की है, तब से मिश्र की स्थिति के सम्बन्ध में विशेष चिन्ता उत्पन्न हो गई है। आक्रमण की संभावना का ख्याल कर वहाँ भी जोरों से युद्ध की तैयारी शुरू हो गई है।

इटली का रुख

अबीसिनिया पर अपना प्रभुत्व स्वीकार करा लेने की दृष्टि से यद्यपि इटली ने ब्रिटेन के साथ समझौता कर भूमध्यसागर की स्थिति ज्यों की त्यों बनाए रखने का आश्वासन दिया था, फिर भी जर्मनी के उदाहरण से अनुप्राणित होकर वह भी अन्य अन्य क्षेत्रों पर अधिकार कर लेने के लिए बराबर मौका ढूँढ़ता रहता है। अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाकर तथा जर्मनी का बल पाकर उसने फ्रांस से ट्युनीसिआ और कार्सिका पाने की माँग पेश की। इधर अवसर देखते ही उसने एकाएक अलबानिया पर अधिकार कर लिया, और एड्रियाटिक समुद्र को इटली की झील के रूप में परिणत कर दिया। भूमध्य सागर के तट पर अपनी शक्ति बढ़ाने और फ्रांस तथा ब्रिटेन के लिए युद्ध के समय इस जल मार्ग का प्रयोग करना असंभव कर देने के उद्देश्य से ही उसने स्पेन में विद्रोहियों की इतनी सहायता की। जनरल फ्रैंको की विजय से मुसोलिनी को अपना लक्ष्य पूरा करने में विशेष सहायता मिलेगी इसमें संदेह नहीं।

इधर इटली अबीसिनिया पर प्रभुत्व स्थापित करने के साथ साथ लीबिया में भी अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए विशेष प्रयत्न करता रहा है। वहाँ इटालियनों का एक बड़ा उपनिवेश बनाया जा रहा है। इसके लिए जितनी पूँजी की जरूरत होती है सब सरकार की ओर से मिलती है। सरकार ही जमीन खरीदती, मकान बनवाती और खेती शुरू कराने तथा अन्य बातों में हर तरह की सहायता करती [illegible] ही लोग वहाँ बसाए जाते हैं, जिनके कई बच्चे होते हैं। बाल बच्चे वाले [illegible] इटालियनों को वहाँ बसाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि लीबिया के सम्बन्ध [illegible] रूप से दिलचस्पी लेने लगें और संकट के समय अपने घर [illegible]र और जान माल की रक्षा के लिए मर मिटने को तैयार रहें। मातृभूमि से विशेष सहायता की आवश्यकता उन्हें न रहे।

आक्रमण का भय

लीबिया की पूर्वी सीमा मिश्र से बिलकुल सटी हुई है, अतः लड़ाई छिड़ने पर इस ओर से उसपर आक्रमण होने की पूरी संभावना है। इटली ने इस सीमा पर मजबूत किलेबन्दी कर रखी है। समस्त लीबिया में इस समय इटली की सवा लाख से अधिक सेना विद्यमान हैं और अस्त्र शस्त्र तथा युद्ध की अन्य सामग्री भी इकट्ठी की गई है। छः महीने से भी अधिक समय तक काम दे सकने के लिए पर्याप्त खाद्य पदार्थ भी जुटा लिए गए हैं। सेना का संगठन करने में जर्मन विशेषज्ञों से सहायता ली जा रही है। ऐसी स्थिति में लीबिया की ओर से मिश्र के लिए कितना ज्यादा खतरा है, यह स्पष्ट ही है। दक्षिण की ओर से भी मिश्र के लिए काफी खतरा है। दक्षिण में सूडान पड़ता है, जिसकी पश्चिमोत्तर की सीमा लीबिया की दक्षिणी सीमा से मिली हुई है। इस क्षेत्र में मिश्र की तथा अंगरेजों की थोड़ी सी ही सेना स्थित है, और यहाँ का प्रधान नगर खारटूम अबीसीनिया के बहुत पास पड़ता है। साना झील के समीप इटली ने मोटर गाड़ियों का प्रयोग करने वाली बहुत सी सेना तैयार रखी है। इसी तरह सूडान का पोताश्रय पोर्ट सूडान तथा लाल समुद्र की ओर जाने वाली रेलवे लाइन पर भी आक्रमण होने की विशेष संभावना है। इटालियन क्षेत्र की सीमा से इनकी दूरी डेढ़ सौ मील ही है। आल्पस पहाड़ के पास फ्रांस और इटली की सीमा की रक्षा में जर्मनी से सहायता मिलने की पूरी आशा है। इसीसे इटली के लिए इस ओर अधिक सेना भेज सकना संभव होगा। (४५६ शब्द)

अभ्यास ९५

दुनिया के विभिन्न स्थानों का समय।

विदेशी समाचारों में हम अकसर जी० एम० टी०, बी० एस० टी० आदि समय के आगे लिखे हुए कुछ अक्षर पढ़ते हैं। पाठकों को इस लेख में उनका मतलब समझाने का इरादा है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर २४ घंटे में एक बार घूमा करती है। इसी कारण किसी एक समय पृथ्वी के एक गोलार्ध में अन्धकार और दूसरे में सूर्य का प्रकाश रहता है। जो देश जितने पूर्व की ओर हैं उतनी ही जल्दी वहाँ सूर्योदय होता है। [illegible] कत्ता काशी के पूर्व में हैं। कलकत्ते में काशी से २२ मिनट पहले सूर्योदय [illegible] इसलिए जब कलकत्ते में सबेरे ६ बजा रहता है उस समय [illegible] बज [illegible] ३८ मिनट ही होता है। इस तरह अगर समय देखा जाने लगे तो यात्रियों [illegible] हरएक शहर में जाते ही घड़ी के काँटे हटाने पड़ेंगे और बड़ी दिक्कत खड़ी होगी।

ऐसी दिक्कत न हो, इसलिए भारत भर के लिए एक स्टैंडर्ड टाइम मान लिया गया है, जिसे इंडियन स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं। सब जगह इसी टाइम के अनुसार घड़ियाँ मिली रहती हैं जिससे देश भर की घड़ियों में फर्क नहीं पड़ता। पर कुछ शहर ऐसे हैं जहाँ स्टैंडर्ड टाइम न चलकर लोकल टाइम है। कलकत्ता गए हुए बहुत से पाठकों को अनुभव होगा कि कलकत्ते में लोकल टाइम चलता है, जो स्टैंडर्ड टाइम से २४ मिनट आगे रहता है। बाहर से जाने वाले यात्रियों को अपनी घड़ियाँ २४ मिनट आगे करनी पड़ती हैं। अभी हाल में बम्बई में भी लोकल टाइम चलाने का प्रस्ताव कारपोरेशन में पेश किया गया था। पर वह गिर गया। अगर प्रस्ताव पास हो गया होता तो बम्बई जाने वालों को अपनी घड़ियाँ ३९ मिनट पीछे करनी पड़तीं।

सारे भारत के लिए जैसा एक इंडियन स्टैंडर्ड टाइम बना दिया गया है, उसी तरह ब्रिटेन के लिए भी एक ब्रिटिश स्टैंडर्ड टाइम है। इसे बी० एस० टी० कहते हैं। पाठकों ने अखबारों में पढ़ा होगा कि ब्रिटेन के प्रधान मंत्री श्री नेविल चेम्बर-लेन ने ३ सितम्बर को ११ बजे दिन में जर्मनी से लड़ाई छेड़ देने की घोषणा की। वह समय ब्रिटिश स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार था। भारत में उस घोषणा के समय शाम हुई थी।

अब ग्रिनविच का समय, जी० एम० टी०, लीजिए। ग्रिनविच स्थान लंदन के पास ही है। यहाँ एक बड़ी बेधशाला है और रोज १ बजे दिन में यहाँ से सारी दुनियाँ को समय बताया जाता है। इस ग्रिनविच मीन टाइम में ५ घंटे ३० मिनट का फर्क रहता है।

पाठकों को याद होगा कि ३१ अगस्त को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने चीन की राजधानी चुंगकिंग से रेडियो पर हिन्दुस्तानी और अंगरेजी में भाषण किया था। भाषण का समय २ बजकर १० मिनट जी० एम० टी० छपा था। इस जी० टी० की अनभिज्ञता के कारण बहुत से लोग घर में रेडियो होते हुए भी भाषण सुन न सके होंगे। ऊपर लिखे हिसाब से भारत में उस समय ७ बज कर ४० मिनट हुआ होगा। चुंगकिंग में तो उस समय रात के १० बज गए होंगे।

अभी गतांक में हमने लिखा था कि रूस जापान की विराम संधि १५ सित-म्बर को १० बजे दिन में हुई; उस समय भारत में तीसरे पहर के ३॥ बजे होंगे।

फ्रांस में पेरिस टाइम चलता है। बेलजियम और हालैंड में ग्रिनविच टाइम चलता है। स्विट्जरलैंड, इटली और मध्य जर्मनी में मिड यूरोपियन टाइम चलता है, जो ग्रीनविच टाइम से १ घंटा आगे रहता है। इसको सेंट्रल यूरोपियन टाइम भी कहते हैं।

रूस ने पोलैंड पर १७ सितंबर को सवेरे ६ बजे आक्रमण किया। रूस पोलैंड की सीमा पर जिस समय ६ बजे होंगे उस समय भारत में दिन के करीब ९॥। बजे

होंगे। इसी तरह उसके पहले दिन १६ सितंबर को जर्मनी ने वारसा को दिन में ३ बज कर १० मिनट पर अल्टिमेटम दिया। उस समय भारत में रात को करीब ७। बजे होंगे।

फर्क कैसे निकाला जाता है।

अब यह फर्क कैसे निकाला जाता है, इसे भी जरा देखिए। २४ घंटे में पृथ्वी एक चक्कर लगाती है। सुविधा के लिए पृथ्वी को ३६० डिग्रियों में बाँटा गया है, जिन्हें अंग्रेजी में लांगीट्यूड और हिन्दी में देशान्तर कहते हैं। ३६० डिग्री का चक्कर लगाने के लिए पृथ्वी को २४ घंटे लगते हैं, तो १ डिग्री घूमने में २४ गुणे ६०, भागे ३६० अर्थात् ४ मिनट लगेंगे। ग्रिनविच का देशान्तर मान लिया गया है। काशी का देशान्तर ८३° पूर्व है। इसलिए ग्रिनविच और काशी के समय में ८३ गुणे ४ अर्थात् ३३२ मिनट अथवा ५ घंटा ३२ मिनट का फर्क पड़ेगा। ग्रिन-विच में जब सवेरे ६ बजे होंगे उस समय काशी में ११ बज कर ३२ मिनट हुए होंगे। यह फर्क लोकल टाइम का है। काशी में भी स्टैंडर्ड टाइम चलता है और स्टैंडर्ड टाइम तथा काशी टाइम में २ मिनट का फर्क रहता है। इसलिए ग्रिनविच टाइम और इंडियन स्टैंडर्ड टाइम में ५ घंटे ३० मिनट का फर्क हुआ। काशी टाइम और कलकत्ता टाइम में ६२ मिनट का तथा इंडियन स्टैंडर्ड टाइम और कलकत्ता टाइम में २४ मिनट का फर्क रहता है।

यूरोप में बहुत छोटे छोटे देश हैं, पर वहाँ हर एक देश का अलग अलग स्टैंडर्ड टाइम नहीं रहता। सारी पृथ्वी के २४ भाग बना दिए गए हैं। एक एक भाग में १५, १५ डिग्री देशान्तर होता है। एक भाग में जितनी भूमि पड़ती है उतनी भूमि में एक स्टैंडर्ड टाइम रहता है इस तरह हर एक स्टैंडर्ड टाइम में एक घंटे का फर्क रहता है।

(७५५ शब्द)



मुद्रक—
वी० के० शास्त्री;
ज्योतिष प्रकाश प्रेस, विश्वेश्वरगञ्ज,
बनारस सिटी। २७२१


काशी नागरी-प्रचारिणी सभा